Hindi / English / Gujarati

भविष्य मालिका

महाकाव्य

श्री गजपति
महाराजा का कार्यालय
श्री नाहर
पुरी-752001
2.4.84

दिव्यसिंह देव

राय

डॉ. रत्नाकर साहू यूटा विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध व्याख्याता, वक्ता और शोधकर्ता हैं। वर्तमान में वह जगबंधु संध्या कॉलेज, बक्सी में रूढ़िवादी व्याख्याता के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने यूटा के विभिन्न स्थानों से बहुत सारे ताड़ के पत्ते एकत्र किए और उन्हें संपादित करने का प्रयास किया। है यूटा विश्वविद्यालय ने उन्हें पीएच.डी. से सम्मानित किया है। डॉ. साहू की दो पुस्तकें 'हादीदास का ओडिशा के धर्म और साहित्य को हदीदास कोझाबली द्वारा दान' शीर्षक से गोपबंधु साहित्य मंदिर द्वारा प्रकाशित की गई हैं। उन्होंने लगन से अप्रकाशित पांडुलिपियों का एक संग्रह संकलित किया है। प्रस्तावना में, डॉ. साहू ने विश्व-प्रसिद्ध दार्शनिकों, धर्मवेधियों, ज्योतिषियों की चर्चाओं और कई संस्कृत ग्रंथों, पुराणों और रूढ़िवादी संतों के कार्यों के आधार पर एक तुलनात्मक विवरण प्रदान किया है। इसके अलावा उन्होंने इस युग के आचरण, कल्कि पुरुषों के जन्म स्थान और स्वरूप तथा कल्कि युग के चरम काल की भी अच्छी चर्चा की है। मैं कामना करता हूं कि मलिका ग्रंथ उनके इस पवित्र कृत्य की सराहना करते ही जन-जन में लोकप्रिय हो जाए।

मूल मंडप पंडित वल शजगन्नाथ मंदिर, शुभ
मुनियापदीत सभागमंदर, पुरी

ॐ

जी.टी.. [illegible]

वाई और अनलैंड »

एफ एपीएनआई के कैल एसजीएस [illegible]

[illegible]

कई साल पहले, ओडिशा के पंचसखाओं और संतसाधकों ने अपनी योगिक दूरदर्शिता से रिकॉर्ड किया था, ये घटनाएँ लगभग एक-एक करके घटित हो रही हैं। बक्सी जगबंधु कॉलेज के रूढ़िवादी भाषा और साहित्य विभाग के व्याख्याता डॉ. उद्राकर साहू ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से कई ताड़ के पत्ते एकत्र किए हैं। डॉ. साहू परी की अध्ययन पुस्तक "मलिका" महापुरु द्वारा लिखित मूल स्रोत से संपादित की गई है। इसमें किय युग का व्यवहार, जल अवतार का आविर्भाव, किय युग का सबसे महत्वपूर्ण समय आदि का वर्णन किया गया है।

हम जहरीमंडप पंडितसभा की ओर से डॉ. साहू के प्रयासों की सराहना करते हैं और उन्हें अपना आशीर्वाद देते हैं। ॥ ॐ ॥

अध्यक्ष

जहरीमंडप पंडित सभा, पुरी

कटक में गर्गदेश्वर महादेव के पास आयोजित 'स्वधर्म सभा' के उद्घाटन दिवस पर, पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्यसिंह देव 'मलिका' पुस्तक का अनावरण कर रहे हैं। ता1156384

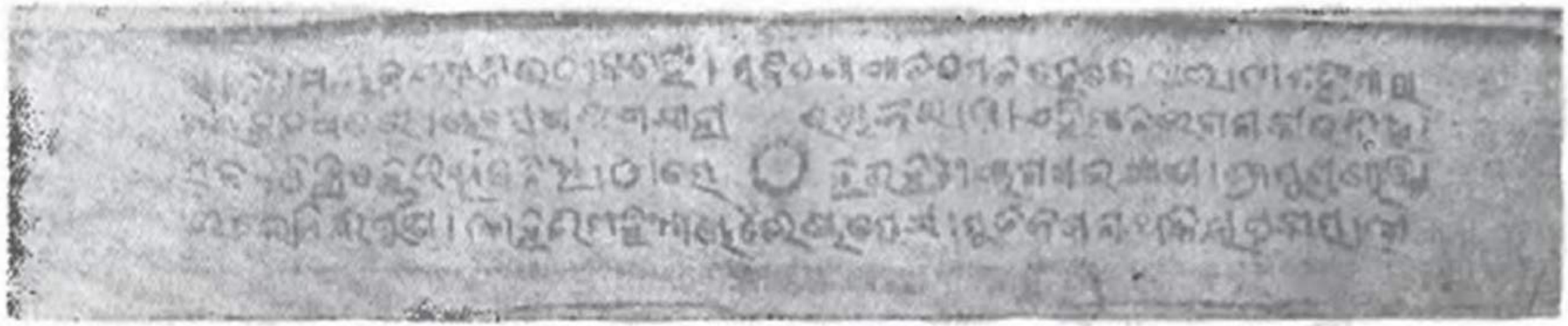

जगन्नाथ दास की 'महिमा एक्रिनान पामंत' पोथ की तस्वीर

बलराम दास की 'काली अजता फुमंत पोथ' की तस्वीर

पत्रिका के बारे में राय

'समाज'

*व्याख्याता उत्कर रत्नाकर साहू ने 'मलिका' नामक पुस्तक का संकलन किया है। इसे महापुरा अच्युतानंद प्रवृत्ति पंचस्खा सहित 17 कवियों के भविष्य के संग्रह का सारांश कहा जा सकता है।

अब 10 जून को कटक के गर्गदिया घाट पर एक सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया गया. उसमें डॉ. साहू ने अपनी 'मलिका' पुस्तक का लोकार्पण पुरी के गजपति राजा श्री श्री दिव्यसिंह देव से करवाया था। फिर 14 तारीख तक इस सम्मेलन में धर्म को लेकर खूब चर्चाएं हुईं. कलियुग की शुरुआत और अंत के संबंध में और कलियुग के अंत के समय तक क्या होगा, महाप्रू अच्युतानंद प्रमुख संतों और श्रीमद्भागवत और स्वयं व्यासदेव ने महाभारत में क्या उल्लेख किया है, डॉ. साहू ने भक्ति पुस्तक की प्रस्तावना में 'अच्युतानंद विज्ञान कल्प' श्रृंखला के छठे अध्याय में वर्णित किया है, और उस समय के कुछ हिस्सों को पुस्तक में पुनः प्राप्त किया है।

फ्लैश कहता है...14-6-84

'मातृभूमि'

प्रोफेसर डॉ. रत्नाकर साहू द्वारा संपादित इस पुस्तक का संकलन ओडिशा के 17 कवियों ने किया है।

प्रमुख संतकबी, बलराम दास, यशोवंत दास, अच्युतानंद दास, शादा अंतु, सालबेग और चलागा दास के भविष्यसूचक कार्यों को पुनः प्राप्त करने और उन्हें जनता के सामने लाने के लिए डॉ. साहू के प्रयास सराहनीय हैं। संत साहित्य • चर्चा में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। संकलक की प्रस्तावना पुस्तक में दिखाई देती है। '

ତା।୨୫-୬-୮୪

पहले संस्करण

के लिए आभार

ओडिशा में कई स्थानों पर 'मलिका' के बारे में बोलने के बाद लोगों ने मुझसे अपने भाषण को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का अनुरोध किया। इसी बीच कई वर्षों तक 'समाज' के संपादक रहे डॉ. राधानाथ रथ का संपादकीय पढ़कर मेरे मन में बहुत उत्साह महसूस हुआ। 'समाज' के महाप्रबन्धक माननीय श्री फकीरचरण दास ने इस चिन्ता को दोगुना कर दिया। उनका मत था कि आम जनता के लिए बहुत कम कीमत पर पत्रिका प्रकाशित की जाए तो बेहतर होगा। मेरे मित्र रमेशचंद्र मिश्र ने सारी बातें सुनीं और मुझे यथाशीघ्र पांडुलिपि तैयार करने की सलाह दी। अल्प समय में ही मैंने विभिन्न पोथियों की अप्रकाशित पांडुलिपियों के शुद्ध संपादन का कार्य पूरा कर लिया और यथासमय गोपबंधु साहित्य मंदिर द्वारा इसका प्रकाशन किया गया। इसके लिए मैं डॉ. राधानाथ रथ, श्री फकीर चरण दास और समाज संस्थान के अन्य स्टाफ सदस्यों का सदैव आभारी हूं।

मैं 'मलिका' के बारे में राय जुटाने के लिए उत्तराखंड के गजपति श्री दिब्यसिंह देव का उम्मीदवार बना। हे भगवन्, श्री गजपति महाराज ने कृपापूर्वक इस पुस्तक का एक विचारशील विवरण प्रदान किया है। इसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूं।

जहरीमंडप पंडितसभा से इस पुस्तक के संबंध में बधाई संदेश प्राप्त कर मैं उस महान विरासत और परंपरा के प्रतीक को अपनी रक्तरंजित श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनका आशीर्वाद चाहता हूं।

मैं पंडित श्री सत्यनारायण मिश्र की पुस्तक 'युगाब्द और प्रभय' से मेरी बहुत मदद करने के लिए उनका बहुत आभारी हूं। पंडित श्री नीलमणि मिश्र, ब्रह्मचारी प्रशांत कुमार मिश्र, महापात्र श्री नीलमणि साहू एवं श्री विनोदविहारी नायक की प्रेरणा मेरा साथ कभी नहीं छोड़ेगी। सभी मेरे आभारी हैं.

श्रद्धेय श्री उदय जेना, इतना समय निवेश करने और इस पुस्तक का कवर तैयार करने के लिए, मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं।

यदि राष्ट्र के कल्याण के लिए इस पुस्तक को लिखने का मेरा प्रयास सफल हुआ तो मैं अपने कार्य को सार्थक मानूंगा।

अलग किए।

रत्नाकर साहू

अभी तक मलिका को लेकर कोई औपचारिक चर्चा नहीं हुई है. जिन्होंने भी विस्तार से कुछ कहा है वह पर्याप्त या तथ्यपरक नहीं है। कुछ लोग मलिका को भविष्यवक्ता मानते हैं। लेकिन इसमें भविष्य की तस्वीरों के अलावा अतीत और वर्तमान की तस्वीरें भी सामने आती हैं। जहां कुछ बुद्धिजीवियों का मानना है कि मलिका एक नकली और मनगढ़ंत रचना है, वहीं कुछ अन्य लोगों ने इसे एक ऐतिहासिक तथ्य साबित किया है। यह भी बड़ा सवाल है कि मलिका साहित्य की प्रेरणा हैं या नहीं. यद्यपि दर्शन और आध्यात्मिक भक्ति का प्रकाशन एतु में हुआ था, फिर भी इसे आध्यात्मिकता से रहित माना जाता है। अत: इन मुद्दों पर चर्चा किये बिना नाक-भौं सिकोड़ना और मलिका को निरर्थक एवं अप्रासंगिक विवरण कहना किसी आलोचक का मान्य मानक नहीं है।

आर्यधूम भारत लंबे समय से संतों की भूमि के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। यहां अनेक धर्मों, जातीय समूहों और समुदायों के बीच सह-अस्तित्व और आपसी विचारों के आदान-प्रदान के क्षेत्र में उभरी सतधारा की बुनियादी विशेषताओं को इस राष्ट्र की सर्वोत्तम दृष्टि के रूप में पहचाना जाना चाहिए। संतों का मुख्य लक्ष्य अपने व्यक्तिगत हितों की परवाह किए बिना समूह के कल्याण के लिए समर्पित होना और समाज के पर्यवेक्षक के रूप में पूरे राष्ट्र को सही रास्ता दिखाना है। कबीर की जिम्मेदारी राष्ट्रीय ध्वज को खतरे से निकालकर सुरक्षित स्थान पर लाना है। कवि तुरंत देखता है; और संत कवि कई कालजयी और अज्ञात चीजों को अपनी दृष्टि (इंटुल्टन) की शक्ति से निर्देशित करते हैं। यदि वह अपनी योग दृष्टि से युग के विनाश या विपत्ति को देख लेता है, तो उसे ठीक करने का प्रयास करता है। इसके लिए मलिका के माध्यम से भावी सामाजिक जीवन का स्पष्ट चित्र सामने आता है।

मलिका का निर्माण न केवल पंचसखा युग से हुआ था। इस प्रकार की भविष्यवाणी लगभग हर धार्मिक साहित्य का प्रमुख हिस्सा बन गई है। भागवत, महाभारत और अन्य पुराणों और उप-पुराणों में भविष्यवाणियाँ हैं। ईसाई और मुस्लिम धर्मों में नवसृजन, जलप्रलय और महापुरुषों के आविर्भाव के बारे में बहुत सारी जानकारी दी गई है। कल्कि युग में गवन के कल्कि अवतार के बारे में

संस्कृत कालपी पुराण, गरुड़ पुराण, भूमपुराण, देवी भागवत और महानिर्वाणपुराण में कई संदर्भ हैं। यहां तक कि बौद्ध समुदाय के मंजुश्री मुदकल्प, बौद्ध जसातक और जैन हरिसुन पुराणों में भी कई भविष्यवाणियां दर्ज की गई हैं। ईसा मसीह से पहले हिंदू समाज में महात्माओं का आविर्भाव हुआ और उन्होंने उस समय के समाज से अन्याय को दूर करने और सत्य की स्थापना के लिए भविष्यवाणियां कीं। 16वीं सदी से 20वीं सदी तक, ओडिशा में कई संथकबी मलिकाओं की रचना की गई है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से मलिका-साहित्य की एक विशिष्ट कृति।

मलिका की व्युत्पत्ति से ज्ञात होता है कि 'मलिका' शब्द संस्कृत के 'माल्या' शब्द से सेतु में 'रॉक' तथा 'उगलिंग' में 'आ' जोड़कर बना है। जैसे फूलों या मालाओं को पुष्पमाला में गुच्छित किया जाता है, पुष्पांजलि में भविष्य के शब्दों को व्यवस्थित और वर्णित किया जाता है। यह संभवतः लोक साहित्य के अंतर्गत है। ग्रामीण जनता के लिए लिखे गए इस संग्रह के माध्यम से कवि हृदय की संगीतमय अभिव्यक्ति जितनी सरल है, उतनी ही सहज और आकर्षक भी है। इस मेलिका साहित्य में अवतार बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसमें दारु ब्रह्मरूपी श्रीजगन्नाथ से प्राप्त इन अवतारों के विषय को समझाया गया है। मलिका में भगवान की चिन्मय लीला के प्रकटीकरण के संबंध में गुप्त स्थानों के जितने भी साक्ष्य हैं, उन्हें निःसंदेह उड़ीसा का एक प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थ माना जा सकता है। मलिका के माध्यम से उड़ीसा के राजाओं की जो वंशावली देखने को मिलती है, उससे सेतु से संबंधित अनेक घटनाएँ पाठक के सामने आ जाती हैं। उड़ीसा में कालापहाड़ पर आक्रमण और गोहिरातिकिरी युद्ध, यवनों द्वारा जगन्नाथ मंदिर की लूटपाट और घेराबंदी, मुहम्मद डाकी खान का अत्याचार, राजा मानसिंह और रामचन्द्र देव के शासनकाल के विभिन्न पहलू, अफगानों और मुगलों की विधर्मी व्यापकता, तुर्कों और मराठों के बीच भयंकर संघर्ष और फ़िरंगी और आयरिश शासन के विभिन्न चरण ओडियन मलिका में स्पष्ट रूप से सामने आए हैं। कई पत्रिकाओं में ओडिशा के राजपतियों के नामों की सूची शोध के सापेक्ष है।

श्रृंखला के माध्यम से समाज चित्रकला का एक व्यापक रूप सामने आया है। उड़ीसा के गाँवों में रहने वाले लोगों का चरित्र, स्वभाव और आचरण

इसका विस्तार से वर्णन किया गया है. ओडिशा के देवता श्रीजगन्नाथ मलिका साहित्य की आत्मा हैं। श्रीजगन्नाथ क्षेत्र के महात्मा और श्रीजगन्नाथ की गैर लीला का मलिका से गहरा संबंध है। स्वयं जगन्नाथ ही यह अवतार धारण करेंगे और अपना सिर मारकर सत्य की स्थापना करेंगे, यह मलिका साहित्य की घोषित वाणी है। समाज सुधार के लिए मलिका का दान भी मामूली नहीं है। भ्रष्ट समाज को सभ्य बनाने और पीड़ित मानवता को आशा और भविष्यवाणी देने के लिए मलिका की दानशीलता अद्वितीय है। निम्न वर्ग के लोगों के लिए, जो वंचित, थके हुए और दुख के बीच में हैं, यह जन साहित्य उन्हें आश्वासन के शब्दों के माध्यम से जीवित रहने में मदद करता है। यह मलिका साहित्य सही मायने में उनके ज्ञान, पीड़ा और उत्पीड़न का आह्वान है। हालाँकि ये सभ्य, शिक्षित समाज में उपहास का पात्र हैं, गाँव की मासूमियत, सादगी और आस्था का प्रतीक हैं, लेकिन आम जनता के लिए ये ईश्वर का मिलन है। इसलिए मलिका के प्रति उनकी गहरी आस्था और विश्वास आज भी बरकरार है.

लोगों के व्यवहार को शुद्ध करने के लिए मलिका में अंकित दर्शन और अध्यात्मवाद को ओडिशा वैष्णव विचार के प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त है। ईश्वर प्राप्ति का अंतिम लक्ष्य पूजा व सेवा है। मालीबकरन को आध्यात्मिक गतिविधियों में लीन रहने और अकर्म आचरण करने, यानी विचलित और उदासीन होकर दिन बिताने का निर्देश दिया गया है। संतों का सच्चा मार्ग दूसरों से मेलजोल न रखना है। समाज को सच्चा, सुंदर और खूबसूरत बनाने के लिए मलिका प्रणेतेस की भविष्यवाणियां कभी भी बिखरने वाली नहीं हैं।

मलिका में वर्णित शहर का विवरण:

मलिका में कलियुग काल के रीति-रिवाजों के बारे में क्या कहा गया है, यह विचार करने का विषय है। महर्षि व्यासदेव तत्त ने संस्कृत भागवत में क्ययुग के सामान्य धर्म के बारे में कई बातों का उल्लेख किया है। शुकदेव परीक्षित को कियुग के लक्षणों के बारे में बताने गये और बोले, "हे परीक्षित। जब घोर विपत्ति आएगी तब उस युग के प्रभाव से धर्म, सत्य, पवित्रता, क्षमा, दया, जीवन, बल और स्मृति नष्ट हो जायेंगे। कुलियुग के आरंभिक दिनों में कुलीन लोग ओ थे

वह धर्मी कहलाएगा; कम से कम बलवान तो धार्मिकता और न्याय का कारण बनेंगे; दिखावटी लोगों और पाखंडी लोगों को चतुर लोगों के रूप में माना जाएगा। युवक आपसी रोटी में संभोग करेगा; रति शचरिक स्त्री-पुरुष की श्रेष्ठता का मानक होगा तथा यपबित केवल ब्राह्मण का लक्षण होगा। अज्ञानी लोगों के मामले में न्याय कमजोर होगा और जो चतुराई से बात करेगा वह विद्वान माना जाएगा। सुदूर तालाब को लोग तीर्थस्थल मानेंगे। केश सज्जा को शरीर का सौन्दर्य घोषित किया जायेगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में से जो अधिक शक्तिशाली होगा वही शासन करेगा। दस्युधर्म प्रारम्भ करने से राजा प्रजा के धन के प्रति गुप्त व्यवहार करेंगे। लोग गरीबी में दिन बिताएंगे, वे सूखे की कठिनाइयों से नष्ट हो जाएंगे, और लोग ठंड, हवा, गर्मी और बारिश से सुरक्षित रहेंगे। कलियुग के प्रभाव से वर्णाश्रमधर्म नहीं रहेगा, शरीर नष्ट हो जायेगा और लोग वैदिक धर्म से विमुख हो जायेंगे। इस प्रकार, क्रिया के अंतिम दिनों में, मनुष्य गर्भ की पीड़ा से पीड़ित होंगे, और भगवान धर्म की रक्षा और सत्य की स्थापना के लिए अवतरित होंगे।" (1)

कालिया युग का प्रभाव संस्कृत महाभारत में भी स्पष्ट है। सेतु में कहा गया है कि, 'इस समय मनुष्य लालची, क्रोधी और कामी होंगे और एक-दूसरे के प्रति गाली-गलौज करेंगे। ग्रह मानव जाति के विरुद्ध चलेंगे, प्रचंड वेग से प्रचंड हवाएँ चलेंगी, पालियाँ अशांत हो जाएँगी और बार-बार बड़ी और भयावह बाढ़ें सामने आएंगी। उम्र के आखिरी दिनों में इंसान. वे फारसियों को लूटेंगे और मार डालेंगे। युग के अंत तक लोग जपतप छोड़कर नास्तिक और चोर बन जायेंगे। किरी के अंतिम काल में पिता पुत्र के भाग्य का आनंद उठाएगा और पुत्र पिता के भाग्य का आनंद उठाएगा। उस समय अहानिकर अर्थात् ताजा सामग्री भी खाने योग्य मानी जायेगी। राजा लोगों को नहीं बचाएंगे; लेकिन वह उनसे और अधिक धन इकट्ठा करने का लालच पालेगा। सदैव अभिमान और अहंकार से भरे रहने वाले, वे केवल लोगों को दंडित करने में रुचि दिखाएंगे। हे राजन! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का नाम भी नहीं होगा। आने वाले समय में पूरी दुनिया एक साल में बदल जाएगी।

---

१. श्रीमद्भागवत महापुराणम्, 12वाँ स्कंद, द्वितीय अध्याय।

इस समय, महिलाएं और पुरुष अन्याय के कार्यों और निर्णयों को बर्दाश्त नहीं कर सकते। हे युधिष्ठिर! तब सारी पृथ्वी नष्ट हो जायेगी। श्राद्ध और यज्ञ करके लोग अपने पितरों और देवताओं को प्रसन्न नहीं करेंगे। युग का अंत युगांतरकारी क्षण द्वारा चिह्नित किया जाएगा। यह समझने की बात है कि युग का अंत तब होगा जब मनुष्य हिंसक, अधर्मी, शराबी और मतवाले हो जायेंगे। उस समय सभी प्राणी विहीन हो जायेंगे, सभी दिशाएँ प्रकाशित हो जायेंगी और तारों की चमक कम हो जायेगी। पत्नियाँ अपने पतियों की आज्ञा नहीं मानेंगी, और बेटे अपने माता-पिता को मारने से नहीं हिचकिचाएँगे। ललनाएँ अपने शूद्रों के साथ मिलकर पति की हत्या कर देंगी। हे राजन! अमावस्या के अलावा अन्य तिथियों पर भी सूर्य ग्रहण रहेगा। युग के प्रभाव से भ्रष्ट स्त्रियाँ अपने योग्य पतियों को भी धोखा देंगी और बुरा व्यवहार करेंगी तथा अपने सेवकों तथा पशुओं के साथ व्यभिचार करेंगी। जैसे ही सात सूरज उगेंगे, सूरज की गर्मी बढ़ जाएगी, तरीबिग से गड़गड़ाहट और बिजली की आवाजें सुनाई देंगी, और बड़े जगमगा उठेंगे। भारत! जब उस सूर्य की किरणों से सारा जल सूख जायेगा, तब संवर्वाक अग्नि के साथ ही सर्वत्र फैल जायेगी। ओह आदमी! उसके बाद विधाता के भेजे हुए गरजने वाले बादल तेजी से बरसेंगे और धरती पर पानी भर देंगे। शीघ्र ही समुद्र अपनी सीमाएँ तोड़ देगा, पहाड़ फट जाएँगे और पृथ्वी जल में डूब जाएगी।" (1)

महानिर्वाण पद्धति में योगेश्वर महादेव ने पार्वती को कलियुग का वर्णन बताते हुए कहा, "तपस्या रहित, पापमय, अत्यंत दुष्ट इस कठोर कलियुग में ब्रह्ममंत्र ही मुक्ति का एकमात्र साधन है।" महेश्वर. मैंने कई तंत्रों और कई आगमों में विभिन्न उपकरणों के बारे में बात की है। एम8. 'निर्बलता के युग में निर्बल प्राणी के लिए यह असंभव है। प्रिय! कियुग में मनुष्य पुनर्जीवित हो जायेंगे। वे ऐसा नहीं कर सकते. उनकी आखिरी आत्मा होगी. वे पैसों को लेकर चिंतित रहेंगे और हमेशा तलाश में रहेंगे। उनके दिल कब्र में नहीं होंगे. वे कार्रवाई का दबाव झेलने में असमर्थ होंगे।" (2)

1. महाभारत, प्रतिबंध पर्व, 1604.
2. महानिर्वाण केसम तृतीय जोय, श्लो, 122-125

इसी तरह का विवरण उत्पतसागर, गर्गसंहिता और बर्हस्पतसंहिता में पाया जा सकता है। उत्तर भारत के कवि तुस्सीदास ने अपने 'श्रीरामचरित मानस' में उत्तराखंड के कालाभुंडा के मुहाने पर दानतेय के आने की भविष्यवाणी की है। सेतु में कहा गया है, 'नरनारिगणाश्रम वर्षा धर्म का पालन किए बिना वेदों के विरुद्ध कार्य करेगा। ब्राह्मण वेद बेच देंगे और राजा प्रजा का धन चुराने में संकोच नहीं करेंगे। संविधान को कोई नहीं मानेगा. जो केवल अपने मन की बात कहता है वह सच्चा मार्गदर्शक होगा और जो भ्रमित है वह विद्वान होगा। झूठ बोलने वाले व्यक्ति को सभी लोग संत मान लेंगे। उपहार पाने वाला व्यक्ति चतुर माना जाएगा और दांतेदार व्यक्ति कर्मकांडी माना जाएगा। जो व्यक्ति बेदोक्त धर्मग्रंथों को अस्वीकार करता है, उसे वास्तव में स्वर्ग के राज्य में एक बाहरी व्यक्ति माना जाएगा।" (1)

बांग्ला में श्री कबिजकन अगम पुराण द्वारा वर्णित कियुगा की कहानी का उल्लेख किया गया है। उनकी राय में, "इस महान विपत्ति में, राजा लोभ में लिप्त होंगे, और सामान्य लोग, संगदोष के प्रति अवज्ञाकारी, अधर्मी और अधर्मी होंगे।" (2)

क्ययुग के सभी सामान्य रूप भारतीय साहित्य में दिखाई देते हैं रुढ़िवादी कवियों की रचना में यह उबल रहा है। कीव का उन्होंने जिन मुद्दों का उल्लेख किया उनमें से कई व्यवहार और कार्यों से संबंधित थे पाठकों के संदर्भ के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं दिया जा सकता है

---

1. बरन धर्म न असुमचारी 1 स्तुति विरोध उप नरनारी ॥
हिंज स्तुति बेतक रूप प्रालि . कंपनी विनिर्माण निगम अनुपालन ॥
सन मार्ग सोइ सोइ सदा और विचार। पंडित सोइ जो गल बाज स्त्रा ॥
एक झूठी शुरुआत. ऐसा संत सर्व कोई ने कहा
तीरे सयां जो परधनहारी। जो कर दंब सो बिग मास्टर ॥ ॥
स्मृति पटल को सदैव पोंछें। जडलियुग सोई बुद्धिमान, वह पराया है ॥,

2. आगम पुराण का मत है कि चमड़ी चमड़ी यत शुन जी खुलना ॥ 1
सुंदरी तुमि गो परम शुबि थिज वोग अभिरुचि अबलमवा ॥ ॥
चाल सुरपुरी महाघोर कै नीच महिपाल सर्वभोग नीच पाबे बेबे ।
'सुखा पाबे बेबे धर्मपथ परमाखले बेबर निंदान कलकले बेबर निंदान ॥

यशोवंत बास की मलिका

बहुत अन्याय होंगे. कोई किसी के पास नहीं जाएगा.
इंद्र के पास खेती के लिए अनाज नहीं होगा। बादल घिर रहे हैं
पिता को पुत्र पर भरोसा नहीं रहेगा। रैंडी ब्राह्मण अपने पिता का श्राद्ध करेगा।
अमीश बाहरी वस्त्र पहनेंगे। वह शूद्र को दूर देश ले जायेगा

o o o

दिन में तारा उदय होगा. सुबह की धूप तेज़ होगी।
हवा को रोककर. बैठने की जगह में सामान चोरी हो जाएगा.
किसी चीज़ में जीने का एक दिन! रजक घर पर खाना नहीं देगा
मेरी भतीजी और भतीजा. भाई-बहन में विनोद रंग
एक शिष्य गुरु की अवज्ञा करता है. माया ने कहा
गुरु को धन न दें. यह देखना आसान नहीं होगा.

अच्युतानन्द की गुप्त गीता

पुराण गीता भागवत का पाठ करें। यदि शराब और मांस का सेवन
किया जाए तो मां, मौसी और सास दूर हो जाएंगी और ब्राह्मण
नहीं गिरेगा। भृकि हरिबे सोडा के भाई। मंदिर खंडहर हो चुका है.

o o o

यह अन्याय में मजबूत होगा. जो शिष्य गुरु की पूजा नहीं
करता, वह देवता की आज्ञा नहीं मानेगा। जब उसने गुरु को देखा तो छिप गया।

o o o

राजा अन्याय करेंगे. राजा प्रजा की पुकार न सुने।

o o o

अकाल पड़ेगा और अनाज नहीं होगा. दूसरे लोगों की भावनाओं को न सुनें

o o o

अनाज को गाड़ी में रखकर बेचेंगे, जिससे पाप-पुण्य का ज्ञान नहीं रहेगा।

o o o

जानवर कितना भी गरीब क्यों न हो उसका पेट दूध से ॥
नहीं भरेगा। बिष्ठा ऋषिबेटी गोमाता पोए।

o o o

दया धर्म में डूब जायेगी। ब्रह्म शूद्र जल भरेगा, ॥
जीजा घर ले जाएगा। एक बिल्ली चोर जीवित रहेगा.।

o o o

बहू सास के बाल पकड़ लेगी. और उसके एक पुत्र होगा ॥

o o o

बड़े भाई को छोटा न मानें। छोटी सी दुनिया ॥
में अधर्मी ताकतवर हैं। वह वर्या को लेकर चला गया।

o o o

दुनिया लालची हो जाएगी. स्वाद नहीं होगा, पूरब से ॥
उगेगा मधु का पौधा। मैं वहां से महंगा हो जाऊंगा.

जगन्नाथ दास की भक्ति चन्द्र का।

ब्राह्मण वेद बेच देंगे . यदि गायें भोजन करेंगी तो ॥
गायें लोगों को प्रिय होंगी। पोइलिमन कुलबधु स्थिति। ॥
लड़की चाहेगी तो शादी कर लेगी वह संगीत वाद्ययंत्र के क्षेत्र ॥
में स्नातक बनना चाहता है। जानवरों की दुनिया में, आप दूसरों से।
नफरत करेंगे। लोग बहुत कुछ करेंगे. याक में बैठकर ॥
खाने से कोई जातिगत भेदभाव नहीं होगा. नरपति प्रजा ॥
के प्रति क्रूर एवं निर्दयी होंगे। कर कष्ट में दिन ॥
शून्य में बादल गुजारेंगे। हवा बिजली की तरह ॥
बारिश नहीं होगी गरजने लगी। जल के बिना कृषि
नष्ट हो जायेगी, लोग अनेक व्यापार करेंगे। अपना पेट नहीं
भर सकते भाई-बहन का प्रेम रहेगा। माता पिता पुत्र मरुथुब
[बेही भरिया जाणा छोड़ देंगे। यह घर में नष्ट हो जायेगा ॥

o o o

महायुग का घोर अंधकार । पाप में प्राणी का कल्याण होगा।।
यज्ञ जप तप भक्ति जाएगा . चौपाया रास्ता डूब जाएगा ॥
(अध्याय 2)।

पुस्तक में कुछ ऐसे तथ्यों का वर्णन है जिनमें वर्तमान घटनाओं से काफी समानताएं हैं। इनमें भारत में एक महिला राजा होने (1) और रूस द्वारा अंधकार युग (2) के दौरान पश्चिमी देशों में उल्लेखनीय भूमिका निभाने का मुद्दा महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

कुछ लोगों के लिए इसे बहुत बाद की रचना या संक्षिप्तीकरण मानना स्वाभाविक है। लेकिन चूंकि ऐसी जानकारी एकधुक पोत्शा में मिलती है, इसलिए इसे निर्णय के दायरे में शामिल किया जा सकता है। चूंकि अच्युतानंद की रचना में किसी अन्य देश का उल्लेख किए बिना केवल रूस का उल्लेख है, इसलिए सेतु का मानना है कि कवि को पता था कि भारत के साथ रूस के संबंध एक बार मजबूत होंगे और इसी कारण से, उन्होंने इसका नाम प्रकट करने में संकोच नहीं किया। इसके अलावा राजाओं के राजा का गायब होना (3), उत्तर दिशा से वज्रपात का आना (4), मंदिर से पत्थर निकलना।

1. विधवा हो जाओ. उन्होंने उसे सफल कहा।
भरतसोरि भी होंगे. वह लोगों को बांधेगा.

2. रूस के राजा को अपने जीवनकाल में जितने स्वर्ण ।
देवता मिलेंगे, वे रूस आने पर उनके चरणों में झुक जायेंगे

और जब यह बेकाबू हो जाएगा
तो हम इस पर दोबारा
गौर करेंगे.' चलो, रूस तो बारह लेगा ही।

3. कोई भी अकेला नहीं रहेगा. नये ।
साल में हम आपको देख रहे हैं.।

4. इस सूचक से अवगत रहें. झिनकारी नामक एक वर्षीय।
कीड़ा। यह उत्तर से आएगा. बदन बल वह मरेगा ॥

नीचे गिरना (1), छत्र मंदिर में बदलना (2), एक सप्ताह के लिए अंधेरा रहना (3), चारों ओर गिरना (4), छह साल के लिए जगन्नाथ की सवारी रुक जाना (5)। पूर्व से समुद्र का आना (6), ओलों और रक्त की वर्षा (7), खसरे का फैलना (8), बड़े वृक्ष पर गिद्ध का बैठना (9), गजपति दिव्यसिंहदेव के चेहरे पर धुएँ का उठना (10), आकाश से

1. मेरी चट्टान बड़े छेद से गिर जाएगी. उस दिन से खतरा हो जायेगा।
(रुक्मिणी गीता: अच्युतानंद)

और-- मेरी चट्टान बड़े छेद से गिर
जाएगी। गिद्ध अरुण खुंबर विराजेंगे। हे
बटसार! नीला पहिया मेरी बिजली होगी. (जी बिरचित चौतिसा)

2. जीवा उदे हेबे लीना चाहतिब रह गाह ।
छतियाए श्रीरंगवाहेरा सभी एक बार खतीबे श्रेक्षेत्र होंगे॥
(सं.; अच्युतानंद, पहली शताब्दी)

3. सात दिन तक अँधेरा रहेगा। बिजली के हमले ॥
(संस्करण: अच्युतानंद, चौथी शताब्दी)

4. तारा भाले टुकड़े-टुकड़े होकर गिरेंगे -
(भक्तिमुक्तिादक ऋत: निःसंतान, 8वाँ खंड)

8. नंदीघोष - (सारंग दास की मलिका)

6. ऐसे जानवर होंगे जो ताकतवर नहीं ॥ ।
होंगे, और पूर्वी समुद्र से नमक उठेगा।॥ ।
(लेखक: अच्युतानंद, 7वीं शताब्दी)

एक तारकीय भूकंप होगा. समुद्र पूर्व में उठेगा ॥
(जन्म: अच्युतानंद, 5वीं मंजिल)

9. बारिश होने पर, कपास विवाद टूटने पर उद्योग मर जाएगा। (हदीदास की मलिका) और -
बारिश होगी और देवी मजबूत हो जाएगी। (लक्ष्मिधा विलासिता: ताड़ीदास)।

7. मनुष्यों में कण्ठमाला आम है ।
आप घर-घर जाकर मर सकते हैं।।
(उलितांद्रिका:जगन्नाथ दास. 4थ ए)

9. एक शिकारी पक्षी पानी में बैठेगा। (कलीबयालिश: अच्युतानन्द)

10. दिव्यसिंहदेव तीर संख्या में । . धुआं केतु उदे पूर्व रागेश। ।
(कलिकाल्प: अच्युतानंद, तीसरी प्लेट)

बिजली गिरने से और जगन्नाथ की मणि में आग लगने से (1), बाढ़, तूफ़ान॥
और भूकंप से जान-माल की हानि होती है (2), कूड़ा-कचरा फैलने
से (3)। महारानी के शासनकाल के दौरान महिलाओं के खिलाफ हिंसा
में वृद्धि (4), नुआपटना में झंडा फहराना (5), राष्ट्रीय रंग
(6), उत्तर में जाति, पंथ और रंग के बावजूद सभी का एकत्र होना (7)

1. ढाकाशु वज्र गिरेगा और ।
बवीदेवा के रत्न आकाश से जुड़ेंगे। ॥

और--जब सिबू नीला आकाश छोड़ देता है। नगीब
रत्न चंदुआ अग्नि तब। नशे में चूर।
यदि आप नीलाच से चोरी करना चाहते हैं।।

हालांकि, पिछले कुछ सालों में जगन्नाथ उनसे अलग हो गए हैं ।
जो बात सुनने में आ रही है वह है रत्ना चंदुआ में लगी आग और फिर
नीलाचल पीठ से महालक्ष्मी के रक्त मुकुट की चोरी के बारे में ज्यादातर लोग जानते हैं।

भूकंप अन्यायपूर्ण होगा. 9. कुछ न जानने का डर. ॥

टुकड़े ट्रेंड में होंगे . कुछ राष्ट्र नष्ट हो जायेंगे ॥

वायु और जल से पृथ्वी नष्ट हो जायेगी। (राजा मुँह में मर जायेगा।)

9. वह हाथी पर सवार होकर आएगा, वह हाथी पर सवार होकर
आएगा, और वह सब कुछ साझा करेगा, शाबर में - नवनगर
में, जमुदली में अर्ध-पीठ के रूप में।।

4. क्योंकि रानी ही राजा बनेगी. जो दृढ़ रहेगा, उसे आशीष मिलेगी।

5. तुम्हें पता है कि नुआपटनी में झंडा लहराएगा.

6. पृथ्वी इंद्रधनुष के आकार में दिखाई देगी. आइए जानते हैं क्या हुआ था हत्याकांड ॥

7. शर्म दूर हो जायेगी . कोई नस्लवाद नहीं होगा ॥

चढ़ाव

ग्लोब का उदय (1), समुद्र द्वारा रत्नसिंहासन को छूना और मक्का और मदीना में लड़ाई (2), कल्प वृक्ष का कटना (3), और चंद्रमा के क्षीण होने पर सूर्य की चमक (4) का मलिका में वर्णन किया गया है। विशेष रूप से, ज्योतिष ग्रंथों से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि एथी. में ग्रहों की स्थिति का वर्णन युगान्त काल से मिलता है। एक महीने में चंद्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण (5), शनि मीन राशि में

---

1. मेगिगोल उत्तराफेरग होगा। वृत्त दक्षिण दिशा की ओर होगा. ।

और जहाँ तक आंग बोंग किंग और एडियू का देश है। समस्त उड़ीसा उत्तराखंड।

9. बाईस फुट की मछली जो सिंहासन पर बैरन की भूमिका निभाती है।
मक्की मदीना में भीषण युद्ध होगा और यात्री मारे जायेंगे।।

और पूर्वी क्षेत्र में बादल होगा, उत्तर में बादल होगा. मक्का और मदीना में जानवर और इंसान के विकल्पों में लड़ाई शुरू हो जाएगी ॥

3. कल्पबुट्ट शाखा बन कर काट देंगे.
गोपंथुबूटी की महिमा को ध्यान में रखते हुए ॥

पुरुष जननांग क्षेत्र टूट जाएगा. क्लिप को ट्रिम कर दिया जाएगा.।

समुद्र ऊपर उठेगा और हवा चलेगी। श्रीजुनपाबोट मेरा तोड़ देगा। सच्चे रहो. वार्षिक जनगणना ।

अच्युतानंद (1999) ने भी कहा है कि इस उम्र तक कुछ भी स्थिर नहीं रहेगा। उदाहरण के लिए--'थाई नौ तीन नब्बे. यदि ऐसा है तो रामचन्द्र को कौन छोड़ेगा। कुछ भी ठीक नहीं होगा."

4. चांदनी फीकी पड़ जाएगी. सूरज तेज़ चमकेगा. ।

5. हर महीने शशिसूर्य मनाया जाता है।
शास्त्रकोप कोर्डानसन्ति तदा रजत परस्थरम् ॥

ज्योतिषियों ने उल्लेख किया है कि यदि यह निश्चित है
(1), तेरह दिन गिरते हैं (2), वर्ष (3) के दौरान घटते महीने होते
हैं, खासकर जब पंचग्रह, षडग्रह या सप्तग्रह अशुभ राशि (4) में
होते हैं, शनि और मंगल हस्त राशि (5) में गरजते हैं, और वर्ष के दौरान
पुंगरास सूर्य परागित होता है (6), जलप्रलय का समय निकट आ रहा
है। इसमें से आश्विन मास 1982 में सूर्य एवं चंद्र ग्रहण, 1967 में॥
वैशाख मास शुक्लअष्टमी गुरुवार, अक्टूबर 1982 में मीन ॥
शनि योग, अक्टूबर 1982 में 13 दिन, 15 जनवरी से 12 फरवरी 1983

---

1. महाप्रू अच्युतानंद की 'रुक्मिणीगीता' में शनि के मीन राशि में गोचर करने पर भारत वर्ष में युद्ध की स्थिति उत्पन्न होगी। उदाहरण के लिए,

जब भारत में गर्मी होगी तो मीन ।
राशि शनि के साथ युति में होगी ॥

9. यदत् जयते पक्षस्त्रोयोदशं ।
भबे लोक रोतो घोरो मुंडमाल युग मही। ।
अच्युतानन्द का कलकल्प पाँचवीं
मंजिल पर है - यदि तेरह दिन हों। अगर कल्कि को चिंता होगी.।
तन्कृत 'मुम्बबोधनी' के तीसरे खंड के प्रथम अध्याय में लिखा है- बच्चा
13 दिन में पैदा होगा। उस दिन पता चलेगा कि यह कितना गंभीर है. ।
यह जगन्नाथ दास की 'रुक्मिणी मलिका'
में है ----------" ।

3. रोजतोइमासे भवेद्यस्कृं चं वैशिति
विग्रहम्। छत्रभंग कराची या अकाल पीड़ित)

4. यदि पञ्चसद या सप्रग्रह सम्मिलिता भुवति।
राष्ट्रस्यारंगे नृपबिनशस्तद्रशिदानंग मोरारंग धवनासकत।।

5. धरणी सुचेबा सूर्य की वक्र ॥ ।
में, हाथ में, हाथ में, लाल पोशाक।
में। हर जगह शहीद हुए सैनिकों। ।
से देश बर्बाद हो गया है। ।

6. 'श्रीमद्भागवत महापुराणम्' के 10वें स्कंध में यह तथ्य बताया गया है कि ऐसा सूर्य ग्रहण भगवान श्रीकृष्ण की मृत्यु से पहले के समय में हुआ था। इसका उल्लेख अध्याय 82। में है।

माघ मास का क्षय, 31-10-82 को पंचग्रहकूट तथा 13-11-82 को साद एवं सप्तग्रहकूट, 1982 के मार्च से मई के बीच शनि एवं मंगल के हाथ में बिजली का गोचर तथा 16 फरवरी 1980 को कुंभ राशि तथा धनिष्ठा नक्षत्र में पूर्ण सूर्य ग्रहण। ज्योतिषियों के अनुसार इसके कारण विभिन्न क्रांतियाँ, आपदाएँ और विनाश घटित होंगे। महापुरू अच्युतानंद ने किलि के अनुयायी के रूप में तीस परिषदों के नामों का उल्लेख किया है। तथापि, घृणित और अविश्वसनीय, स्व-लोग, घृणित, घृणित, और घृणित) विवेक, और बुरे, विभेदक और घृणित और भव्य, आडंबरपूर्ण निर्णय। यह स्वयं का विनाश करेगा। जब चंद्रमा (1) पर दाग या कलंक दिखाई देता है, जब कैलासपुर (2) में शिव पार्वती की शिला टूट जाती है, जब दिन के दौरान एक तारा दिखाई देता है (3), जाजपुर (4) में सातवीं मां (यम मां सतभौनी) के पैरों से रक्त बहता है, मणिभद्र (5) में शांता यज्ञ किया जाता है, और अच्युतानंद की समाधि के बगल में बरगद के पेड़ की शाखा गादी (6) को छूती है, तब कल्कि अवतार का संगीत प्रकट होगा। पांच लोगों ने एक दिया है। संकेत. मलिका ग्रंथ अप्रकाशित हैं, परंतु संबोधन के समय अर्थात कल्कि अवतार के समय इसका प्राकट्य होगा और लोग इसे पसंद करेंगे (7)।

---

१. इंद्र के बाद फिर बात देखी जाएगी (शिशु अनंत की मलिका, 5वीं शताब्दी)

2. कैलाशपु में वसुधा फातिब (तरल)

3. दिन तक तारे खाली दिखाई देंगे (सक्रिय)

४. सातों माताओं ने सिर उठाया। उसके ऊपर रुदुर ॥
(कल्किकल्प; अच्युतानंद तीसरा पाताल) है।

5. जब आखिरी डांस होगा. शांतयज्ञ मणिभद्र में होगा ॥
(विज्ञान: अच्युतानंद चतुर्थ)।

6. स्वामी कहते हैं बारह मास। मेरा निवास स्थान चिठोत्पला के तट पर है॥
सिद्ध साधना होगी। मेरे बाल मेरे बालों से चिपक जायेंगे. ।
(कल्पल: अच्युतानंद छठवीं मंजिल)।

७. जब सूरज उगेगा, तो वह होगा। ग्रंथि की पूजा होगी (पंचशाक् परिषद्, 9वीं शताब्दी)

यहां कुछ और खास बिंदुओं पर चर्चा बाकी है. तभी
क्याल युग के अंत में जगन्नाथ मंदिर छोड़ेंगे और छठिया धाम में॥
प्रवेश करेंगे। दूसरे लोग चाहे कुछ भी सोचें, जगन्नाथन पंथ के
प्रचारक इस मामले को थोड़े अलग नजरिए से देखते हैं। उनके मुताबिक,
जगन्नाथ अपना सामान्य निवास पुरुचोत्तम छोड़कर कहीं और नहीं जाएंगे। उन्होंने
सतयुग के राजा इंद्रद्युम्न के सामने प्रतिज्ञा की। लेकिन
इतिहासकारों की चर्चा से पता चलता है कि एक बार नहीं, कई बार,
जगन्नाथ के तरुब्रह्म मुरी को कई स्थानों पर ले जाया गया और फिर उनके
ब्रह्मा को वापस लाकर नीलाचलपीठ में स्थापित करने का
प्रयास किया गया। बिशार मोहंती ने कैसे जगन्नाथ को ले जाकर गंगा
में जलाते समय उसकी सांस वापस लाने का साहस किया और कैसे गजपति
रामचन्द्र देव ने कुजंग गार्ड से सांस वापस लाकर एक नया विग्रह स्थापित
किया, यह मदाला पणजी में दर्ज है। कुछ लोगों को पता होगा कि
जगन्नाथ के हमलों से बचाने के लिए उन्हें सोनपुर में दफनाया गया
था। जगन्नाथ किसी के नहीं हैं, वे उनके हैं। चाहे वे कहीं भी हों,
यदि कोई उन्हें भक्तिभाव से बुलाता है तो वे दर्शन दे देते हैं। ऐसी
किंवदंती है कि दसिया बाउरी के हाथ से नारियल लेकर स्वयं जगन्नाथ
ने खाया था। रथ तब तक नहीं हिलता जब तक बालिग्राम का
पैर चबमैन आकर रथ से चिपक नहीं जाता। एक बार की बात है हदिया॥
कुमार ने हटिया नगर के कलाकार से एक भक्ति गीत गाया था.॥—

देखते हैं हटिया नगर कितना बेहतर पौधारोपण
करेगा. मुझे छदिया गांव में आपका कल्पबोट अवश्य।
करना चाहिए। दुनिया इस मामले को हमेशा देखती
रहेगी. हदिया कमर अंत की वाजिब श्रीहरि बोली बढ़ाणे।(1)

इ। हदीबास की 'कामेनफुल मलिका' में है--
चटिया गांव में झोपड़ी. दोनों भाई बाईस की ॥
संख्या में मिलेंगे। ।

हालाँकि, खुन ने 'चुंबक मलिका' में बालक अनंत चत्याबोत की
महिमा का उल्लेख किया है -

चैत्या बूट पहला बूट लोकेशन है। वहाँ अभुद लीला सुनी जाती है।

(पाँचवी श्रेणी)

चौतिशा, दीनकृष्ण दास का भावी पुत्र ॥

चटिया नगर अमरावती या कटक। जगन्नाथ, जो चले गए, को सुज़हिन लोक ने ले लिया।

लेकिन मिशदा अनंत की 'भक्तिमुक्तादिक गीता' में प्रमाण है कि जब तक जगन्नाथ नीलाखलक्षेत्र छोड़ेंगे, तब तक बड़ा दरवाजा सात दिनों (1) के लिए बंद कर दिया जाएगा। शायद इसी कारण से, महाप्रू अच्युतानंद और अन्य प्राचीन कवियों ने घोषणा की है कि उन्हें सात दिनों तक अंधेरा रहेगा। बाढ़ के इन सात दिनों के दौरान, और जैसे ही पूरे यूटा में बाढ़ आ जाएगी, इसके चारों ओर युद्ध का घमासान मच जाएगा। उस समय तक देश की स्थिति क्या होगी यह कवियों के निम्नलिखित विवरण से पता चलता है।

हादीदास की किलि चौतिसा ॥

सातवाँ दिन घोर युद्ध होगा।
सुदर्शन चक्र शून्य में है।

बलिगांव बास की मलिका ॥

सात दिन अँधेरे हैं . घोटी भावपुर बुल्लाली ॥
पाटिया होगी कि नैश। तो यह एक आपदा होगी ।

भीमवोई का चौतिसा ॥

झांपी को सात दिन तक लेने का समय हो
गया है. सैनिक अपनी तलवारें लिये हुए चल रहे थे।
घबड़ाएं नहीं। घंटियों के झुंड होंगे
वही बीज होगा. ।

इसी प्रकार, अच्युतानंद ने 'रूस' के संबंध में लिखा है कि, संबोधन के समय, इस देश के लोग लल्लादेउल से जगन्नाथ के दारुवग्रह को लेने का पुरजोर प्रयास करेंगे, लेकिन उनके प्रयास फलीभूत नहीं होंगे (2)।

८. सात दिन तक द्वार गिरा रहेगा। कैरिज रोड पर कोई रास्ता नहीं होगा.
(भक्तिमुक्तिदायक गीता, 8वाँ खंड)

९. रूस को चिंता है कि वह शराब
की खातिर घुस जाएगा. ॥
(लेखक: अच्युतानंद, 7वीं शताब्दी)

दुनिया भर से लोग दारु ब्रह्मा की पूजा करने के लिए नीलाचल पीठ पर एकत्रित होंगे और जगन्नाथ की असीम कृपा के कारण, दुनिया की सभी गुप्त जानकारी प्रकट हो जाएगी, भले ही रूसी लोग 'वेओरथ' (वाहन) की मदद से कितनी भी कोशिशें कर लें। जगन्नाथ नित्यधाम की गीतात्मक परंपरा कहीं और कभी नहीं जाएगी। यहीं रहकर वे संपूर्ण विश्व को एकता और सद्भाव के बंधन में बांधेंगे और उन्हें महान प्रकाश में प्रकाशित होने के लिए प्रेरित करेंगे।

काकी स्वरूप के प्राकट्य काल को युग की संक्रमण अवस्था (2) कहा जा सकता है। इसी समय विश्व युद्ध छिड़ गया और पत्रिकाओं में बड़े पैमाने पर विनाश की खबरें छपीं (3)। सेठ में कहा गया है कि कीर भयंकर है

---

१. राजा को छीन लेना. उसने एक खाली रथ लाकर पास में रख दिया। मन ही मन पांचों तलवारों से ॥ चारों लोक नष्ट हो ॥ गये। यह ध्यान का गीत है. भगवान दारूब्रह्मा मार्ग नष्ट कर देंगे। । (पंचस्खान परक, 21 ए)

२. उससे कहना, "जिस दिन हम बदसूरत हो जायेंगे"

३. रहस्यमय संघर्ष होगा. उसे कोई हरा नहीं सकता. । (यशोवंत दास की पुस्तक)

गहन शुद्धि होगी. रामचन्द्र धरती की सांस होंगे। । लोगों की कठिनाइयां गलत होंगी. । (अच्युतानन्द की चौतिशा)।

कीव युग के अंत में भारी बारिश। उस दौर में रंगोल बहुत होंगे. । (अमर जुमर की पुस्तक: द इमैक्युलेट रेजिडेंस, खंड 1)

पूरी दुनिया में। तीन दिशाएं शून्य हो जाएंगी 11 । निश्चित तौर पर पूरी दुनिया में दहशत फैल जाएगी । उस समय कोई किसी की मदद नहीं कर पाएगा.। (वैज्ञानिक: अच्युतानंद VI)

वास्तव में, चिकित्सक विकार का कारण निर्धारित नहीं कर सकते (1)। इस समय शठ भक्त अपना पेट भरने के लिए कपटपूर्ण बातें बताकर लोगों को धोखा देंगे, लेकिन इससे उन्हें केवल तिरस्कार और तिरस्कार ही मिलेगा (2)। जो सच्चा भक्त है वह अपने दिन बड़े दुःख में जीएगा और कई प्रकार के उत्पीड़न सहेगा (3)। युगांतला काल के दौरान, बिरजा (4) की सीट जाजपुर में सुधर्मसभा आयोजित की जाएगी और भक्तों की पहचान महान संतों (5) के लेखन से की जाएगी। इस समय लोग कम मात्रा में अनाज और सामान बेचेंगे और घोर अन्याय और पाप की वृद्धि के कारण समुद्र की बाढ़ से समुद्र अलग-अलग हो जाएगा और एक द्वीप बन जाएगा (6)।

---

1. औषधि का ज्ञान न होना ही रोग का कारण है। डंडा पकड़ने की हिम्मत करो. ।
(अध्याय बोधनी: अच्युतानंद, 3रा, 1अ) भक्त भक्त

9. चारों ओर घूम रहा होगा। मुस्कुराएँ और लोगों को आकर्षित करें ॥
कहा जाएगा कि भविष्य चावल के दाने में होगा. ।
यदि वह अपनी भक्ति से पश्चाताप नहीं करता है, तो उसे पुरस्कृत किया जाएगा।" ।
(थंबोधनी; अच्युतानंद, 3रा, 2रा ए.)

3. भक्तों को सबसे कठिन दिन लगेगा. आशाहीन निन्दा लंबे समय तक टिकेगी। ।
(विज्ञानकल्प: अच्युतानंद, तीसरा अध्याय)

4. राजा जाहू बैलों की सेवा
करेगा। जजनगढ़ की सधर्म सभा ॥
(अच्युतानन्द की चौतिशा)

8. ग्रंथ कि मेला जाजपुर में आयोजित किया जाएगा.
शास्त्रों में मिलता है पद्म भक्त का नाम ||
(भक्ति गीता: शि शुअनंत)
और - जाजपुर में पुस्तक मेला । फिर मिलेंगे भक्त! (चुंबक।
शृंखला: बच्चों का अनंत, 5वां संस्करण)

6. छोटी-छोटी की बिक्री के समय हमारी नदी ।
नाथ द्वीप के अंतिम छोर तक जायेगी ॥
(अमर आदेश की पुस्तक: अच्युतानंद, 16ए)

अच्युतानंद ने लिखा है कि जल्द ही एक भयानक दिन आएगा जब दक्षिण से तीन सेनाएं और पश्चिम से सेनाएं देश में घुस आएंगी। उस समय तक पूरब खाली हो जायेगा और झारखण्ड की शेष भूमि कुल (1) के लिए बीज मात्र रह जायेगी। कलि के अंत में उनकी (अच्युतानंद की) मृत्यु के बाद उनके (अच्युतानंद के) टेरारुरु की शुरुआत की कहानी संथाकाली निराकार दास (2) के विवरण से उपलब्ध है।

इस श्रृंखला के माध्यम से इस काल के सामाजिक जीवन का एक विडम्बनापूर्ण एवं धूमिल चित्र सामने आया है, जिसमें गुरु परम्परा आडम्बर, दृढ़संकल्प एवं स्वार्थपरता में दम तोड़ती नजर आती है। अच्युतानंद बताते हैं कि गुरु-शिष्य में निहित प्रेम के पवित्र पुल को नष्ट करने वाली आत्म-इच्छा और आत्म-केंद्रितता की बाढ़ वर्तमान काल में केवल असंतोष और अस्थिरता को जन्म देगी (3)।

फिर यशोबंता दास की मलिका की ओर से प्रमाण है कि सत्य की स्थापना के लिए स्वयं जगन्नाथ कल्कि के रूप में अवतार लेंगे (4)। सतयुग के प्राकट्य के समय सामान्य लोगों को अचानक इसका ज्ञान नहीं होगा (5)। लेकिन

1. दक्षिण से आएगी तेलंगाना फोर्स. सेना पश्चिम से आएगी॥
वह हृदय का बीज होगा ॥
(कल्पकल्प, 8वीं मंजिल)

9. बारह मनुष्य सुखी होंगे, तेरह नाश होंगे ॥
(अमरों की पुस्तक, 14 ए)

୩. यह कीव में होगा. शिष्य कभी भी गुरु की आज्ञा नहीं ।
मानेगा। शिक्षक पाठ पढ़ाएंगे. शिष्य जाएगा, मुझे पता है ॥
गुरु से वह नाम मिलेगा, तब वह छह श्लोक बोलेगा। बी) ।
(धर्मशास्त्री: अच्युतानंद, तीसरा खंड, 4

4. ॥
(यशोबंत दास की मलिका, दूसरा अध्याय)

5. सत्य मौन में प्रवेश करेगा, जिसे ।
मानव शरीर में कोई भी नहीं जान सकता।
(गरुड़ चौतिशा: बाल शाश्वत)
इसलिए, क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जिसका अंत नहीं होगा,
अधिकार। {भक्ति प्रधान: भनिता-शिशुअनन्त)

जब इसका पूर्ण प्रभाव पड़ेगा तो बहुत से लोगों का हृदय परिवर्तन हो जायेगा और सभी लोग सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार की ओर प्रवृत्त हो जायेंगे।

उद्भव का समय

श्रीमद्भगवद्गीता में जब धर्म की महिमा भारत की पवित्र भूमि पर प्रकट होती है, तब युग-युग में भगवान दुष्टों का नाश करने और सत्सों को प्रबुद्ध करने के लिए प्रकट होते हैं और दुष्टों को मिटाकर सत्य की स्थापना करते हैं। संसार के इतिहास का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि एक निश्चित काल में दैवीय शक्ति सम्पन्न अवतारी पुरुष का प्रादुर्भाव होता है।
चक्रीय विकास की यह प्राकृतिक प्रक्रिया अवतार की पृष्ठभूमि का घर है। युगाद या कालानुक्रमिक आँकड़ों से इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि चतुर्युग की गणना में कियुग के आरंभ और अंत के बीच की समय रेखा केवल पाँच-छठे भाग तक ही सीमित है। इस संबंध में भास्कर्त श्रीमद्भागवत महापुराणमु में विशिष्ट प्रमाण मिलता है। सेतु का कहना है कि परीक्षित राजा के जन्म से लेकर नंदराज के सिंहासन पर बैठने तक की अवधि 1115 वर्ष है, अर्थात।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ यह
वर्ष एक हजार एक सौ पच्चीस है। (2)

और उल्लेख है कि जब सप्तर्षि माघनक्षत्र में अन्वेषण कर रहे थे, उस समय तक (श्रीकृष्ण की मृत्यु के समय) किय युग के 1200 वर्ष बीत चुके थे। श्लोक था यदा ॥—

देवर्षसार सप्त महरु बिचर हि।
(3)

---

1. वह संतों की स्थापना करेगा. सनातन धर्म की आज्ञा रामचन्द्र देंगे। सत्य पर गर्व करें. (अच्युतानंद का भविष्य ओडिशा ॥)

9. 12वां कंधा, दूसरा डॉ. हालाँकि,
श्लोक 26 में, विष्णु पुराण भी इस वाक्यांश को एक अलग तरीके से प्रस्तुत करता है, अर्थात - जबत् परीक्षितोजनं
जदनानदिविशेचनम्। यह हजारों वर्षों का वर्ष है। (भाग 4 24 104)

3 12वाँ कंधा, 2रा श्लोक, श्लोक 31
फिर अच्युतानंद की 'ब्रह्मटिका' का विवरण भी इसी प्रकार है-

इस दृष्टि से देखें तो नंद के सिंहासन पर बैठने तक कलियुग काल की अवधि 1200 + 1115 = 2315 वर्ष है। चूँकि नंद वंश का शासन काल 100 वर्ष था (1) और यह राजवंश 400 वर्ष पूर्व शासन कर रहा था, ईसा के आरंभ में शासन की औसत अवधि 2315 + 100 + 400 = 2815 वर्ष है। अतः अजीसुधा (1984 ई.) तक कलियुग का कुल भोग 2815+1984=4799 वर्ष है। यहां यह बताया जा सकता है कि महर्षि मनु ने कीव के परमायु का उल्लेख किया था

चट्ट्याहु मिलनि रैनिषाना चट्टंग युगम्।
जानकारी शाम की शाम की सूची आदि में उपलब्ध है। ।

दूसरे शब्दों में, क्याल युग का जीवन काल 4000 वर्ष है और दारा के पहले और बाद की संख्या 400 वर्ष है। इस प्रकार, कियुग की विशिष्ट अवधि 4800 वर्ष थी। इसके अलावा श्रीमद्भागवत में भी इसे 4800 वर्ष माना गया है। यह पढ़ता है-

चलहारी प्रीनी ब्रेटेकोंग उपलब्धियाँ क्रमशः।
(2)

अर्थात् चार-तीन-दो और एक हजार वर्षों तक उन सत्यों का आनन्द लिया जाता है। उनके अनुसार सतयुग की आयु एक हजार वर्ष है

उस दिन, मैंने उन सभी से कहा जो मगरुक्ष के सातवें दिन बैठे थे। सप्तर्षि के दिन, जब उन्होंने वह स्थान लिया जिसकी भविष्यवाणी की गई थी, उस दिन, भगवान वह। स्थान बन गए। उस समय, बारह सौ कियुग वर्षों का आनंद लेने वाले] । श्रीकृष्ण चंद्र को व्यापक रूप से कियुग के नाम से जाना जाता था।

1. चन्द्रगुप्त ने लगभग 322 ई.पू. में शासन करना प्रारम्भ किया। उनके पहले नौ नंद-मोहपद्म और उनके आठ पुत्र थे, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने एक सौ वर्षों तक पृथ्वी का आनंद लिया। (प्राचीन ऐतिहासिक परंपराएं एफ.ई. पेरगिटर द्वारा, प्रथम संस्करण 1922. पृष्ठ 172)

9. तीसरा कंधा, 11 ए, श्लो 19

हालाँकि, मनुष्यों के लिए चारों स्वर्गों का औसत वर्ष 12,000 वर्ष है। महाभारत, बनपर्व, अध्याय 188, श्लोक 27 और मनुसति अध्याय 1 श्लोक 71। लेकिन किय युग में, विद्वानों ने इस 12,000 वर्ष को देवताओं का वर्ष मान लिया और चतुर्मुग की अवधि निर्धारित करने में गलती हो गई।

यह समझना चाहिए कि जदलियुग की आयु चार हजार वर्ष है। यदि हम उसमें 2 गुना 100 वर्ष और 100 वर्ष जोड़ दें तो किलियुग का योग 4800 वर्ष होगा। इसी क्रम में यदि 1984 ई. में कलियुग का भोग काल 4799 वर्ष है तो इसकी पूर्ण समाप्ति होगी अर्थात् 1985 ई. में 4800 वर्ष का भोग होगा। (1)

भास्कराचार्य की पुस्तक 'सिद्धांत शिरोमणि' से 2000 ई. के आसपास क्ययुग की समाप्ति का प्रमाण मिलता है। उन्होंने :—

नंदाद्रिदुगानात्स्रथा शिकनुप्स्यन्ते कलवरसारः लिखा।

दूसरे शब्दों में, शाद वंश के राजा के समय में क्यूशू युग के 'नंदाद्रिन्दुगणस्तथा' को इस न्याय में निर्धारित किया जाना चाहिए। संख्याओं की गणना करते समय संख्याओं को दाएँ से बाएँ (अंकननम बामतो गण) गिना जाता है। इस दृष्टि से देखने पर 'नंदादृयुगनस्थ' (नंदा+अद्री+इंदु+गण+तथा) का अंक नंद होगा (मगध के महापाद नंद और उनके आठ मूत्र) आद्री का अर्थ है पर्वत (यहां सप्तकुलाचल अर्थात- महेंद्र, मल्ल, विमान, शुक्तिमान, रक्षा, बिंध्य और परिपात्र (अंग्रेजी-संस्कृत शब्दकोश- मोनियर विलियम्स द्वारा), रंद्र (चंद्रास्तम संख्या एक शब्द संख्या है) कल्पद्रम , खंड 1, पृष्ठ 205) और गण ('अश्विनी जनन आदिनक्षत्र वतिहं देव, मानुस, राक्षसगण इति तु परिभाषिकम्' (शब्दकल्पद्रुम, खंड 2, पृष्ठ 293) 379 वर्ष)। इतिहास से प्रमाण मिलता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय को शकों को पराजित करने के बाद 380 ई. में राजगद्दी मिली थी।

अतः उनसे आज तक (1984 ई. तक) भोग की अवधि 1605 वर्ष होती है। इस दृष्टि से क्याल युग का कुल जीवन काल 3179 + 1605 = 4784 वर्ष है। चूँकि 4800 वर्ष पूर्व इस युग का अंत था, भास्कराचार्य के मतानुसार इसका अंत 1984+16=2004 ई. में हुआ। में

मधु ओडिशा के संतों ने अपने तांत्रिक दृष्टिकोण से कलियुग के आनंद और सत्य के रहस्योद्घाटन के लिए 48000 वर्ष नहीं बल्कि 5000 वर्ष कहा है।

---

1. हालाँकि, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित विश्व खगोलीय सम्मेलन में यह राय व्यक्त की गई है कि बाढ़ 1985 की शरद ऋतु के दौरान दिखाई देगी।

(द टाइम्स ऑफ अमेरिका, 18-7-69)

कर चुके है इस सन्दर्भ में महाप्रू अच्युतानन्द का विवरण उल्लेखनीय है। वह अपनी भविष्य की चुतिशा में लिख रहे हैं-

पता अमरपुर,
चारों में से ठाकुर निकलेंगे, हे रामचन्द्र,
पंचसाधार के।

दोबारा- पता ग़लत है
रामचन्द्र ने बायें हाथ में पाँच शर्कराएँ रख दीं।
मीन राशि वाले शनि को धोखा देंगे।

एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा:

यह चार ऋतुओं में मिश्रित होता है।
चार सौ तीन शून्य उतना ही अच्छा है जितना
इसे मिलता है। वह भाग जायेगा और रौंदा
जायेगा। चेताई गीत गाकर अचुउत जे वली

बालक शाश्वत ने इस समय को अपने 'भविष्य के भविष्य' में स्वीकार कर लिया है। शिष्यों बारंगा और रुरु अनंत के बीच विवाद में किय युग का अंतिम काल निर्धारित किया गया है। जैसे-

बरंग चोलर औलोमा गोसायु भविष्य निर्णय कहते
हैं। तुम्हारा चेहरा कल्कि जैसा कब होगा? बच्चा।
कह रहा है, "ओह, तुम गंदे बैरंग हो." जब पाँच हजार वर्ष
की आयु बीत जायेगी तो आनन्द आयेगा। जैसा ।
कि आपमें से कई लोगों ने इसे सुबह देखा है, आप
यह जानते हैं। जब वह कलंकित हो जाता है तब वह
नारायण होता है। समक्ष बड़ा सुनकर इसे
सिद्ध करें। हम सब मिलकर पाँच हजार बना ।
लेंगे। इस वक्त तो मैंने तुमसे कहा है बेबी.
हम इसे अपने दिल में रखेंगे. (ओ,एल, 1889- ।
राज्य संग्रहालय, उड़ीसा)

महापुरु हादीदास ने अपनी 'काली चौतिशा' में यह भी बताया कि क्याल युग का अंत 5000 वर्षों में होगा। उसके मतानुसार-

सम्भंसा की पांच हजार किली समाप्त
हो जायेगी। सतयुग का शुभ प्रवेश होगा। (1)

हादीदास और अच्युतानंद दास (हादियाथा और अच्युतगढ़ के) का क्याल युग के अंतिम काल और कल्कि अवतार की लीलाओं के संबंध में प्रतीकों के माध्यम से वर्णन किया गया है। 'लक्ष्मीधर विलास' में हादीदास. बताया गया है कि साल 2000 तक किली युग का युग खत्म हो जाएगा और साल 1989 तक किली मैन सामने आएगा। जैसे-

निन्यानबे चार-तेरह पर सही है।
देर हो गई तो स्वरूप हो जाएगा। (2)

अच्युतानंद ने अपनी 'काली बयालीश' और 'काल कल्प' में यह भी लिखा है कि क्या युग की भोग अवधि क्रमशः 5000 वर्ष होगी और कल्कि अवतार की लीला क्रमशः 23 वर्ष तक प्रकट होगी (यह संख्या वर्तमान राजा गजपति श्री दिव्यसिंह देव से गिनी जाएगी)। 'कली बयालीस में है'-

10 सिर में ब्याज तीन गुना बढ़ जाएगा.
ग्यारह अंक वज्र से पिघल जायेंगे।
सुनिए आखिरी बार क्या हुआ था.
अर्जुन ने कहा यह अंतिम सुख है। ।

दशरथ के चार पुत्र (राम, लक्ष्मण, भरत और सतेघन) यदि चारों के सिर पर तीन हैं तो संख्या (4) होगी, अर्थात 4:4:4=64। चूँकि बिजली अंक में संख्या उलट गई है, इसलिए 64 स्थानों पर यह 46 होगी। उन 46 में से 11

हालाँकि, शांघड़ के जलयुक्त 'भविष्य पुराण' में कलियुग काल की अवधि पांच हजार वर्ष आंकी गई है। वह लिख रहा है~~~~कीव
में एक नदी में बारिश हो रही है। क्यौ ई में 5000 वर्ष का आनंद। ।।।
(12 अध्याय)।

9. इसका मतलब है 19+29+52 (134) =
100,200 और इस संख्या में एक सौ जोड़ने पर 2000

ईसा मसीह होंगे। हदीदास के मुताबिक ये सही समय है. और यदि आप 2000 में 13 जोड़ें और सेतु में 14 जोड़ें, तो यह 1989 ईस्वी होगा,
जिसका अर्थ है कि कल्कि तब तक अपना रूप प्रकट कर देगा। हालाँकि, आयरिश शासन के दौरान रहने वाले महात्मा हदीदास ने संकेतों का श्रेय ईसा मसीह के वर्ष को दिया।

को छोड़कर 35 जीवित हैं। इन 35 में 5 दायीं ओर और 3 बायीं ओर हैं। अत: अच्युतानंद ने दक्षिणी भाग में 5 के प्रतीक में 5 हजार वर्ष समझने का संकेत दिया है। उस समय यानि 5000 वर्षों के भोग के बाद केलि का अंत समय आने की भविष्यवाणी की गई है।

'कल्किकल्प' में भी ऐसी ही जानकारी दी गई है। अच्युतानंद ने भगवान के संगीत के अंतिम काल के बारे में एक विचार दिया और कहा - —

बनवसु में घने मौसम शामिल थे। इन नंबरों के साथ खेलें.

यहां 5 (पंचबाण) का अर्थ है तीर, 8 (अस्तवसु) का अर्थ है बसु, 4 (प्रस्कर, अबर्ष, सम्बर्ग और द्रोण) का अर्थ है और 6 का अर्थ है ऋतु (ग्रीष्म, वर्षा, शरद ऋतु, हेमन्त्र, शीत और वसंत) और संख्या 23 होगी। ऐसा माना जाता है कि चूंकि अधुना श्री दिब्यसिंहदेव का 16वां नंबर गिर चुका है, इसलिए उनका 23वां नंबर 1989-90 ई. में होगा और उस समय नर का गाना सामने आएगा।

यहां एक और सवाल उठता है. संख्या गिनने के मामले में गजपति के वर्तमान राजा को बिटार क्यों ले जाया जा रहा है, इसका स्पष्ट विवरण अच्युतानंद की 'आदि संहिता' में मिलता है। इसमें उन्होंने लिखा-

यह गौरवशाली युग है । अल्प जीवन प्रत्याशा ॥
सारे पाप नष्ट हो । जायेंगे. पाँच हजार सुख होंगे ॥

o o o

श्री दिब्यासिंह नाम रये । ऐ युग उत्ते से उदय सुंदर ॥

o o o

कुमार मो बच्चन । वह 19वीं सदी में ॥
त्रिपु में उल्कापात होगा । दुनिया भर में घूमेंगे ॥

o o o

रुडु बाईस अंकों में । (1) ॥

1. पंचसखा के 'परद्ध' में कहा गया है कि पन्द्रह दिन के बाद नगर के पूर्व की ओर समुद्र आ जायेगा।

'जब पन्द्रह चले जायेंगे तो सत्रह आ जायेंगे। समुद्र पूर्व की ओर से आएगा।' संदर्भ यहाँ संकेतित किया जा सकता है कि इसी वर्ष, अर्थात् 1984 ई.। 23 अक्टूबर की मध्यरात्रि में, वर्ष 1984-85 के लिए ओडिशा कोहेनूर प्रेस रजिस्टर में भारी बारिश और बाढ़ की सूचना दी गई थी।

उत्तराखंड के गजपति के अंतिम काल में श्री दिव्यसिंहदेव के आगमन के प्रमाणों पर कुछ लोगों का संदेह होना स्वाभाविक है। क्योंकि वर्तमान गजपति सहित अब तक चार दिव्यसिंह देव राजा बन चुके हैं। इसी बजह से मन में डर है कि क्या ये वही दिब्यसिंह देव हैं जिन्हें इस युग का आखिरी राजा कहा जाता है? इस संबंध में, जगन्नाथ दास की 'कलीमालिका' का विवरण उल्लेखनीय है। यह संकेत मिलता है कि यह दिब्यसिंह देव (चौथा) क्याल युग काल के अंत में निवास कर रहा था, इस तथ्य के कारण कि उसे वहां दफनाया गया था। जगन्नाथ दास ने कहा था——

राजा से पुरुचोत्तम देव. वहाँ से उनतीसवाँ
राजा होगा। पन्द्रह से सत्रह का
आंकड़ा. नमक का बर्तन आने से पहले. ।

उपरोक्त विवरण को ध्यान में रखते हुए, हम देखते हैं कि सूर्य वंश के राजा पुरकुट्टम देव का उत्तराधिकारी उनका पुत्र प्रदापुद्र देव था और प्रतापरुद्र देव का उत्तराधिकारी उनका अंतिम पुत्र चंद्रप्रताप था। यह सच है कि गोटिंडा विद्याधर ने बाद में साजिश रची और ओडिशा के गजपति सिंहासन को सुशोभित किया, लेकिन 1568 ई. में गोहिरातिकिरी में तेलंगा मुकुंददेव की हत्या के बाद, भोई वंश के संस्थापक, रामचंद्रदेव सिंहासन पर बैठे और चा से ठाकुर राजा माने गए। तदिया के पुत्र अधूना से उन्तीस (1) राजा बनाये गये हैं। अतः, जगन्नाथ दास की 'कलिमलिका' के अनुसार, यह चौथा दिव्यसिंहदेव कलियुग का अंतिम राजा है (2)।

1. ये उन्नीस राजा थे पुरुचोत्तमदेव, नरसिंहदेव, बलभद्रदेव, गंगाधरदेव, मुकुंददेब (13वां), विब्यसिंहदेव (प्रथम), हरे कृष्णदेव, गोपीनाथ-देव, रामचन्द्रदेव (द्वितीय), बीरकिशोरदेव (प्रथम), दिव्यसिंह-देव (द्वितीय), मुकुंददेव (द्वितीय), रामचन्द्रदेव (तीसरा), बीरकिशोरदेव (द्वितीय), दिव्यसिंहदेव (तीसरा), मुकुंददेव (तीसरा), राम। चंद्रदेव (चौथा), बीरकिशोर - देव (तीसरा) और दिव्यसिंहदेव (चौथा)।

9. दिव्यसिंहदेव के समय सतयुग होगा और वह बाल्यावस्था में ही राजा बनेंगे लाभ कमाने का कार्य निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट

है। विव्या केशरी राजा होंगे. तब सतयुग होगा. ।
(अमर जुमर संहिता, 14 ए)

कल्कि अवतार की जन्मस्थली

पुराणकारों ने कल्कि अवतार के बारे में जो कहा है उसके अनुसार उक्त युग के अंत में भगवान संबल नामक गांव के विष्णुयशा नामक ब्राह्मण के घर में जन्म लेंगे। इस संबंध में श्रीमद्भागवत ने कहा है-

कल्कि प्रादुर्भिष्टि ।
जेएफ (1)

विष्णु पुराण भी भागवत के इस कथन का समर्थन करता है। उदाहरण के लिए, भागवत बासुदेवस्यश्च शम्बलग्राम प्रधान ॥
ब्राह्मणस्य विष्णुयशा रूपे ब्रह्ममयस्यत् रूपिणे। घर में आठ प्रकार की समन्वित कला होती है।

महर्षि व्यासदेव ने संस्कृत महाभारत के बाणप्रवा में जो विवरण दिया है वह लगभग उपरोक्त मत के समान ही है। वे लिखते हैं-

कल्कि विष्णुयशनं द्वितीय कला प्रतोदिता।॥
उत्स्यते महाबीर्यो महाबुद्धि मगा ॥
सम्भत् शम्बल ग्रामे ब्राह्मण बस्ते शुभे 1(9)

इसके अलावा 'देवी भागवत' में विष्णुयशा का नाम गरुड़ लिखा है संबल नामक गाँव का वर्णन पुराणों में मिलता है। ओडिशा संतभागरों ने अपने मलिकाओं में संबल नामक इस गांव में विष्णुयशा के घर में भगवान कल्कि के प्रकट होने का उल्लेख किया है। महापुरु अच्युतानन्द अपने 'कल्पकल्प' के 7वें खंड में लिखते हैं-

उन्होंने विष्णु शर्मा के घर भगवान के रूप में जन्म लिया। गया में संबलनगर हरिहर चद्र ए

बूढ़ा लड़का राजा रहा होगा. गुप्त रूप से स्तन हिलेंगे। ।
(कल्किकल्प; अच्युतानंद दास, तीसरा पाताल) हालाँकि, अतीत का बूढ़ा विव्यसिंहदेव अब एक लड़का है और वह कलियुग का सर्वोच्च राजा है।

१. श्रीमद्भागवत, 12वीं शताब्दी, दूसरा संस्करण, श्लोक 18।

९. महाभारत बालापर्व, 161 ई.

यह बात उनके एक अन्य 'तिरजन्म शरण' में भी कही गई है। उदाहरण के लिए,

संबल गांव में विष्णुयशा के घर भगवान का जन्म होगा।
भगवान स्वयं श्रीजाजंग में अच्छे धर्म का प्रचार करेंगे (1)

की गुरुभक्ति गीता भी इसी मत का समर्थन करती है- चक्रधर गया में संबल नगर विष्णु शर्मा के घर तपस्या करेंगे। ॥

यही बात उन्होंने एक अन्य अप्रकाशित श्रृंखला 'सदर जमा तकदा मदन' में भी कही -

यदि हम योग निद्रा तोड़ेंगे तो हमारा पुनर्जन्म उसी स्थिति में होगा।
मैं पंचशखा के साथ अग्निहोत्र को पुनः बीजशर्मा के घर ले जाऊँगा।

मजीबाकरों ने इस संसाधन को प्रजनन स्थल के रूप में स्वीकार किया है। जाजपुर. इसे शास्त्रों में हरिहा के क्षेत्र और नवगया की सीट के रूप में वर्णित किया गया है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार, एक बार कार्तिकेय ने भगवान शिव के भक्त नंदिकेश्वर से पूछा कि भगवान शिव और शक्ति अया देवी का अंतिम क्षेत्र भारत में कहाँ स्थित है, और उन्होंने बताया कि यह 'विरजा क्षेत्र' था। इस क्षेत्र का नाम 'अविमुक्त क्षेत्र' इसलिए है क्योंकि यहां 'ईशानेश्वर' के रूप में हारा और 'बिरजा' के रूप में गौरी एक साथ रहते हैं। इसके बारे में कहा जाता है-

यत्र पुण्यतमं क्षेत्रं चंद्र देव पिनाकदुक्।
इसकी देवी गौरी चंद्रदेबो जनार्दन हैं। (2)

दूसरे शब्दों में, स्वयं पिनाकपाणि शिव, देवी गौरी और देव जनार्दन ने उस पवित्र क्षेत्र को सजाया था।

कपिल संहिता में विरजापीठ पर नवगया का क्षेत्र होने का आरोप लगाया गया है। उल्लेख मिलता है कि इस नविकुप यानी नविगया के पास पितृभक्तों के पुत्र स्नान करके संयतेंद्रय हो जाते हैं और पिंडदान करते हैं।

जस्टिन का
आत्म-अनुशासन ।

---

1. उर्मा प्रेस, अरविंद नगर, कटक-10 द्वारा प्रकाशित।

9. ब्रह्माण्ड विज्ञान, प्रथम डॉ. श्लोक 37

नयनथ त्रिस्पत्कर्ता कुलजन
स्वाकियन द्वारा पोस्ट किया गया 1 (१)

इन कारणों से, यानी संबल गांव के साथ नवगया और हरिहर क्षेत्र की जानकारी के कारण, इसे जाजपुर के रूप में स्वीकार करना उचित लगता है। शायद इसी कारण से विभिन्न मीडिया में जाजपुर को कल्कि के जन्मस्थान के रूप में चिह्नित किया गया है।

बलराम दास का भविष्य

सुनो, लड़की ने तुमसे कहा । जहां हम पैदा हुए थे.।
मैं आपको बताता हूँ कि जाजपुर एक गाँव है
वहां ब्राह्मण का घर है . उसका नाम विद्रा पांडा है ।।
उसके परिवार का नाम जानें । अति पद्मावती नाम ।।
(अध्याय 5)

विरजस्तु महादेवी विजयास्त्र भैरवा। (स्टो, 51, वंशावली)
यशोवंत दास की रानी ।।

येथ के बीच वह रहस्य . लवी मंडल का नाम. . गोपी ।
वह अपने शरीर से खेलेगा गोपाल भक्ति को जीना। ।
(अध्याय 1)।

अच्युतानंद के शिक्षक 1

यज्ञ में भगवान का जन्म होगा । ब्राह्मण के रूप में जन्म लूंगा ।।
(खंड 3, अध्याय 9)

अच्युतानन्द का विज्ञानकल्पला

महाप्रभु का जन्म जाजना में होगा।
वह गरुड़ को अपने साथ लेकर संगीत रचना करेगा
(अध्याय 6)।

---

1. हालाँकि, कपिला
संहिता 6-4, 'कुराश चूड़ामणि' में नवदेश के रूप में बिरजाक्षेत्र की प्रमुख स्वीकृति है। वहाँ यह है - 'उत्कले नवदेशघानि बिरजक्षेत्र मुचते।'

अच्युतानंद का कल्पिककल्प

बिरजा मंडल क्षीर सिंधु के दक्षिण में है। इसे कमालपुर कहा जाता है
(1) नाम ही संसाधन है। । (सातवीं मंजिल)

बालक अनंत की चिंबक मलिका ।

बैरंग सुनो, वह प्रभु के अवतार का गुण है।
अनंत मिश्र खुमेश का जन्म श्री विरोला से होगा।।
(अध्याय 1)

जगन्नाथ दास की कविताएँ ।

हम उनतीस में पैदा हुए थे। मेरा जन्म बिरजा नगर में होगा. ।
हम पद्मावती के गर्भ से जन्म लेंगे. आइए खडगिरि पर ध्यान में बैठें। ।
(Cy. No.355 उड़ीसा राज्य संग्रहालय)

शवल्दा दास (सालबेग) का बलिदान।

जाजननगर के नाम से जानते हैं . फिर से बेद्रानी नदी के किनारे। ।
बिरजा धाम के पास . मंदिर के पूर्वी भाग में ।
बीपीआर मिश्रा ब्राह्मण का घर । श्रीधा का जन्म हुआ है। ।
(अध्याय 1)

बैकृष्ण दास का जीवन ।।

मैं गोदावरी रोड पर हूं. विष्णु शर्मा के घर जन्म हुआ
o o o
बेइट्रानी उत्तरी चिर में है। हमारा जन्म वहीं होगा. ।
नाम है शाश्वत मिश्रा . तूफ़ानी सर्दी ।।
अत्यंत गरीब । बिना खाना मिले
भीख मांगते थे । वह गर्भ का पोषण करता है। ।
उसने घर का काम किया होगा कब्रिस्तान एच पर स्थित है
(अध्याय दो)

---

1. जाजपुर से कुछ ही दूरी पर 'कमालपुर' नाम का एक गाँव है। उस गांव के पास की जगह का नाम संबल है।

और पंचसखा के 'पररबा' से कहा जाता है कि यह संबल गांव संभवतः जाजपुर के पास 'महल' गांव के किनारे स्थित है।

सारंग दास का चौतिसा ॥

मेरा जन्म जाजपुर में होगा. चंडी
का निर्धारण दक्षिण में होगा। हे ।
ऋषियों, जितनी देवियाँ। वह जन्म
लेगा और दक्षिण की ओर जायेगा। ।

इसका कारण क्या है?॥

जब हम नदी छोड़ते हैं. मैं जाजपुर
जाऊँगा और वहीं रहूँगा। मैं
यह करूंगा। आप कुछ भी कहें, हम सुनेंगे.

विभिन्न शृंखलाओं में बालक के माता-पिता का नाम प्रतीकात्मक अर्थ में प्रयोग किया जाता है। कुछ ने इसे वासुदेव और यशोवंती के रूप में स्वीकार किया है, कुछ ने अनंतमिश्र और भगवती के रूप में, कुछ ने बिप्र पांडा और पद्मावती के रूप में और कुछ ने अनंत मिश्र और पद्मावती के रूप में। लेकिन कई स्थानों पर कल्किरूपी भगवान के माता-पिता का उल्लेख अनंत मिश्र और पद्मावती के रूप में किया गया है। महापुरु अच्युतानंद ने अपनी 'ब्रह्मटिका' में लगभग सभी छुपे हुए तथ्यों को उजागर कर दिया है। इस संबंध में उन्होंने अपने प्रिय शिष्य रामचन्द्र से कहा-

हरसे सुनकर अच्युत भक्त राम कहते हैं
किली में भगवान कलंकी राम अवतरित होंगे। ।
वह नीलगिरि छोड़कर संबल गांव में जन्म
लेंगे। तुम महेंद्र पर्वत में छिपकर रह सकोगे।(1) माता का
नाम पद्मावती, पिता का नाम अनंत है।
भगवान शंख चक्र के चिन्ह के साथ उठेंगे। घर के उत्तर
दिशा में एक सुंदर कदंब का पेड़ है। दक्षिण
में पिप्पल (2) गोलाकार एवं सीधा है। ।

1. कल्कि पुराण (सं.) में वर्णित है कि क्याल युग के अंत में जब भगवान कल्कि अवतार लेंगे तो वे गंजम के महेंद्र पर्वत पर जायेंगे और चिरंजीवी परशुराम से समस्त ब्रह्मांड विद्या सीखेंगे और तलवार प्राप्त करेंगे।

9. रथ वृक्ष

उदय भक्त भगवान उदय को पहचान लेंगे।।
हमने संकेत समझाते हुए कहा, इसे अपने दिमाग में रखो. ।

o o o

भगवान का जन्म दूसरे माह बैसाख में होगा। भक्त
की हित जन्मी का नाम कल्कि होगा। ।
कर्क राशि के पंचम में बहुत कुछ होगा।
शनि के बाद बृहस्पति चतुर्थ भाव ।
में है। रबी चंद्रमा और मंगल उच्च रहेंगे। और
ग्रह शुभ स्थान पर होगा और दृष्टि देगा.।

इस संदर्भ में, महापुरु अच्युतानंद ने संकेत दिया है कि बलभद्र का जन्म कर्नाटक के राजा 'पद्मकेसर' की प्रजा बोलाथिबा 'गोपीनाथ छत्र' द्वारा उनकी पत्नी उमादेवी के गर्भ से, 'इटुआ' नामक स्थान पर क्षत्रिय कुल संहिता 'रोज' नाम की सुभद्रा देवी (योगमाया या आदिशेक्ति) के जन्म से होगा।

जयपुर क्यों?

जाजपुर (इसका वास्तविक नाम जाजीपुर है) को कई ग्रंथों में सत्ता की एक प्रमुख और सबसे पुरानी सीट के रूप में मान्यता दी गई है। संस्कृत महाभारत के वनपर्व (अध्याय 85 और 14) में पुण्यतोय बैतरणी तीर्थ और बिरजा तीर्थ का बर्णन है। इस संबंध में ब्राह्मण पुराण और वायु पुराण में काफी चर्चा की गई है। कपिल संहिता के चौदहवें और पंद्रहवें श्लोक में कहा गया है, पार्वती क्षेत्र भारत के क्षेत्रों में प्रथम है और इस क्षेत्र में भक्तों के लाभ के लिए ब्रह्मरूपदीन पार्वती ने खुद को बिरजा नाम से स्थापित किया है। इसी प्रकार, आचार्य प्रबोधचंद्र बागची द्वारा संपादित केश पोथी में 'जजपुर पट्टन' और 'जजनगरी' शब्द का प्रयोग किया गया है और इस क्षेत्र को कभी प्राचीन शक्तिपीठ थुवा कहा जाता था।

मूर्तिकारों के अनुसार दो भुजाओं वाली दुर्गा प्रतिमा शक्ति पूजा की दृष्टि से सबसे प्राचीन है और ऐसी प्रतिमाएं भारत में दुर्लभ हैं। जाजपुर की अधिष्ठात्री देवी बिरजा दो भागों में बंटी हुई है और ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की है।

ऐतिहासिक रामप्रसाद चंद ने तय किया है. तिवत्य ग्रंथ 'पर सम जन जय' में उल्लेख है कि अपने पिछले जन्मों में से एक में, बुद्ध ने अपने शिष्यों को भविष्यवाणी की थी कि वह पद्मसंभव नाम के तहत जाजपुर (बिरजी क्षेत्र में) में पैदा होंगे। चूँकि कल्कि दशक के दौरान बुद्ध के अगले अवतार थे और जाजपुर में उनके जन्म का उल्लेख मलिका में किया गया है, तिवत्य ग्रंथ में इस घटना के साथ कई समानताएँ हैं। 8वीं शताब्दी के आसपास सोमसुल्ही के राजा शुभदकर देव ने इस चौकी पर एक शुभ स्तंभ बनवाया था। नौवीं शताब्दी में यतिकेशरी द्वारा जाजपुर में दस हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ कराने का अभिलेख मिलता है। कहा जाता है कि उस यज्ञ में इतने जानवरों की बलि दी गई थी कि बैतरणी नदी का पानी रक्त-रंजित हो गया और कुछ लोगों ने पानी पी लिया और उन्हें नशा होने लगा। नदी के पानी का 'मध' में बदलना संभव नहीं होता अगर यहां सौना प्रणाली की प्रमुख पीठ के रूप में देवी की प्रधानता न होती। अत: उक्त देवी बिरजा की यह पीठ युगों-युगों से भक्तों के सर्वोच्च तीर्थ के रूप में पूजित एवं प्रतिष्ठित रही है। जिस प्रकार शक्ति के बिना शिव में कोई अंतर नहीं है, योगमाया या प्रकृति की मौलिक शक्ति के संकेत के बिना, परमब्रह्म के संगीत का विकास पूरी तरह से असंभव लगता है। इस दृष्टि से इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है कि सैंथबर्ग के विचार में बिरजा देवी का आश्रय लेकर जाजपुर के सबसे प्राचीन शक्तिपीठ में भगवान लीलामय का कल्कि अवतार बनाया जाएगा।

स्वामित्व की एक संक्षिप्त चर्चा।

लगभग सभी संतसाधकों ने कलियुग के पतन और आत्मज्ञान की प्रक्रिया को रोकने के लिए धर्म की स्थापना के लिए एक अवतरित शक्ति के उद्भव का दृढ़ता से विचार रखा है। इन आत्मविश्वासी ऋषियों की भविष्यवाणियाँ अलग-अलग समय और स्थानों पर प्रकट हुई हैं। यद्यपि विशेष स्थानों पर वर्णन एवं प्रस्तुतीकरण में भिन्नता है, तथापि मुख्य 'सत्य' स्थिर एवं अपरिवर्तनशील है। संथमंसा के सार्वभौमवादी विचार, अप्रभावित धर्म और सामाजिक जीवन ने आज भविष्य के विशिष्ट स्वरूप को स्वतंत्र और सहज ढंग से व्यक्त किया है।

सृजन की परंपरा और विनाश की प्रक्रिया के विकास के साथ योगाचार और ज्ञान का मिश्रण और आंतरिक रचना ने प्रज्ञाबोध के माध्यम से अनुभव का एक अलग रूप दिया है! मिस्तबुर्त्ता चार्यगीतिका और शैव-पार्श्वपत-कौल, पिंडसमिति और कायाकल्प साधना की सुसंगत अभिव्यक्ति रूढ़िवादी संत आंदोलन के प्रमुख पुरालेख हैं जिनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति असंख्य खंडों के निर्माण में हुई है। सुदूर भविष्य के परिवर्तन का स्पष्ट वर्णन और उस समय के लोगों के चरित्र का स्पष्ट वर्णन मलिका साहित्य की आत्मा है, विशेषकर महत्वपूर्ण समाचारों के माध्यम से। मलिका साहित्य अध्यात्मवाद और आत्म-ज्ञान पर आधारित है (1)। यह सचमुच एक शंकित एवं शोकाकुल मानव आत्मा की मृत जीवनी है।

अगर आप इन कहानियों को थोड़ा और करीब से देखें तो संभव है कि लेखकों का इरादा समाज को अनचाही भविष्यवाणियों से भर देना नहीं था। विनाश और विध्वंस का सन्देश सुनकर वे समाज को नये ढंग से बनाने के लिए उत्सुक हो उठे। इसीलिए वे कई भविष्यवाणियों का प्रचार करने गए कि जब यह पाप से भरा साम्राज्य खुल जाएगा, कि यदि आप धर्म में दृढ़ हैं, तो आने वाला अधर्म कुछ भी नहीं कर पाएगा। कियुगा की कुंडली के रूप में

---

1. पुरुष और महिला । के दो रूप हैं। वह भगवान ।
सोच और समझ । आपके घर में है.

o o o

हम ज्ञान को उचित । पर उठायेंगे। पेड़ ।
स्थान पर रोपेंगे, और हम हिलेगा तो टिड्डियां ।
उसे उचित स्थान उड़ जाएंगी और हम ।

o o o

को ऐसे बांधेंगे कि पेड़ हिलेगा नहीं. ॥

o o o

शुआ के पैर चू पुट पिश हैं। आपके दिल से एक संदेश जारी किया जाएगा ॥

(हरबोधनी, खंड 3, खंड 6, अच्युतानंद)

9. जो लोग विष्णु के भक्त हैं।
उन लोगों की सुनो जो इस संसार ।
के जल में रहते हैं। वे बीज होंगे. (हदीदास मलिका)

'हरे राम कृष्ण' का जाप और अखण्ड नामिर्तन का जाप आज का कर्तव्य होना चाहिए। (1) संग, आचरण की पवित्रता, कर्तव्यों का अनुशासित पालन, दान की महत्वाकांक्षा और गृहस्थ में रहकर भगवान के प्रति अटूट भक्ति और प्रेम ही कलियुग के संकट से मुक्ति का एकमात्र उपाय है।

यहां यह बताना अप्रासंगिक नहीं होगा कि उत्तरा के पंचशगण अवतारी ने जहां जगन्नाथ को ब्रह्मांड के गुरुत्वाकर्षण के केंद्र के रूप में स्वीकार किया, वहीं उन्होंने जगन्नाथ के क्षेत्र को संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रतिबिंब के रूप में कल्पना की और इस क्षेत्र के भीतर ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के सूक्ष्म और सूक्ष्म प्रवाह को दर्पण में देखा। हमें संत साहित्य में सेठो के लिए मलिका की विभिन्न घटनाओं के विवरण की जानकारी मिलती है, विशेष रूप से बिरजा के क्षेत्र से शुरू होकर, उत्तरा में सबसे पुराना शक्तिपीठ, और पुरुष क्षेत्र में विलय।(2)

ऋषियों की यह भी मान्यता है कि वैदिक सनातन धर्म अपौरूषेय शब्दों का प्रमाण है और सभी पुराण व पुराण वेदरूपी कल्प वृक्ष की शाखाएँ हैं। धर्मग्रंथों में प्रस्तुत विभिन्न तथ्य और विवरण दिव्यदर्शियों, ।। योगसिद्धों और पुराणबुद्धियों के प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन या प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन हैं। भ्रष्ट मानव मस्तिष्क में पूर्ण सत्य को प्रतिबिंबित करने के लिए परिस्थितिजन्य साक्ष्य का रूपक अपनाया जाता है। ओडिशा में वर्तमान सभी मलिका साहित्य इन तीन साक्ष्यों पर आधारित हैं।

यद्यपि सृजन और विनाश ब्रह्मांड के प्राकृतिक नियम हैं, संतों और संतों ने हमेशा संरक्षक के रूप में व्यक्ति और समाज के कल्याण के बारे में सोचा है। इस न्याय में दुष्ट बालक को माता-पिता या अभिभावकों के गलत कार्यों से दूर रहने की सलाह देना, साथ ही समाज की सद्भावना, विश्व के कल्याण की भावना रखना एक अच्छा विचार है। निधारा भंग या पथरी ।।

---

1. 'कालीसंतरानोपनिषद' में हरेराम और हरेकृष्ण महामंत्र पर जोर दिया गया ।है, 'श्रीमद्भागवत महापुराणम' में कृष्ण नाम कीर्तन को एकमात्र महान गुण और कलि की सभी बुराइयों से बाहर निकलने का रास्ता माना गया है।

9. नंदा से जाजपुर. अब और तब के बीच का कोई खेल. पुरुहुत्तम से महामेरु. ऐसा कहा। जाता है कि वह मौलिक है। ।
(कलाकृति: अच्युतानंद, 8वीं मंजिल)

यात्री को मार्गदर्शन की निरंतर आवश्यकता रहती है। इसलिए जीवन के पथ पर भटकते पथिक, तूफ़ानी तूफ़ान में दिशाहीन नाविक के लिए एक अदृश्य संकेत निरंतर सक्रिय रहता है। जब व्यक्ति भ्रष्ट अवचेतन मन में इन अस्सी निर्देशों को महसूस करने में असमर्थ होता है तो चिन्मय शक्ति - प्रकाश दिव्यद्रष्टा। जनचेतना को सही ढंग से संचालित करने के लिए आवश्यक मार्ग संत स्वतः ही बता देते हैं। उस दृष्टिकोण से देखने पर, कोई भी विश्वास नहीं कर सकता कि मलिका अबांतर या रहस्यवाद पर ध्यान केंद्रित करती है।

युगों के बीच संबंध पर विश्व के विचारकों के विचार

आधुनिक समाज में, विज्ञान में काफी सुधार होने के बावजूद मन की शांति नहीं है। आज पूरी दुनिया एक बड़े संकट से जूझ रही है. जिस तरह हर कोई स्वार्थ में आगे बढ़ रहा है, उसी तरह चाय देखकर भविष्य की खुशियों का सपना अचानक मन से जाग उठता है। रिश्वतखोरी, झूठ, कालाबाजारी, गैरजिम्मेदारी और काम के प्रति उपेक्षा आदि ने हमारे समाज को अक्षम बना दिया है। हर तरफ ईर्ष्या, अविश्वास और धोखे की तस्वीर है. व्यक्तियों के बीच, गांवों के बीच, नस्लों के बीच और राष्ट्रों के बीच हिंसा, नफरत, घृणा और संघर्ष है। मौत के स्रोत और युद्ध के हथियार एक देश से दूसरे देश में जा रहे हैं। जहां रूस परमाणु ऊर्जा पर शोध कर रहा है, वहीं अमेरिका एक ऐसे उपग्रह की तलाश में है जिसके एक बम से पृथ्वी मुट्ठी भर राख में तब्दील हो जाए। देश पेशेवर वैज्ञानिकों की मौत के लिए मंच तैयार करने में व्यस्त है। देश, जाति, वर्ग और सम्प्रदाय की ब्रह्मा व्यक्ति को क्लब और पुरुषहीन बना देती है। एकशाद्राबाद की कराला चायात 2 जो कुछ भी सत्य, शिव और सुंदर है वह खो गया है। आधुनिक 13-जीवन धर्म से रहित है और केवल पशु कल्याण से ही संचालित होता है। आज की प्लस भावना में धर्म, न्याय और मानवता जैसी चीजें मौजूद हैं। आज का सिद्धांत फिर से है ("झूठ बोलना पाप है लेकिन अपराध नहीं") (1).

1. कवि ब्रजनाथ रथ ने अपनी कविता 'दिसंबर ट्वेंटी-फाइव' में वर्तमान मानदंडों की वास्तविक प्रकृति का विश्लेषण

किया है - चर्च प्रार्थना और एआई पूजा का झूठ।
एआई खोई हुई आत्मा के लिए एक भयानक मुक्ति है।

विदेशी मामलों के अलावा अगर हम अपने देश के बारे में भी सोचते हैं तो निराश हो जाते हैं। सीमांत प्रांत सदैव शत्रुओं से आतंकित रहते हैं, पंजाब और असम की समस्याओं ने अब बहुत जटिल स्थिति पैदा कर दी है और राज्य के विभिन्न भागों में आंतरिक क्रांतियाँ हो गई हैं, जिससे देश की समृद्धि पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। दरअसल, 20वीं सदी निराशा, भ्रम, उदासी, । असमंजस और अविश्वास की सदी है। इसकी पृष्ठभूमि पाप, दानवता, क्रूरता, पीड़ा और अपराध है। आज विश्व में आशा, आश्वासन और ईमानदारी की रोशनी बुझ गयी है। समाजवादियों की मानसिक एवं आध्यात्मिक अव्यवस्था ने आज के मनुष्य का गला घोंट दिया है तथा सम्पूर्ण वातावरण को विषाक्त कर दिया है। अतः आज का कवि इस सृष्टि के विनाश की कामना करता है और नये सूर्योदय की कल्पना करता है।(1) डब्ल्यू.बी. येट्स (1888-1965) की कविताएँ 'ए विज़न' और 'द सेकेंड कमिंग' इस अमूर्त समाज की हताश तस्वीर को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। वो लिख रहा है-

'चीजे अलग हो जाती है; केंद्र_रख नहीं सकता;
दुनिया में केवल अराजकता फैली हुई है। रक्त मंद हो गया
है, ज्वार ढीला हो गया है, और हर जगह मासूमियत का
समारोह डूब गया है।" (दूसरा आगमन)

एडलस हक्सले द ब्रेव न्यू वर्ल्ड' 16 जॉर्ज ऑरवेल का उपन्यास 1984 इस पतनशील समाज की पीड़ा और जॉर्ज के जीवन का प्रतिबिंब दर्शाता है। हिब्रू कैलेंडर में संख्या 5744 का प्रतीक इस वर्ष 1984 है, जिसे 'तस्माद' के रूप में दर्शाया गया है, जिसका अर्थ है विनाश का युग।

इसमें उन्होंने कहा- "तब इतना बड़ा क्लेश होगा, जैसा जगत के आरंभ से लेकर आज तक न हुआ, न कभी होगा...।"

पी. कवि यदुनाथ दास महापात्र के शब्दों में-

यह सृष्टि का अंत है
फिर हो सकता है एक नया सूर्योदय,
यही हमारी इच्छा ।५
है, वर्तमान सदी अपना संतुलन खो चुकी है। (संपूर्ण पृथ्वी)

9. "टेलीग्राफ" रविवार 25 दिसम्बर 1983.

ऐसा न तो हुआ है और न ही दोबारा होगा. सिख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक ने भविष्यवाणी की है कि 20वीं शताब्दी । में मुसलमानों और ईसाई धर्म का विनाश हो जाएगा। (1) सिख धर्मग्रंथ 'सौसाखी' में कहा गया है कि 1998 में विश्व युद्ध होगा। उर हजरत महदी प्रकट होंगे ~~~ अर्थात, मुहम्मद चौदहवीं शताब्दी के दूसरे तीसरे में प्रकट होंगे। यह समय 1980 के मार्गशीर्ष माह के प्रथम दिन को बीत चुका है। उसके बाद अनेक विपत्तियाँ आएंगी तथा एक देवदूत के प्रकट होने की भी सूचना है।

पश्चिम बंगाल के जगदी शावरानंद ने 'कल्कि कम्स' किताब में कहा है कि कल्कि मैन 1985 तक सामने आएगा। है। नूह बेकर 1979 ई. में उन्होंने लंदन में स्वामी स्तूप का उद्घाटन किया और विश्व के भावी संकट का संकेत दिया। डेविड बेकर ने अपनी पुस्तक 'द अनफोल्डिंग ऑफ द एजेस' में विश्व की स्थिति पर चर्चा की है और उल्लेख किया है कि दूसरा दिन आ रहा

मदर सिम्पसन (जन्म 1488 ई. में इंग्लैंड के यॉर्कशायर में) ने भविष्यवाणी की थी कि 1991 में पूरी दुनिया को विनाश का सामना । करना पड़ेगा। उसकी शराब में-

> उन्नीस सौ निन्यानबे में
> विश्व का अंत हो जायेगा।

डॉ. एस.जी. ब्राउन ने अपनी पुस्तक "ह्यूमन इकोलॉजी" में घोषणा की है कि अगले तीस वर्ष मानव जाति के लिए एक भयानक समय होगा, जिसके दौरान भोजन की कमी, प्राकृतिक ईंधन की कमी, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राजनीतिक विचारधाराओं का टकराव, गुप्त घातक मिसाइलों का उपयोग, परमाणु विस्फोट और आत्म-संयम की कमी होगी। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पॉल नीलिक के अनुसार, 2000 ई. तक।

---

१. जब अबे संवत बीसा। न कोई मुसलमान रहा, न कोई शिष्य।।

9. चौरानवे साल का, लेकिन ज्ञान कोने । के कोने में, जंगल के किनारे के करीब है। यदि (52 218)

ऐसी सम्भावना है कि पृथ्वी पर सारा भोजन ख़त्म हो जायेगा। दार्शनिक एच.जी. वेल्स ने 'एट द एंड ऑफ द टेथर' पुस्तक में कहा है, 'दुनिया अपनी रस्सी के अंत पर है, हर उस चीज का अंत जिसे हम जीवन कहते हैं वह करीब है', जिसका अर्थ है कि दुनिया । रस्सी के अंत तक पहुंच गई है और जिसे हम भौतिक जीवन कहते हैं वह गायब होने वाला है। अरबी में लिखी गई किताबों 'मार्कस कोरान्जिल हज़रत ईशा' और 'मलबुबकतबुल क़ियामत' में शेखलू अकबर महीउद्दीन ने युग परिवर्तन का संकेत दिया था। ऐसा किया गया है। इसी तरह की भविष्यवाणियां सामने आई हैं। यहूदी धर्म और पारसी धर्म में। हजरत मसीह अलोहिस्लाम के ॥ अनुसार, रूस और अमेरिका के बीच विश्व युद्ध की संभावना है। (1) 1 फ्रांसीसी ज्योतिषी नॉस्टरडोम भी इस संबंध में सहमत हैं। फ्रांसीसी भाषा 1 में लिखी गई शाह किआ उल्लाबली साहब की भविष्यवाणी में कहा गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका तीसरे विश्व युद्ध में जर्मनी और रूस के खिलाफ नेतृत्व करेगा। हॉलैंड के पैगंबर जेरार्ड ने स्वीकार किया है कि वर्ष 2000 ईस्वी में भारत में एक देवता पैदा होंगे और शांति का संदेश देंगे और शांति का संदेश देंगे। सत्य। योगी अरविन्द के अनुसार भारत वर्ष में एक आध्यात्मिक व्यक्ति का आविर्भाव होगा और एक समय ऐसा आएगा जब आत्मा का अवतरण होगा। थियोसोफिकल सोसायटी की प्रमुख इतिहासकार मैडम ब्लावस्की का मानना है कि युग परिवर्तन आसन्न है। उनकी राय में, "हमें इंतजार करने के लिए ज्यादा समय नहीं है और हममें से कई लोग चक्र की नई सुबह के साक्षी बनेंगे।" (2) अमेरिका के एओबा एंडरसन और जीन डिक्सन, मिस्र के जॉर्ज बवेरी और हंगरी की श्रीमती बोरेस भारत में पैदा होने वाले महान व्यक्ति के बारे में लगभग सहमत हैं।

आचार्य रजनीश ने अमेरिका के ओरेगॉन में एक आश्रम बनाया और उसका नाम अपने नाम पर 'रजनीशपुरम' रखा। उनका मानना है कि "किसी मुस्लिम देश में परमाणु विध्वंस शुरू हो जाएगा।" (3) रूसी वैज्ञानिक ए. चेज़ोव्स्की ने कहा कि, अब से सूरज की तेज किरणों के कारण कई तरह की तबाही मचेगी। ऐसी एक चीज

---

१. डेली सोसायटी, टी. 17-10-80

२. गुप्त सिद्धांत, खंड। 1. पी-65

३. रविवार मार्च. 1983

अतीत में मैक्सिमा ने बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी थीं। ‌॥° इसलिए उन्हें डर था कि निकट भविष्य में टकराव की स्थिति पैदा हो सकती है. अपने मृत्यु संदेश में स्वामी विवेकानन्द ने क्याल युग के अंत का संकेत दिया था। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्था ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि कलियुग के 5,000 वर्ष समाप्त हो चुके हैं और धीरे-धीरे सतयुग का उदय हो रहा है। एच, पी. ब्लावास्की ने भी अपने गुप्त सिद्धांत में इस दृष्टिकोण को अपनाया।(2)

मथुरा की 'युगशक्ति' पत्रिका में प्रकाशित 'सौर विस्फोट और पृथ्वी की प्रतिक्रिया' शीर्षक लेख में 1983 के आसपास सौर धब्बों में वृद्धि । और उसके परिणामस्वरूप भयावह घटनाओं के घटित होने की जानकारी दी गई है। (3) ज्योतिषी बाराहमिहिर के अनुसार यदि सूर्य में कलंक बढ़ जाए तो महामारी और अकाल पड़ेगा। फ्रांसीसी वैज्ञानिक एबिटौडर मोरेल्स के अनुसार, जब धूल सूर्य पर संघनित होती है, तो यह पृथ्वी पर हानिकारक बादल लाती है और पृथ्वी पर चुंबकत्व के कारण इसका प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। इटली के पैड्रापियो, जर्मनी के हरकौस, फ्रांस के डॉ. कुल्बर्न और नास्त्रोदम, स्कॉटलैंड के कीरो और कनाडा के भावी वक्ता ई. 2000 के दशक के मध्य में, उन्होंने युग परिवर्तन का संकेत दिया। इस दौरान ऐसी मान्यताएं हैं कि विश्व युद्ध छिड़ जाएगा और बहुत से लोग मारे जाएंगे, पूरा विश्व एक सरकार के अधीन हो जाएगा और भारत में पैदा हुआ एक महान व्यक्ति दुनिया के लोगों को रास्ता दिखाएगा ॥ और सनातन धर्म की स्थापना करेगा। (4)

इ। ये सभी घटनाएँ 5000 वर्ष पहले घटित हुई थीं और प्रत्येक 500 वर्ष में समान रूप से दोहराई जाएंगी। विश्व नवीकरण नवम्बर 83, वो. पाँच नंबर। प्रधान संपादक-बी. के. जगदीस चंद्र.

2. वॉल्यूम. द्वितीय, पृ-93

३. से प्रकाशित। फ़रवरी 1981.

४. दैनिक लोग, 17-3-84

इन सबको ध्यान में रखने के बाद जो उपलब्ध होता है वह 1985 ई. से 2000 ई. तक का प्रतीत होता है। बीच में एक महान क्रांति होगी और सच्ची शांति की स्थापना होगी। कुछ लोगों के अनुसार 1986 तक यूरेनस यानि इंद्रग्रह वृश्चिक राशि में स्थित होने से किसी बड़े युद्ध की आशंका है। पश्चिमी ज्योतिष में 1980 से 2000 ई. तक। उसने विनाशकारी घटनाओं का भय पाल रखा है। दिल्ली के 'मौलानसाहा रफीउद्दीन' का मानना है कि युगान्तर का समय आ गया है। महापुरू हाजी महबूब काशिम बारबेल और कुरान का हवाला देते हुए लिखते हैं कि पृथ्वी पर आपदा के तीन स्तर होंगे और पहला 1980 और 1989 के बीच होगा, दूसरा 1989 से 1996। तक और दूसरा 1996 से 2000 ईस्वी तक होगा। होरस की दुनिया में कई बदलाव होंगे।

इतिहास के अनुसार एक युग या एक शताब्दी के अंत में विश्व में बड़े-बड़े युद्ध और राजनीतिक परिवर्तन होते हैं (2)। इस दृष्टि से यह स्वाभाविक है कि 19वीं सदी के बाद 20वीं सदी का आगमन युग परिवर्तन का संकेत है। इस संबंध में तिब्बत के लोबसांग रैम्प की राय प्रश्न करने योग्य है। उन्होंने कहा - "तो वर्ष 2000 से शुरू होकर, दुनिया में सुख होंगे और एक स्वर्ण युग का उदय होगा।" (3) आगरा के वातकबी दम सुरा दास "जाकर लिखते हैं-

---

१. विनाश या शांति, पृष्ठ-779.

9. इतिहास में यह सामान्य बात है कि महान युद्ध, विजय या राजनीतिक परिवर्तन एक युग को समाप्त कर देते हैं और एक नए युग की शुरुआत करते हैं या एक से दूसरे में परिवर्तन करते हैं, और इसलिए महाम्मेदन और ब्रिटिश ने भारत में नए युग की शुरुआत की-एफ.ई. पेरगिटर-प्राचीन ऐतिहासिक परंपराएँ 1922।

. लोबसांग रैम्पचैप्टर्स ऑफ लाइफ, पी-26 (कॉर्ग बुक्स)

पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चहु दिशि ।
कल्की के बाद ह संबत दो हजका उप स योग। असामयिक ।
मृत्यु जगमाझी बापे लोग बहुत मरे। बादिक
बादिक्को एसाकाते जैसे लकड़ी जर मिलेनिया
एगो सतयुग वेते धर्मकी बेलबर्देह। सुनहरे फूल
वाले पृथ्वी-बीप के फूल मीठे और दस फुट के होते हैं। ।
सूरदास यह हरिकी लीला तारे नहीं तारे। ।

अत: सूरदास के वर्णन के अनुसार सन् 2000 (1) में पृथ्वी पर भयंकर संघर्ष तथा अकाल मृत्यु होगी, तब 1000 वर्ष के लिए सतयुग का उदय होगा तथा शान्ति स्थापित होगी। कवि की राय में ईश्वर की इस अभिव्यंजक लय को कोई रोक या रोक नहीं सकता।

उड़ीसा के संतसाधकों ने कलियुग के अंत और सतयुग के आगमन की ऐसी दृढ़ता से घोषणा की है। इस संबंध में दिव्यद्रष्टा अचुत्रानंद, हदीदास और आयुदास प्रभरी उल्लेखनीय हैं।

अच्युतानंद

सीता कुरानी असती होंगी क्योंकि वह पहाड़ों में खिलेंगी।
यह वह चट्टान है जो लगातार आग के नीचे नहीं हिलेगी ॥
(निर्णय, 2रा ए)।

और पहाड़ फूट पड़ेगा. अछूत बचन झूठ बोले बिना पूरब ॥
या पश्चिम जाएगा। नहीं तो भाषण नहीं आएगा. ।
(शरण का भजन)।

हड्डी का गुलाम

इसमें संदेह न करें कि एक दिन ऐसा होगा।
भक्त इंतजार और उम्मीद कर रहे हैं. ।
हदीदास कमर 1 (काली चुचिशा) ने ।
अमरावती के पूर्वी कोने में सही जगह का चयन किया।

୧୨୯୭-विशेषकर विक्रमादित्य युग का वर्ष, जो ईसवी संवत से 56 वर्ष पूर्व प्रारम्भ होता है।

आप्टे संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश, पूना। कहना।

ଥାର୍ଦ୍ଦାସ

ये सत्य है, जिस विद्वान ने
ठगा हुआ महसूस नहीं किया
उसने ठीक ही कहा कि सत्य तो सत्य है। (शृंखला)

सतयुग के प्रकट होने पर जनसंख्या कम हो जाएगी (1), स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम हो जाएगी (2), बादल सही समय पर वर्षा करेंगे और पृथ्वी उपजाऊ हो जाएगी (3), लोग रत्नों के लालची नहीं होंगे और सभी लोग सत्यवादी होंगे (4) और अनंत केशरी के शासनकाल में खुशी से मरेंगे (5)।

कोटिका में एक होगा, हे लोगों।
जांच में नाम होगा सतयुग ॥ (विषय
पुराण: गंगा जल, 14वीं शताब्दी)
गांव में बीज बोओ. दुष्ट खेल की सज़ा मिलेगी. ।
(शिशुअनंत मलिका, चौथा संस्करण)

9. चक्र के अंत में पुरुषों की संख्या विशेष होगी.
वह स्त्रियों से वंचित हो जाएगा और उसकी जाति नष्ट हो जाएगी॥" ।
(काली बयालीश, उत्तराखंड, अच्युतानंद)

3 लेकिन वह आज्ञाकारी होगा. लोगों को खेती का ज्ञान होगा और वर्षा होगी. ।
(शिशुअनंत मलिका, चौथा संस्करण)

5. मार्ग में पड़े हुए रत्न को कोई भी व्यक्ति ।
झूठ बोलकर तथा पदार्थ के बारे में न पूछेगा। ।
(भक्ति प्रद्यान, वनिता, बाल शाश्वत)

गांव में दो-चार लोग ऐसे हैं ।
जिन्हें खाना-पानी नहीं मिल पा रहा है ॥
(नीलसुंदर गीता: शिखर दास, दूसरा अध्याय)।

5. पृथ्वी पर कोई भी ऐसा नहीं है जो खींचा गया हो।
यदि वह धीरज धरे रहेगा, तो वह एक अनन्त नाम देगा।
(गरुड़ चौतिशा; निःसंतान)

यह जानकर कि ब्रह्मा का जन्म नाम शाश्वत
युवा होगा। जिस दिन वह गद्दी पर ।
बैठेगा, उस दिन वह प्रसन्न होगा।

मलिका के भीतर जो प्रकट होता है वह शाश्वत और सार्वभौमिक ॥ है (1)। जो लोग उन्हें रेटिंग दिए बिना उपहास की दृष्टि से देखते हैं, उनके लिए कवि सम्राट उपेन्द्र भांजा के शब्दों में यह कहना उचित होगा, 'नारिकेल से रस्सर, ता' स्वत्र नजने बनार'। आजकल जो हथियार बाजार में हैं. पत्रिकाओं का प्रकाशन और प्रकाशन एक नाममात्र के शिक्षित व्यक्ति द्वारा किया जा रहा है, जो प्रेस की आलोचनात्मक आलोचना में पारंगत नहीं । है, जिसका पाठकों को गुमराह करने के अलावा कोई अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य नहीं है। साहित्यिक आलोचना के सच्चे मानदंड धर्मग्रंथों के संदर्भ के आधार पर निर्धारित होने चाहिए। इस ॥ दृष्टिकोण से, मलिका अंक में विभिन्न दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, ज्योतिषियों, धर्मशास्त्रियों और भविष्यवक्ताओं के विचारों के प्रतिबिंब पर विचार करना आवश्यक है। इस निर्णय में पृथ्वी के दार्शनिकों के परिवर्तनों के बारे में जो विचार बताये गये हैं वे एक निश्चित केन्द्र बिन्दु से दूर नहीं गये हैं। हर देश में मौत की आहट, संस्कृति के खंडहरों पर खड़ी हो रही अपसंस्कृति, समाज के हर स्तर पर सम्मान, प्रेम और ईमानदारी की जगह पाखंड, ‹नफरत के सर्वव्यापी अंधकार में इंसान राक्षस बनता जा रहा है।

शाश्वत यौवन निकल आएगा. यह कोई मूर्ति रही होगी ॥
हाथी देश भर में भ्रमण करेंगे। आसिन दरगाह में कथावाचक होंगी. ।
(अध्याय बोधनी खंड 3, खंड 1, अच्युतानंद)

यहां यह उल्लेख किया जा सकता है कि सिद्ध अनंत के शिष्य सिद्ध बरंग दास ने इस शाश्वत केशरी के संबंध में अपनी 'भविष्यवाणी' में निम्नलिखित विवरणों का उल्लेख किया है-

शुलक पाक बैसाख मास . तीसरी तिथि रोहना बैल है। बारह बृहस्पति ।
विद्यमान हैं। उस दिन गुप्त भविष्यवक्ता का उदय होता है। ।
उसका नाम केशरी है. धबलगिरी छिप जाएगी ॥

१. हालाँकि, पेचिश की भयावहता के संबंध में जो अब सामने आ रही है, महाप्रू अच्युतानंद का भाषण स्मरणीय है-

शैतान आएगा. वे जानवरों को काटेंगे. ।
कालेपन के साथ उच्च अशांति. ॥
घर-घर शोधू ।

और इस जाति के अस्तित्व की आशा करना पूरी तरह से व्यर्थ है जब तक कि स्वार्थ व्याप्त न हो और जिस तरह से मनुष्य कामुकता में लिप्त रहता है, उससे एक लंबे समय से चली आ रही सभ्यता की गुलामी खत्म न हो जाए। सभ्य मनुष्य आज फूहड़, फूहड़ और उदासीन है। ऐसी विकट परिस्थिति में विश्वकर्मा भगवान ही उनके एकमात्र मार्गदर्शक हैं। गुरुओं को निर्देश दिया गया है कि वे स्वयं को सत्य, शांति, दया और क्षमा पर स्थापित करके ईश्वर को पूर्ण रूप से समर्पित कर दें। (1) जैसा कि आज प्रतीत होता है, विश्व के अरबों लोग शिव और सुन्दर के शाश्वत उपासक कल्कि अवतार की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं। उस सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वव्यापक भगवान की कृपा पाप । के नाश और धर्म की स्थापना में फलदायी हो।

यदि कोई बात का पूरा भाव न समझकर लापरवाही से व्यंग्य और उपहास करे तो उसे संत कबीर की भाषा में इतना ही बता देना काफी

६होगा। को तोहे शुल बरद ताहि रु बोवे फुल।
तुम एक फूल की तरह महसूस करते हो ॥

यानि वो सपना जो आपके आने वाला है. फेंको, तुम उसके रास्ते में ६उड़ाओ। आपका फूल आपके लिए फूल होगा, लेकिन उसका कांटा बत्तख को कांटे की तरह चुभेगा।

वीनत

रत्नाकर नहूं

इ। सत्य, शांति, दया, क्षमा, ||
सीना उसके चरणों से गिर रही है, तुम उसे रामचन्द्र
शरण, सीना में पाओगे। । (अच्युतानन्द की चौतिशा)।

बलराम दास

भविष्य क्या है?

अध्याय चतुर्थ

युवाओं की बात सुनो . भगवान भगवान कहते हैं ॥
और ऐसा तो किया ही जायेगा . पेडिन मुझे यह बताएगा ॥
यदि आपकी दया हो तो बताइये यदुनाथ भगवान ॥
कमल लोचन कहते हैं . सुनो, युवा गुलाम ॥
दुःख (1) अत्यधिक होगा । राजा की बात मत सुनो ॥
बहुत से लोग मर जायेंगे . पाप से सब नष्ट हो जायेंगे ॥
मुकुंद थिरा अंक झन . उसका दोबारा जन्म हुआ है ॥
प्रशिकीहिंग उपुजिब नहिंग । भारी वर्षा ॥
क्योंकि वहाँ अकाल पड़ेगा। अरज (2) कर्कश (3) बन जायेगा। और
सिंह पन्द्रह की संख्या में. कुरुशी (4) दुनिया में होंगी
तो वह भाग्यशाली होगा । सत्रह अंक होंगे ॥
यह वाकई दिलचस्प होगा . इसे कोई नहीं जान सकता. ॥
चंद्र मास के सातवें दिन दिन में भूकंप आएगा ॥
भागवत ने यही कहा जे विश्व प्रसिद्ध होंगे. यह ॥
भूकंप आ जायेंगे किसी को पता नहीं चलेगा] ॥
आप जानते हैं कि इसका । सत्रह अंकों में प्रमाण. ॥
कितना दुरुपयोग होगा (5)। । महत में इजा होगी ॥
आपको अठारह की संख्या में सुनेंगे . हमने (6) कई बटन सुने ॥
अठारह छोटे सुख । उन्तीस अंकों में कह रहा हूँ ॥
पश्चिम दिशा में संघर्ष (7) रहेगा । उत्तर दिशा में एक मेहराब (8) गिरेगी 1190
लोग सूरज की . पूर्व में यह गिरेगा ॥
आहट सुन रहे हैं । पानी ॥
इंद्र अन्याय करेंगे कठोर होगा ॥
बाईस अंकों में जा रहा हूँ . बिरंचि देश में जारंग मोहना ॥
राजा बाहर आ जायेगा । मुगल (9) भेजा जाता है ॥

(1) दुष्टता, (2) अराजकता, अराजकता, (3) निर्भय अर्थात दया से रहित, {4) कृषि, (5) प्रदूषण, (6) श्रवण, (7) युद्ध, (8) तोप या गोले, (9) इतिहास हमें बताता है कि केसोदास नाम का एक हिंदू मुगलों के साथ था

न ही एक हजार घोड़ों के साथ . नबरंगे बाहर आएंगे ॥
आप लदाई मूरत (10) को जानते हैं। यह दक्षिण से आएगा ॥
इसे बाईस अंकों में ले जाया जाएगा . 24 अंकीय इनपुट ॥
येथ के बाद वह तारक (11) हैं। इसके आप जो कहते हैं उसे सुनें ॥
लिए काफी समय लगेगा . यदि कोई किसी की बात नहीं ॥१०
अर्जिला धन के पीछे लग जाएगा । मानता तो उसे चोर कहा जायेगा ॥
जितना आप जानते । बहुत से लोग मर जायेंगे ॥
हैं ऐसा ही होगा. रमन बिटपे करेगा ॥
वह धन के लालच में दौड़ लगा देगा । चाण्डाल सन्त रखा जायेगा ॥
इच्छा से मत डरो । पति कोहरे नैश जाएंगे ॥
क्योंकि कांट क्रोधित हो जाएगा भरा सुख नहीं सो ॥
इस प्रकार जीवन छोटा होगा . दुकानदार कहेगा. ॥
मां बेटे से नहीं डरेगी बहू उछल पड़ेगी ॥
पुत्र को पिता का भय नहीं रहेगा. . शिक्षक का अनुसरण न करें ॥
जैसे मैं बार-बार मरूंगा, वैसे ही तुम भी दोषी ठहराए जाओगे । ॥४०
ये सबूत होगा . ध्यान से सुनो ॥
इसलिए, यह अलग होगा (12)। चौबीस लगेंगे ॥
बन्दी वह बामड़ा (13) मतीबे। कृपया इसे लें ॥
रोढ़ा (14) की वर्षा होगी। कोई भी या कुछ भी नष्ट नहीं होगा ॥
वह चेहरा जिसे आप पकड़ते हैं । वे प्राणी बने रहने ॥
दुष्ट नष्ट हो जायेंगे । के लिए बाध्य हैं ॥
बहुत उथल-पुथल होगी । कुछ भी नहीं होगा ॥
यह बात श्रीकृष्ण मुखु ने सुन ली । लड़की फिर रोती है ॥
श्रीकृष्ण अपने पैरों पर खड़े हो गये। । खल बलराम दास ॥
सुसान ने कहा नहीं । महँगा रहस्य ॥
(15) मत कहो । उन्होंने कहा कि यह अपराध होगा ४९

इतिश्री महिंगं शाहस के श्रीकृष्ण बलिदास
अध्याय 4 तीर्थयात्रियों ने मिलकर

मंदिर में प्रवेश किया और उसे लूट लिया। इसी घटना का जिक्र करते हुए मोहना ने मुगल शब्द का इस्तेमाल किया है. (10) उत्तम, (11) चमक या शानिया, (12) अन्य साधन एक दूसरे से अलग, (13) चमंदा, (14) धार, (15) 'अज्ञानी' होना : परंतु पोथ में 'अज्ञान' है।

अध्याय पांच

बच्चे के दिल से सुनो । मोहर का गुप्त स्थान जाहिंग ॥
भैरव दल हदे जना भुवनेश्वर प्रमाण है ॥
जाजपुर सौभाग्य . विरजा को कष्ट होगा ॥
से भर जाएगा . बिरजा का आसन हिल जायेगा ॥
नदी के किनारे चित्तौपूजा . दुर्गा भगवती में हैं ॥
लकड़हारों को जानो । अस्सी हजार प्रमाण ॥
(1) वह देवी जो पहले ही प्रकट हो चुकी है ॥
कोई बोल नहीं सकता . एक अक्षर कहने से दुर्गा ॥
६से प्रेम हो जायेगा। वह गुलाम कहलायेगा ॥
इस प्रकार यह सिद्ध हो . लड़की बोली सुनो ॥१०
जाएगा कि जो बॉट वहां गिरेगा वह नींबू (2) ही होगा।
तसिंग संत से मुलाकात होगी । की भारत (3) उड़े ताहिं ॥
नीले और सफेद के दो रूप । वहाँ एक रहस्य होगा जैसा ॥
हिस्सेदारी होगी । कि वहाँ देखा गया है ॥
वहां यज्ञ किया जाएगा । . भगवान स्वर्ग से आएंगे ॥
एक तलवार पैदा होगी . इंद्र का निधन हो जाएगा. ॥
यश का उदय होगा विषम (4) नाम विकसित होंगे ॥
भोर होगी . यह अजीब बात है कि ॥
मेरा भक्त कैसे सिद्ध होगा। दिनेश कम होंगे ॥
तो फिर ये सुनो . किसी भी रूप में ॥२०
मुझे यह कहते हुए सुनें क्योंकि आपने मुझसे पूछा था ॥
पैर जाजपुर को जानते हैं। सेतु की महिमा बहाल हो गई है ॥
यह एक अनोखी जगह है और यह एक . क्योंकि विरजा देवी के ।
ऐसी जगह है जहां हिंसा बहुत अधिक है । सामने कौन ऐसा कर सकता है । ॥
लेकिन स्वर्ण स्तंभ को जानो . विधाता ने पुनः यज्ञ किया ॥
करोड़ों देवता हैं. रात बिताने के लिए कुछ भी नहीं है ॥
इतने सारे निर्णय । वह योगमाया का घर है ॥
यदि बांध है तो छुपी . याहिंग में रात न गुजारें. ॥
हुई गंगा भी है नव माधव बीजे तसिंग ॥

(1) प्रप्रदु का अर्थ है रहस्य, (2) चला, (3) भारत, (4) अच्युत।

वह दशाशनी घट सुनो
वह स्वयं स्वर्ग चला गया
अन्य रूप धारण करके
त्रिवेणी बहुचना धार
वहां गुप्त जल है
अगर तुम मुझे बताओ
तलवार चलाने वाली
देवी से युद्ध होगा
फिर उसकी बात सुनो
वह स्थान दुर्गम है ॥५
उजाला होगा
जान लें कि मैच होंगे
मंगलवार शाम सात बजे
संघर्ष ही होगा
६योगमाया एक ऐसी स्त्री
है जो कुंवारी है। किताब बेल-फेस आ रही है
वह जानता है कि नदी के
किनारे एक निगम वृक्ष (6) है ।०
सहस्ते गुफा ताहिंग में है
नाग के मुख में
एक विशाल भवन है
पर्वत पर कमल के फूल हैं
श्रीभागवत समूह ताहिन ।०
में छह स्थान हैं
उस स्थान में एक देवता है
जो उस स्थान का महिंगा है ॥
चूँकि आप भक्त हैं इसलिए
मैं आपको अपने बारे में बताता हूँ। लड़की की बात सुनो
वह स्थान जहाँ अमरावती

. दस हजार की संख्या में ब्राह्मण ११०
। रसातल मिला. बीके ॥
ताहिं नरहरि ॥
. तीर्थों का सार ॥
. वह है पद्म तपस्थान । ॥
। आप गोहिरातिकिरी (5) को जानते हैं। ॥
. वह घोड़े पर सवार होकर पृथ्वी पर ॥
भ्रमण करेगा। कोई नहीं रह सकता ॥
। वह गीगली घाट ताहिंग ।० ॥
. बच्चे की बात सुनो ॥
। कोई व्यक्ति। 40 नहीं जान सकते
। कई देशों के शासक. ॥
जोरदार गड़गड़ाहट होगी ॥
। मैंने कहा, "सुनो, लड़की।" ॥
. शब्द शून्य में अच्छे होते हैं ॥
॥
. एक जगह जो उज्ज्वल ॥
है. वह संत का मेल है ।० ॥
। इस पर एक नागिन है ॥
. महिंगमा उसका विवरण ॥
। (7) याहिंगरे दत्त दिबा नहिंग 1180
। कोई भी उससे मिल नहीं सकता और ॥
। याहिंग में रात नहीं बिता सकता ।० ॥
. भीतर से बिंबर (8) फूट रहा है ॥
. दैनिक रहस्य के बारे में सोचो ॥
. बच्चे की गुणवत्ता सीमा को सुनें ॥ ॥
। यह सब मेरा कहना है ॥
॥
. (9) बहुत दूर ॥

---

(5) जाजपुर के पास एक ऐतिहासिक स्थान, विशेषकर जहां मुकुंददेव का
(6) देवरूपी वृक्ष, (7) विषाद, प्रसिद्ध, (8) गर्भ, (9) कुछ के साथ ब्लैक हिल्स
की लड़ाई हुई थी।

वहीं अमरत्व का वास है . कह रहे हैं कि डेढ़ फुट है ॥
सिद्ध का गुप्त स्थान । पांडव वहां थे ॥७०
योगमाया की क्रीड़ा है। सुनो बच्चे मन ॥
तुम कमल के फूल हो . अमरासुर के पास नहीं था ॥
आप विरुपा नदी के . बच्चे की बात सुनो ।
किनारे बता सकते हैं। वह स्थान मंचेश्वर कहलाता है ॥
सिद्धार्थ सेहू की गेंदबाजी ।° . वहाँ एक काली मिर्च का पेड़ है ॥
में काफी महंगमा है, कह सकते हैं कि गुणवत्ता की सीमा है ॥ ॥
चौबीस अंकों के भीतर । यहीं पर बांध टूटता है ॥
जितने भी दिन बढ़ेंगे । पूर्वी हिस्से में एक (९०)..
त्रिवेणी नामक स्थान । बांध टूट रहा है ॥
पर महती (11) होगी। . त्रिवेणी धार उबलेगी 1190
चौदह वृक्ष या कदंब । जगह में गति ॥
दुर्गा अम्बिका सरस्वती । ६ (12)
केवल किरीटन का नाम बताएं . त्रिवेणी ही तीर्थ होगा जान लो। ॥
यह कैसे होगा? ।° "ध्यान से सुनो, लड़की।" ।
कुंडी कटक को दुर्गा या . रुक्मिणी (13) को उठा ले उस जगह।
भगवती के नाम से जाना जाता है गए। चित्रोत्पला नदी याहिंग ।° ॥
जंगल वहीं है . रात बिताने के लिए कुछ भी नहीं है ।
लेम्बाला नामक एक . दिन के अंत में सभी ॥
बॉट स्थान है जो । ने हरि मति को पुकारा ॥
सेंट से मेल खाता है । वहीं मेरा आश्रय है १।८०
ब्रह्मा और भगवान हाँ हैं । वहां आप हैं ।
केंद्र वह स्थान है जहां चौराहा होगा . जाहिंग रहस कुंजवन ॥
सारे तीर्थ वहीं हैं मैं जाहिंग में किसी को जाने ॥
और गंगा भी वहीं हैं । बिना रात नहीं बिताऊंगा ॥
सुनो बेबी मेरा बटन . आपको बता दें कि हर ॥
जगह घना जंगल है। बुद्धिमान लोग हैं ॥
आप जो कहते हैं उसे सुनें . मेरी बात सुनो, बेबी ॥
तुम मेरा विश्वास हो. आइए बताते हैं सभी संदेश ॥

(10) तोड़ना, (11) धूलयुक्त, (12) त्वरित, (13) भीष्मक के बुलाजी, कुंडिकत्ता के राजा जिन्होंने स्वेच्छा से श्रीकृष्ण को मार डाला।

सख्त मक्खन हो जाता है . थोकाई समूह में है
समय गिर जाएगा । यह कौन नहीं जान सकता ॥९०
सुनो, यह तुम्हारे लिए है। . तुम मेरे प्यार हो ॥
जोर से गर्जना की आवाज. दुनिया हैरान रह जाएगी ॥
जानिए भुवनेश्वर में . बात यह है कि सरोवर पुन ॥
तुरंत वृद्धि होगी. किसी को मत बताना ॥
कुछ ही महीनों में फिर। . चौबीस प्रमाण ॥
से लड़ाई शुरू हो जाएगी मैं उस दिन मंगलवार ॥
उस दिन सूरज निकलेगा . ओडिशा में प्रवेश करेंगे ॥
तुम्हें पता है यह एक बड़ा आश्चर्य होगा 1 डेवन (14) नैश पुन होगा। ।
हर कोई उच्च महसूस करेगा। . टुकड़ा गांव में पिया जाएगा· ॥
आप पढ़ेंगे तो । यह बहुत बड़ी बात होगी ॥
किताब ऐसी ही होगी । । मोहना मुगल की शक्ति ॥
सब एक जैसे होंगे । जाति नहीं होनी चाहिए ॥
रूसियों ने प्राची तीर्थ कहकर . मार्कंड टैप प्लेस ताहिंग ॥
उस स्थान को चुरा लिया . गुपदे संत हैं ॥
वहां अंदर नहीं जा सकते । ठोकाई गुप्ता रहेंगे ॥
निगमन का स्थान (15) है। . याहिंग में रात बिताने के लिए कुछ ॥
मेरे भक्त बने रहें भी नहीं है। मैं हमेशा हंसता रहता हूं ।° ॥
यह जगह इतनी महंगी है ॥ किशोरों की श्रवण गुणवत्ता सीमाएँ ॥ ॥
मालूम हो कि गोलकुंडा (16) होगा. कॉल सुने बिना दबाएँ ॥ ००
. सभी वर्षों की दौड़ ले लो. सभी को न बताएं ॥
किसी को मत लिखो. मुगल (17) सबको मार डालेगा। ॥
सुनो, लड़की ने तुमसे कहा हमारा जन्म किसमें होगा 1 ।° ॥
आप जो कहते हैं उसे सुनें । जाजपुर नामक गाँव। ॥
वहां ब्राह्मण का घर है उसका नाम विद्रपण्ड है ॥
उसके परिवार का नाम जानें । । अति पद्मावती नाम ॥
मैं उसके घर गया. दो भाई पैदा होंगे ॥
उसके घर उसका जन्म होगा, मैं वहीं रहूंगी. वह स्थान ॥
पांडव पांच रे कां जहाँ पद्मावती का जन्म होगा ॥

---

(14) युवा लोग, अन्यजाति या बुतपरस्त, (15) शरण स्थल,
(16) पहाड़ी स्थितियाँ, (17) मुगल।

सेहू का जन्म वहीं होगा. उसे कोई पहचान नहीं पाएगा ॥
यह जान लो कि वह पंचसखा है . उसका नाम सुदर्शन है ॥ ७०
वह पंचसखा के साथ रहेंगे । लेननल बॉट में पाया गया। ॥
वह फिर से बेथेस्डा में है उस समय दोनों मिल जायेंगे ॥
जैसा कि मैंने कहा, . जहाँ तक चौबीस अंकों की बात है ॥
तुम्हें बुरी तरह पीटा जाएगा (18)। गोधा नदी बन जायेगी ॥
आप अस्सी जानते हैं . हान लकड़ी का काम करने वाला होगा ॥
वह धुआं जानता है. मरने को बारह सप्ताह। ॥
जैसा कि कपटी दास ने कहा बारह हजार नष्ट हो गये ॥
यह एक रोलरकोस्टर होगा । छह हजार उसने वापस कर दिए ॥
नंगुली दास नैश जाएगा। बैग में थे पांच हजार ॥
अधर्म आठ . वह फिर सात हजार का है ७१०
हजार होगा . ओडिशा देश मर जायेगा ॥
कुचार्की (19) काल जानें। मरने के लिए दबाव मत डालो ॥
अबार ने दस बार कहा . गोहिरातिकिरी गए ॥
वहाँ कौन होगा? वह योगी के मुख में पढ़ेगा ॥
इस प्रकार आप आठ और । हान दबाव में चला जाएगा ॥
दस को जानते हैं । हान लकड़ी का काम करने वाला होगा ॥
एक औरत जितने तीर . अब उसकी बात सुनो ॥
जितना आप जानते हैं, पति . साठ हजार पुनः ॥
का विवाह वैसा नहीं होता । अगले आदमी का दिमाग ॥
वह अपने पति की कितनी अवज्ञा करती है । दूसरे आदमी सोते हैं ॥
शाप से पति नष्ट हो जायेगा । ॥
मैं सचमुच क्षमा चाहता हूं . उन्होंने कहा, "सुनो, लड़की।" ॥
आठ अंकों पर जाएं । मैं आऊंगा भाईयों ॥
मिलान होने पर वे सभी 13 सुअर कहेंगे ॥
जान लो लड़की बनेगी राजा । । उसका नाम ब्लू किशोर है ॥
यहां वह दरवाजा (20) बांधेगा। वह दुष्ट राजा को नष्ट कर देगा ॥
पृथ्वी वह चारों ओर घूमेगा दुष्ट फिर न रहेंगे ॥
उनचास अंकों को जानिए । यह अवतार मैं फिर से हूं ॥

(18) हनाकाटा, (19) षडयंत्र में लिप्त व्यक्ति, (20) शिरपा पहनने का अर्थ है शाही सिंहासन पर अभिषिक्त होना।

ये बात लड़की ने सुन ली॥ । श्रीकृष्ण उनके चरणों में गिर पड़े ॥
६ लॉर्ड रो ने ऊपर देखा । ६ मेरे जैसा भाग्यशाली कौन है? ॥
इतना छोटा ॥ । उसने अपने हाथों की हथेलियों पर पड़ा ॥ ॥
ब्रह्माण्ड गोसायु कहते हैं । बच्चे के दिल से सुनो ॥
मुझे तुम पर दया आ गयी । हमें आपका मठ मिल गया ॥
बाकियों से ये कहा । वहां से वह चला गया ॥
बालक जागना चाहता ॥ । उसने उसे दोबारा नहीं देखा ॥ ॥
था, श्रीकृष्ण हरि पदे राख । जीजा बलराम दास ॥९४७

श्री महिमा शाहग्रा के वर्षों के दौरान, श्री कृष्ण एक सेवक थे
आने वाले भविष्य की कहानी का पाँचवाँ अध्याय। ।

यशोवंत दास की रानी ॥

ऐश्वर्य के रस को ध्यानपूर्वक सुनो । कल्कि रूप हैं जगदीश ॥
ग्रुप गुप्त रहेगा. सभी भक्तों को अपने साथ ले जाना (1).
प्रकाश शाखा के आसपास गायब हो जाएगा. यह गीत के लिए एक गीत है. (9)॥
बिरजा मांदल से नदी से भूमि का एक समूह ॥
खेलेंगे और बीच-बीच में तरह-तरह ॥
के खेल भी होंगे। बेदी मंडलाका ।
में होंगे, शरीर अनेक प्रकार ॥
से लौटेंगे। जेठ । तथाकथित गरीब शासन" ।
भी भगवान के रूप में जन्म लेंगे। ।
खेल अलति बोलिन अति जेहु भदेगिरि से सेहु लियो है
कुरालाखंड उज्ज्वल है और । प्रकाश में कोई रहस्य होगा.।
पद्मपुर के करीब है, उसे । "बयालीस मंडलों में से।" ।
ले जाओ और सरस्वती को जानो । एक गांव जिसे कुंडी झील के नाम से जाना जाता है 10
इसे चित्रोत्पला कहा जाता है। वह नदी से आ रहे हैं और वह ।
मुनि भगवती दुर्गा के शरीर को लेकर नदी के तट पर हैं ॥

(1) लेना, (2) रहस्य। ।

एक स्थान जिसे समस्वरी के नाम से जाना जाता है। फ़िरोज़ा शून्य में सोना बजाता है ॥
उस सीधी रेखा से कुंडी के किनारे तक . रुक्मिणी वहीं की रहने वाली हैं ।
तब प्रभु प्रवेश करेंगे. तदनुसार अनेक दास ॥
वह लीला का मेला करेगा। वहाँ गोपी गोपाल का केला।
वह खेल के लिए बने रहना चाहता है. 20 से गोपी गोपाल भक्त
चटखुंब से बहुत दूर. नरसिम्हा सोचते हैं कि यह निकट है ।
जगन्नाथ कल्कि रूप होंगे थाबे थाबे लीला प्रकट प्रथम होंगे ।
लाखों ऋषि मुनि भूमि पर खेल रहे हैं। कल्कि वहीं रहेंगे. ।
चित्रटोला के नीचे वुडहरी नामक गाँव है ॥
जंगल के गुप्त स्थानों में जाकर उन ऋषियों का कल्याण होगा ॥
उस नदी तट पर ज्योति. एक है अछोदा बोलीं गांव ॥
भक्त गुप्त रूप से रहेंगे . वह रससिंधु को अपने साथ ले जायेगा ॥
अंदई सही चंपेटी गांव से। खैराकुंज कहा जाता है ॥
वह कुशभद्रा तट है जगतपुर नामक गाँव ॥

गुप्त भूमि के पास. 30

यह इस बात का प्रमाण है कि कृष्ण ही भगवान हैं। रागति (3) तट चित्तेश्वर जानो ॥

अटल गांव को चौद्वार कहा जाता है. (4)

कहा जाता है कि यहां उत्तरेश्वर अगरती हट जया नाम की एक नदी है ॥
अनेक भक्त वहाँ विभिन्न प्रकार से क्रीड़ा कर रहे होंगे। ।
महिमा बढ़ेगी, और यह सात और पांच से मेल खाएगा। ।
महिमा होगी अपार, महिमा है विशाल (5) सागर
एथ के निकट हराह का स्थान बहुमूल्य है ॥
भगत वहीं रहेंगे. कक्की ध्याबे गोपाल पोए। ।
यह एक रहस्य है कि नायक एक अनोखी जगह पर हैं ॥
वह यशोवन्त पराधीन है। मुझे पता चल जाएगा कि बड़ा घाना 4° कहां से है
सर, मुझे आदेश दिया गया है. चित्तो ने लिखने का आदेश दिया ॥
मैं कल्कि में प्रकट होऊंगा . आप सोचते हैं कि परम भक्त ।
हर जगह पैदा होते हैं। जेठ के बीच लीला प्रकाश ॥
भगत का जीवन गौरवशाली है । भाकर के खेव कल्पत से ।
दया सागर खमसिंधु हरि . निर्माण स्थल गुप्त है ।
रामचन्द्र को लेकर अच्युत के पास जाओ । शाखाएँ मजबूत हैं ॥

(3) भक्ति, (4) अतुलनीय, सर्वोच्च, (5) अगाध।

बॉट वहीं रहेगा. महिमा बढ़ेगी, और वह ॥
मुध मस्ताना (6) पसंदिया जितना सर्वदा ऊंचा न रह सकेगा। ।
लंबा है। पाखंडी, नास्तिक, । ये माया के चरवाहे होंगे. ।
पाखंडी, लोगों का पेट भरेगा । बहुत से लोग शैतान के पास गिरेंगे 1180
विष्णु तरह-तरह से उपहास । ६वह गोपी गोपाल का किरदार निभाना चाहते ।
कर रहे थे और हँस रहे थे हैं। . समय के साथ नष्ट हो जायेंगे ॥
मैं चौबन के आश्चर्य में . किताब मज़ेदार होगी (8)। ॥
शाश्वत खेल देखता हूँ चालीस हजार गिर जायेंगे ॥
शाश्वत गोपाल खेल के लिए . राक्षसों को मत दिखो ॥
हरिहर बेनी का खुलासा होगा आज्ञा में यशोवन्त ॥
कहते हैं, "मैं दास योनि में जन्मा हूँ" (9)। 1 ॥
तुम अंदर क्यों नहीं घुसते? । मैं आज्ञा में पुस्तक लिख ॥
रहा हूं, थोड़े ही दिनों में अंधेरा हो जाएगा ॥
खोल अब दिखाई नहीं देगा । जाल में फँसना ॥७०
आलोचना (10) एक मजाक है जो दुष्ट है। नास्तिकता ॥
ये सब हरि अक्षोक के अन्धकार में गिरेंगे हे सुज्ञिन ॥
नाश गोपी गोपाल की शाश्वत . वही जो गुलाम बनकर रह जायेगा ॥
६क्रीड़ा माया की धुँध में होगी। यशोवंत सेबे बेनी पयार : 1158

अच्युतानंद का विज्ञान १३

अध्याय छह

राम के वचन सुनकर ।
मन लदाक्षिरी गांव में ॥
क्षीरेश्वर को जानता ।
है।शिवलिंग के ॥
पास एक भक्त मुकुंद (1) है। ।

---

(6) मस्त ह्यवथुब-निर्माता, (7) तामसिक या आसुरिक सिद्ध व्यक्ति, (8) आहार भक्त, (9) भृत्य या सेवक, (10) निंदक।
(1) मुकराल.

त्याग कर गृहस्वामी
की भाँति व्यवहार
करें। असुरस्वर में भक्तों
की बड़ी संख्या
होगी। इनि टिकरा
नाम के निकट कृष्णचन्द्र
मणिराम भक्त होंगे।
मेरा छत्रपुर उत्तम
है। शुक्लस्वर के
स्थानों में पृथ्वी
का स्वरूप महँगा
है। त्रिवेणी शिव के
अस्तित्व का प्रमाण इस
तथ्य से होगा कि डेटा
के बीच का किनारा
नोर्टांग (2) पुस्तक
के करीब होगा। उदाम
अलपुर का नाम
कराशिरी मंदिरपुर
नाँथांग स्थान में होगा
और वह बह जाएगा।
कुशाबद्र का नाम जीवन
का महान स्रोत
होगा। राजा के
पास भोजन नहीं
होगा। अकाल पड़ेगा।
लोग मर जाएंगे। यदि कोई
जाति या जाति नाथूब
संबोधन के रूप में साधुवे
भक्ति का सम्राट
बन जाती है, तो वह लोगों
की आवाज सुनेगी।

जहां तक इस देश का सवाल है ।
उड़ीसा) समस्त उत्तराखंड जिले ॥
(3) ।
देर-सबेर एक गंभीर संघर्ष शुरू हो जाएगा ॥१०
विश्व में हनुगोल भय अवश्य फैलेगा ।
फिर कोई मदद नहीं कर पाएगा. ।
भक्त करीब-करीब चोर हैं ।
नाम भजुथेबे उसकी जान बचाएंगे ॥
बहुत कम लोग उन्हें पहचानेंगे और उनकी सेवा करेंगे ॥ ।
६उसकी सेवा करोगे तो उसे छोड़ दोगे, या ॥ ॥
सिद्धगिरि गोटी बाबू सिद्धार्थ का स्थान है ।
योगमाया कुछ दिनों तक ताहिंग में रहीं ॥
आप जारंग कालिया ग़ैर में प्रवेश करेंगे ।
परीक्षा का स्थान सुनो वीर ॥
गुप्त रूप से भक्त पैदा हो सकते हैं ।
बिना पहचान के यात्रा न करें ॥
पूजा समाप्ति के बाद भागवत ।
मंत्रोच्चार होगा और भगवान ध्वज फहराएंगे ॥ ॥
यज्ञ में महान भगवान का जन्म ।
होगा जो गरुड़ के साथ वीणा बजाते हैं ॥
मूर्खता को मत पहचानो ।
जब यह कहा जाता है कि यह सही समय पर ॥
६किया जाएगा तो किसी को सज़ा नहीं होगी.
माही नेत्रे नष्ट और भ्रष्ट होना चाहती है
बारह (4) प्रभु पुनः आरूढ़ होंगे।
उस समय राम शारिबती अपनी लाठी ॥
से सभी नंदकों को मार डालेंगे ।
नेत्रे ओचुथुब राम अच्युत पामर । ॥
राम मुक्ति सुनकर ॥ ।
लविला नाच उठी और बोली अच्युति ॥ ॥

यह श्री विज्ञानकल्प अच्युतानंद रामचन्द्रबोधन्ने के नाम का छठा अध्याय है। ।

(3) दौड़ाना, घेरना या जबरदस्ती करना, (4) घोड़े।

अछूतानन्द का कल्किकल्प

तीसरी मंजिल

कहत राम गुरु वाद धाय। चलो भविष्य . गपशप थोड़ी अजीब थी "|
के बारे में बात करते हैं . ये सुनकर मुझे चिंता हो रही है ||
दुनिया में फिर क्या होगा . रामचन्द्र को ||
आश्वासन देकर क्या करोगे? वह कहता है, सुनने के कारण ||
बूढ़ा लड़का राजा होता. सन साल्स गुप्ता के अधीन काम करेगा ||
मनुष्य की जानकारी के बिना . वेस्ट सोच-समझकर बनाया जाएगा. ||
सूखे से कृषि नष्ट हो जायेगी किसान बर्बाद हो जायेंगे ||
वसुधा बड़ी समसार | अमननता नहीं मानेगी ||
होगी क्योंकि होराब के बाद इंद्र होंगे। |
बादल गरजेंगे और चंद्रमा आकाश . आसमान से कोई बूंद नहीं गिरेगी ||
में चमकेगा। "पुरुष वैसा ही होगा जैसा महिला होती है।" |
नया दिन कोहरे में लिपटा रहेगा . तुम जानोगे कि प्रभु निराश है ||
मीन राशि में शनि . भारत तो होना ही है ||
मुकुंद अंक के कारण स्थित रहेंगे। ||
मधु (1) गुरुवार को छठी तिथि है। आपके नौकर पर मुसीबत आएगी। ||
उस समय को अठ्ठारह जानें. भक्त को कुछ होगा ||
रात्रि में तारा दर्शन होगा। | कोई बढ़िया रिटर्न नहीं मिलेगा ||
देखते हैं भक्त कौन छुपता है | संत का दर्शन ही संत होगा ||
युवाओं का नंबर बूढ़ों का हो जाएगा। | वह एक ऐसा राजा था जो ||
राजा गरीबों की बात | तेज़ हवाओं और पानी से चलता था
नहीं सुनेगा. जंगली तो जंगली ही रहेगा बी
घरवाले उज़ुदी जाएंगे | दोबारा पैसे नहीं मिलते "|
जोड़ी बेची जाएगी . किसी का कोई फैसला नहीं होगा ||
विधवा ब्राह्मणी बनेगी. तीन फीट कवर किया जाएगा ||
संख्या में . मरुतों को पकड़कर भेजो। ||
बहुत अंतर है किसी भी आदमी को यह पता नहीं चलेगा ||
एक विधवा ब्राह्मणी जीवित होनी चाहिए . यह तीन चरणों का अंत है ||

---

(1) मधु का अर्थ है चार महीने।

संख्या में दिव्या सिंहदेव. पूर्व दिशा में ॥
उल्कापिंड होगा. योगी के मुँह बोबाबी जंगली लोमड़ी को छोड़ देगा ॥
में ठुकाई मर जायेगी। किसी में कोई दया नहीं है,
300 बराह के खेत में शुभ स्तम्भ । वहाँ खून की नदियाँ बहेंगी ॥
वाला एक वैष्णव पाया जाता है। खोदकर शुभ ॥
स्तम्भ || कुछ सामग्री छीन ली जायेगी. उस संकेत के
बारे में सोचो जो तुम्हें उस दिन पता चलेगा ॥
मैं मरने जा रहा हूँ। कुछ ही दिनों में भूचाल आ जायेगा ॥
साधन त्याग कर हरि प्रथम तपस्या शरण छुटगिरि ॥
कंचनार काशीपुर पटना३॥ । भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा है ॥ ॥
वहां मेरा अपना निवास होगा. (2) षड़यंत्र होगा.
भक्त का घर ही आश्रम है, जो मिट्टी से बना है ॥
बिरजा पीठ बैतरणी नदी दशाशनी घच उदय वेदी ॥४०
सपत मातृका तेकिखी शिर उसके मध्य से रुदुरा है ।
जानिए वह संकेत राम कलंकी (3) उदय को अवश्य जानना चाहिए ॥
रामेश्वर थ पर्वे। विभीषण तपस्या स्थल पर ही रह गये ॥
जो वैष्णव रूप धारण करेगा, जो ऊंची ध्वजा उठाएगा, उसका ॥
जन्म विश्वकर्मा के यहां होगा। कुछ ही दिन होंगे ॥
सर्वत्र त्रिलोचन की मूर्तियाँ हैं ॥
छप्पनगांडा युग बरपई ताहांग लवेला ध्रुव का आनंद लेगा ॥
हमारे घर ने चौदह साल का आनंद लिया है ॥ ॥
सीता सशक्त हुईं और अशोक को अपने पास रखा ॥ ॥
हनु ने हाथ हिलाकर संकेत किया कि राम के प्राण बाण से गये हैं ॥४०
और उन्हें तीन वधूएँ मिली हैं । सीता वीरांगना बन गईं. ।
विष्णु भक्ति सेहु एकांग मैं क्षात्री जनजाति को तारांकित करूंगा ॥
छत्री (4)। छत्तीस प्रकार . राजा का प्रकाश रोका नहीं जाएगा ॥
से बांधे माला (5)। सेहु नेबती खबर शून्य में ।
वह तेरह आदमियों को भोगेगा। ओड़िशा की ।
रजुति छूटेगी कि "दिला (6) राजधानी होगी। बंगाल ।
ही हाथ बटाएगा।" बिहार ओड़िशा एक होगा।

---

12) प्रखरी, (3) काल, (4) क्षत्रिय, (5) तेशांतर - गरजत चींटी होगी, (6) दिल्ली, (7) पिठंतर - खासमहल सर्वत्र होंगे।

जरासंध फिर दमनकारी शक्ति बनेगा ॥
इस समय, रूसी राजा . वही बाहर आएगी और कहेगी कि तुम जाओ ॥ ॥
शरण वहां . कुछ दिनों तक सच्चा रहना ।७०
जाकर भोई के . युग वोग सेहु कुछ करेगा ॥
परिवार में पलेगी . उस दिन से, कुछ मजबूत ॥
दिव्यसिंह देव का नया . दुनिया में कुछ अकाल पड़ेगा ॥
नंबर अंत में नष्ट हो जाएगा। मैं कहता हूं कि मैं ॥
बाहर कुछ खेल खेलूंगा । मैं संबल नगर में वापस आऊंगा ॥
नौवां जन्म . बूढ़ा लड़का राजा होगा. मैं ॥
मेरा गोपयान तुम्हारे साथ भ्रमित हो जाऊंगा ॥
होगा, मैं नींद . सुदाम अनका में विकास का विकास ॥
में सो जाऊंगा। 8 के कारण आप बर्ज पोय के पत्रों ॥
को अत्यंत गुप्त रखते हैं। कल्किकल्प ऋत अच्युत ने कहा ॥

इतिश्री कल्किकल्प गीता फमन्त वरानने रामचन्द्र बोडने नाम तृतीय पाताल।

अच्युतानंद की प्रभाधुनी?1

(भाग III) अध्याय तीन

रामचन्द्र ने भाषण सुना ॥ । उसके मन में फिर असमंजस की स्थिति बनी रही ॥
कम से कम भक्त तो मेल खाएँगे। मेरे सामने वो बात कहना. ।
यह प्रमाण है कि तेईस के बाद चौबीस फिर भक्त हो जायेंगे ॥
तेईस चले गए, चौबीस आ गए . पृथ्वीवासी उल्कापिंड होंगे ॥
वह देशभक्त बन "कुत्ता क्या करेगा?" ।
जायेगा, वह इंद्र खून की बारिश करेंगे ॥
खूंखार कुत्ता . जानवरों को साँप ॥
बन जायेगा। काटेगा ॥
दुनिया में बड़ी उथल-पुथल होगी ऐसा कोई नहीं है जो निर्भय हो ।
मैं महँगा होना पसंद करूँगा। यदि आप सब कुछ निवेश नहीं करते हैं, ॥१०
तो पति अपनी पत्नी के साथ अनुकूल नहीं रहेगा। चारों ओर लपेटने का समय ॥

लड़की पागल हो जाएगी. कुटिल लोगों
के लिये कोई न्याय और कोई दया नहीं
होगी। अध्यात्म के विज्ञान में, आप
श्वास को नहीं पहचान सकते। गन्ना होगा
तो नहर तोड़कर पानी भेज दिया
जायेगा। मृत्यु के भय से ब्राह्मण
को संसार अत्यंत सब्बे लोगों के साथ आप क्या करेंगे? ।
अन्यायपूर्ण लगता है। यदि किसी का
निर्णय ठीक नहीं होगा तो वह
अहंकार दिखाकर । ६ मैंने पहले ही सब कुछ कह दिया था. ।
सत्य बता देगा। बादल बरसते रहेंगे और
आते रहेंगे। बिजली गिरने से एक व्यक्ति
की मृत्यु हो जाएगी और
६जमीन ढक जाएगी। एक बार मैंने बाबू
रामचन्द्र को यह कहते हुए सुना, "निबुरी
मनसे, अनाज गिर जाएगा, और गार्ड उलट
जाएगा।" उन्होंने कहा, "आइए ज्ञान
के बारे में बात करें।" कैसे कहें
कि यह सब आपके जाजपुर में 30 दास भक्त हैं
सामने है। तेरह व्यक्तियों की
व्यवस्था समूह को नहीं बतानी
चाहिए। बयासी पैर मेरे जाल हैं।
आलावेरे तांती सुदाम मेरे फकीर
का अटै भक्त सारा मधुदास है
भक्त चेता है। गुप्त चक्रधर की
संतान का नाम । ६केशव बोलिन एक ब्राह्मण हैं।"।
किशोरी है। और भी भक्त बनो. वह ज्ञान का
भेद जान लेगा, सुनो रामचन्द्र। हम थोड़ा
रहस्य रखेंगे. अनम एक नाम बन जाएगा, और
एक अनाम किरदार जल जाएगा। छः चक्र
पचास समूहों कोई भी बुद्धिमान नहीं हो सकता. ।
के नाम पर । हर कोई एक गुमनाम टीम है
मंडला गोटी 1 भी है । पिण्ड ब्रह्माण्ड को आच्छादित कर रहा है।

नाहिन ने ताहिन पर कुछ . अंडे के अंदर बच्चा है ॥
अंडे फोड़े और बच्चे को देखा । अँधेरा बेहतर है ॥
शुद्ध हवा के पंख. वह इसे स्पष्ट कर देंगे ॥
मन को हवा बनने दो, फिर सांसों का खोजी बनो ॥
राज तमस गुण को मुक्त कर देगा . दस गुना ज्यादा दिमाग ॥
वह सच्चे मन से धान बोएगा और तन फैलाकर बैठ जाएगा ॥
पीछे मुड़कर देखें । यह हमेशा के लिए अंधेरा रहेगा ॥
और ब्रह्मांड को देखें । ज्ञान दीपक में ब्रह्म को पहचान लेगा ॥
चंद्रमा वृत्त में सूर्य को देखेगा । पुरानी भाषा ही ज्ञान का स्रोत होगी ॥
उस अनाज से पहले जो घर में होगा । वह पुराना तो खा ही लेगा ॥
सब कुछ ऐसा ही है ॥
६ये मैंने आपके इस बुद्धिमान संत ने ब्रह्म को पाया ॥
सामने कहा . यह निर्णय शून्य कोड से. ॥
दिन के अंत में, जब बसना हे कुमार, हृदय से सुनो ॥
ने यह कहा, तो अच्युत के नौकर ने कहा कि वह असभ्य था ॥

इतिश्री ब्रह्मविद्यांग குர்புதினி வைக்கிய்ப்பியை ॥
கத்து நாத்த मेरा तीसरा अध्याय पूरा हो गया है.

शद्धानन्त की भक्ति मुक्तिदायक गीता।

सातवीं मंज़िल

इस वजह से, ।
आप पुंडु, ॥
नरपसुत ॥ ।
सुनेंगे, ज्योतिष ॥ ॥
जोड़ा ।
जाएगा। इसे ॥
एक सरणी कहा
जाता है ॥

(1) भूमि.

11. स्त्री बेवफा ।
होगी। ॥
स्त्री को दुष्ट ।
के गले में डाल ॥
दिया जाएगा। ।
उसे फिर से
फाँसी दी जाएगी। ।
माधव के ॥
महीने में, सुंदरपुर ।
के महीने ॥
में पूरी बारिश ।
होगी, यदि बीज ॥१०
बोए जाते ।
हैं, तो पानी ॥
की कमी होगी ॥ ।
(2) श्रावण ॥ ॥
के महीने में, ।
जब इंद्र की भूमि
चासिवेक ।
चाशा की अल्प ॥
वर्षा से पोषित ।
होगी। ॥
कार्प बम्फ पूल सूख ।
जाएगा, हर नदी ॥
में पानी ।
नहीं बहेगा, आशिन ॥
महीने में ।
पानी बह जाएगा, ॥
प्रवंत नष्ट ।
हो जाएगा। ॥

---

(2) अनिश्चित ।

यदि जानवर मर ।
जायेंगे तो ब्रह्माण्ड 1190
संख्याओं ।
में लिखा ॥
जायेगा। पैदल चलने ।
वालों के
लिए बहुत बुरा ।
होगा, वे जानवरों,
साँप, शारदक ।
जानवरों, मरकट, ॥
सियार के डर से ।
बाहर नहीं निकलेंगे,
रात में रोशनी ।
होगी, 11 ॥
जानवर भौंक रहे
होंगे (3) घर-घर, यह
निश्चित रूप से
मारने की बात ॥
होगी। उस दिन ।
नया जन्म होगा. ॥

इति श्री भक्तिमुक्तिदायक गीता श्री कृष्ण युद्ध्वर ब्रह्मा
नारद सम्पादे अगम्य कथने नाम 7वाँ पटल सम्पूर्ण। ।

(3) अस्पताल या निवास, (4) चिकित्सा, (5) स्थान।

आठवीं मंजिल

कहते हैं धातये, मुनि हेदि नारद ।
सुनो, हे सुजैन, मेरी बातें सुनो। ।
श्रीकल्पबोट जब घायल होंगे ।
नील नदी मदनगोपाल को छोड़ देगी और ॥
सात दिन तक दरवाजा बंद रहेगा ।
कैरिजवे पर कोई रास्ता नहीं होगा ॥
सुन्या घाट रोड पर जाएंगे ।
सभी प्राणियों की जातियाँ नहीं होतीं ॥
शिरी (2) बच्चे के सभी घरों को छोड़ देगी जो ।
हमेशा के लिए रहेगा और निश्चित रूप से वापस आएगा (3)। ।
मनकर्ण को भी सुनें और ।
नक्षत्र इंजा (4) पुंजा पुंजा में पड़ेगा। ।
चट्टानों की तरह बारिश होगी ।
हल्की हवाओं में ॥
नमकीन पूर्वी हवाएँ उठेंगी ।
नदी का तल जला दिया जाएगा और रेत लपेट ।
दी जाएगी। 1 कांजीनगर (5) से एक ।
सांप शाल वैशपुर (6) से निकलेगा। ॥
गड़गड़ाहट की आवाज ।
सुनाई देगी, ।५ १२०
विनाश का संकेत। ।
चित्ततोजा नामक दूधिया नदी ॥
तुत्सी पटारा का प्रत्येक वसुथ ।
लेम्बाला गांव में एक पद्म भक्ति समूह होगा।।

---

(1) संपद का अर्थ है शुरुआत, (2) श्री या सौंदर्य, (3) फ़ना,
(4) यह लंजतारा या बामकेतु की व्याख्या करता है। आसमान से गिरती पूँछें बदसूरत होती हैं सूचक माना जाता है. (5)
इसे मलिका में जाजपुर कहा जाता है, अर्थात जाजंगार या कुन्तिगार।
(पंचसखा का विरचट पराठा चतुर्थ ए)
(6) अंत तक अर्थात युगांत काल तक

दक्षिण उत्तर पूर्व पश्चिम में बैसाखी (7) ।
इस सिद्धिगिरि पीठ में श्रद्धालु रहेंगे ॥
जाजपुर गाँव में, एक किताब होगी जो मेल खाती है ।
पद्मा भगत का नाम शस्त्रान (8) में मिलेगा. ।
दोपहर के समय कुछ बात करें ।
यदि तुम्हें मालूम हो तो भगत गोपन में छिपा होगा ॥
मेरी माया विधितिका माई(9) को जानो।
बहुत साफ़ और ताज़ा (10).
चलिए मैं आपको वापस बताता हूं ।
ज़मीन पर बारह तलवारें हैं।
जाजपुर में महामाई रोयेंगी ।
शबद में तीन राजी होंगे (12). ॥
फातिजेगा शुभखंभ (13) को पछाड़ दिया जाएगा ।
बबदरानी नदी अधुअनी धार (14) होगी.
(16) अत्यधिक प्रेम (15) कहा गया है।
आप इसका खुलासा नहीं करेंगे (17). ।
सत्यवादिता ही परम शांति है ।
गोविंद बॉयल युदुष्ठी (18) से पहले कैदी।
मेमने का बच्चा अनन्त ताड़ का मूर्ख है ।
महान मंत्री बुद्धिमान सुनकर प्रसन्न होंगे । 1199

इतिश्री भक्तिमुक्तिादक गीता ब्रह्मा नारद संपदे
श्रीकृष्ण युधिष्ठिर बोडने क्ययुग वड्डे कथने नाम 8वाँ पृष्ठ पूर्ण।

---

(7) साथ-साथ, (8) लिखना, (9) संसार की गति के अनुसार, (10) समाचार,
(11) मलिका में उल्लेख है कि यह एक 'संबल' गांव है, (12) श्रुख या आरिश
(13) सोमसुल्ही राजा ययाति केशरी द्वारा यज्ञ के उद्देश्य से जज्जर में बनवाया गया शुभ स्तंभ।
(14) इस रूप के वर्णन के लिए 'कल्किकल्प' के 31 श्लोक उल्लिखित हैं।
(15) गहरा हार्दिक प्रेम, (16) रहस्योद्घाटन, (17) 'सुधुर' शब्द का मोटा रूप।
(18) गिरफ़्तारी से.

नौवीं मंजिल

कुशकेतु ने कुमार को
द्रौपदी की बातें सुनने को कहा (1).
आसमान में धुंआ
पढ़ा जाएगा,
उस दिन से बारिश
कम हो जाएगी,
एक पौधा पूर्व
से पश्चिम
की ओर चला जाएगा,
वह तरल जैसा
दिखेगा (2) और
कोई उसे पहचान
नहीं पाएगा। (4)
वह उसकी गर्दन तोड़
देगा। जो मवेशी
न मिल सके वह मनुष्य
को खा जाएगा,
और वह थोड़ा सा
लिखकर भूख की
कठिनाई से बच
जाएगा (5)। (6) वह बहुत
कमजोर होगा,
निराशा की स्थिति
में होगा। (8)
घर की कीमत चौथी
मंजिल (9) होगी।

---

(1) नाथ, (2) प्रकाश, प्रकाशमान, (3) भण्डारा, (4) लक्ष्मी,
(5) छोड़ना, परित्याग करना, (6) लुप्त होना; बेहोश, (7) शाब्दिक अर्थ है अभिभूत होना, लेकिन यहां इसका तात्पर्य अत्यधिक भय के कारण चेतना की हानि से है। (8) घास या जस, (9) चुश्ती पान (पनक 20 गंडा)

गायें और बकरियाँ बहुत छोटी होंगी। वह
खाना खायेगा और दूध कम देगा ॥
चयनित दो गायें बच्चे देंगी ।
माही में जो नहीं पाया जाता वह चराचर है ॥
(11)नाद लोदा समय बिना जल बैंक। उस मंडली
में कोई मंत्री कहां नहीं मिलता? ।
(12) दाने में दाना नहीं मिलता।
जब रोटी पैसे के लिए बेची जाएगी, ॥
तो सभी राष्ट्र इस बैंक पर बैठेंगे। ।
ऐसा माना जाता है कि यह उत्तम भोजन है ।
महिला तीसरे बच्चे (13) को जन्म देगी।
एक हत्यारे को मार दिया जाएगा।" ।
राज्य, राज्य के रूप में उभरेंगे ।
चंडी तमंद मतिबे नमनस खाई ॥
जैसा कि ब्रह्मा ने कहा, नारद को लगा ।
कि बच्चा सदैव भक्ति के योग्य है ॥१९

रति श्री भक्तिमुक्तिदयेक गीता ब्रह्मा नारद संपदा श्रीकृष्ण
निनादि मतिक्षा युधिष्ठिर अग्मे नाम नौवां खंड पूरा हो गया है। ।

-जगन्नाथ दास

राजसी लेखन ही भविष्य है

जय अक्ष्मनि यदु बिहारी (1). (2) तेरे नाम की दृष्टि से तारिली
मैं सुजान जान के मैं वहां ठहरा था ॥.
पदचिन्हों पर हूं. वह हरि महिमा अत्यंत गुप्त है ॥

---

(11) घास, (12) सूखा चावल,
(13) इसी तरह का वर्णन अच्युतानंद की रचना में भी मिलता है - –
"एक से तीन पुत्र, मिलन की ओर देखते" - विज्ञानकल्प, 1 अ.
(1)बिहारी,(2)खतरे से।

उसने मुझे आदेश दिया. इसलिए मैंने महिमा को व्यापक रूप से फैलाया ॥
ब्राह्मणों में जन्मे, मुहिंग । जगन्नाथ मेरा नाम है ॥
जगन्नाथ एक शाश्वत मूर्ति हैं, शाश्वत अच्युत, इस सच्ची ॥
चमकदार शाखा की बाहों में खड़े हैं! सखा हरि के साथ खेलते हैं। ।
वायु पृथ्वी ऐप के नीचे का आकाश है। अच्युत नाम तेरहवें हैं ॥
जिनका नाम अजित है। भगवान शिव ब्रह्मा के सेवक हैं ॥
विवाह का अंक (3) है। सचिव का मायाजाल किसका है)[१०
अंगू जी, मुझे एक आदेश है। भण्डारू बूढ़ा हो गया (4) कि मैं ||
उम्र के अंत में खेल एक मैच होगा. ।
मैं एक शरीर की पाँच शाखाएँ हूँ, मैं पाँच शाखाएँ एक हूँ।
लीला बिहारी जगत सोदर. विनाश बहुत बड़ा होगा । ॥
जब-तब पति सामने आ जाएगा. बीच-बीच में खेल भी होगा. ।
धरती का बोझ सूख रहा है. रूपदे कल्कि गॉसिंग होंगी। ।
प्रकाश समूह में खो जाएगा. एकमात्र व्यक्ति जो सदैव जीवित रहेगा वह दास है ॥
सुज़ैन का असाधारण चरित्र (5) सुनिए। प्रभु प्रकट हो जायेंगे.
संसार का रचयिता, वह महान महिमा से परिपूर्ण है ॥
कला से पैदा हुआ । नाम है जो सदैव जीवित रहेगा 1190
शाखीय अंगों में प्रकट होना। जगन्नाथ उस एकमात्र दास का ॥
चित्तोला तच से पद्मबन ताहिन उड़े होंगे जगत जन ॥
नेमल बोलीं आचार ग्राम । ज्येष्ठ शूल पूर्णमामी का ध्यान करें ॥
से पद्मबन गुप्ता भूरांग। भक्तों के साथ रहना ॥
गोपाल समरसता में जलेंगे। वहां महिंगमा का खुलासा होगा ॥
एक दो शब्द साबित कर देंगे कि यह जटियाकुड है ॥
लिम्ब बूल ने कदंब ले लिया। दक्षिणी भाग में नरसिंह मुनि ।
पश्चिम की ओर अहिबोट शोभा है। पूर्व में घंटाघर है॥ ॥
चारों ओर पद्मबन बिहार की शाश्वत लय है, इसका ॥
सबसे अनमोल प्रमाण यह है कि मैं जानता हूं और मानता हूं। 30
सुबाहु द्वापर युग के अंत में श्रीजगन्नाथ ने ॥
कहा कि हम कलियुग में । शाखाओं में मेरा नाम अजीब है. ।
जन्म लेंगे। भीड़ से आदेश प्राप्त करें और लिखें ॥
श्रीमुख ने मुझे आज्ञा दी। कल्कि लीला लिखने के लिए ॥

(3) समर्थ, सक्षम, (4) लागत या व्यय, (5) चरित्र या बात।

क्योंकि मुझे श्रीमान् . मैं डेस्क के सामने बैठा और लिखा ||
के मुख से आज्ञा मिली है . मैं कितना कहूँगा, यह निर्धारित करो ||
झूठे खाने से खुल . सुरा अहार विनम्र होगा। ||
जायेंगे कई बुरे काम. सबसे अधिक अत्याचारी (6) अंतिम होगा ||
मातृहरण बालक (7) ढालुवे। संत कुमान भाषा में छुपेंगे। .
ओडिशा भुजिंग में मिलेगी राहत।° समय के साथ सुरनाई {8) ||४०
साल के जानवरों को बढ़ावा नहीं मिलता | जीवा नाशुथेबे गरिमा (9) पुस्तक। |
बड़े लोग नेट में जाएंगे (10)। नेट के लोग महान होंगे। वे हिंसक
अविश्वासी लोग बहुत होंगे | क्रोध में नष्ट नहीं होंगे ||
लोग शराब खायेंगे . उस समय जो बीज डूबेंगे, वे बुरी ||
तरह कुचल जायेंगे। राजुत कर्म नाथ किसका ||
जो लोग मिथ्या भाषा में रहते हैं वे . सच्चाई कोई नहीं जानता ||
भ्रम में पड़े हुए गुलाम कहलाएंगे . गंजाई नाचेगा ||
मछली, मांस और शराब खाने के बाद वे बम पूजा (11) करेंगे। |
नागांत सिख हरिनबे धन का भार बढ़ाएगा (12)। |
भाई-बहन फावड़ा उठाएंगे और फिर से मूर्खतापूर्ण ज्ञान निकालेंगे 1180
मजाक बना कर बिजनेस करेंगे ||
थोड़ा जानना बहुत कुछ कहेगा। महिमा को कोई नहीं जान पाएगा. |
गवाह शबद बशानिया दास (13)। जो बड़े होंगे उनकी ||
देव हबीरभाग (14) भुंजिबे जन. गीता संख्या नौ हजार तक होगी। |
भागवत पुराण जितना। कोई भी इसे पारित नहीं करेगा (15)। |
हिंसा, क्रोध और बुद्धि ही देवता हैं . गुरु वैष्णव निंदिबे जन ||
इस मानक से समय प्रकट हो जायेगा और ||
ब्राह्मण यज्ञ से वंचित होता है | आयु नष्ट हो जायेगी। |
उस समय बर उसव कुचरका विद्या . मेष (16) देश उड़ीसा होगा। |
शिक्खु सर्वोत्तम है . सभी प्राणी नष्ट हो जायेंगे. इस
समय आसमान में अंधेरा छाया हुआ है. प्रभु ऊपर उठेंगे. |

---

(6) अकर्मण्य, निष्क्रिय, 17} लड़का, (8) देवनदी यानी गंगा, (9) अभिमान, (10) नीच, (11) तंत्र (बामाचार) पूजा, (12) व्रत, (13) साक्षी के वचन के प्रति समर्पण करने वाला,

(14) हव्या अर्थात शुद्ध अग्निभक्षी पदार्थ, जिसकी देवता यज्ञ में पूजा करते हैं, (15) प्रतीति या विश्वास, (16) समुद्र,

शाखा अंगों में अभिव्यक्ति होगी. नाम उनका आखिरी होगा ॥
दास के रूप में नजर आएंगे हरिहर के बेनी येकांग रूप
धर्म में करुणा डूब जाएगी। उनसे आयु नष्ट हो जायेगी ॥
जब तक गार्डमालिया रौत्ती (17) दबाव में रहेंगे ॥
कोई देवता नहीं होंगे. ओडिशा के सभी १० ॥
कोई किसी को देख नहीं सकता. भक्त गोपियन होंगे. ।
असुर बड़े होंगे और शापित होंगे ॥
डेढ़शूर मैच 11 में खेल के लिए भाई-बहन की शादी होगी
दूसरे स्तर के आदमी को लेना। फिर होगा बड़ा अन्याय ॥७०
शबद बिना आवाज़ के लौट आएगा । कोई किसी को पहचान नहीं पाएगा ॥
कुग्यान की बुद्धि अपार है . शबद शून्य (18) से नकारा होगा। ।
वेद मन्त्र नहीं रहेंगे; तब। वधू सहेलियाँ ॥
कप नहीं बनेगा असाती होंगी ॥
दूसरी स्थिरता अपार है. इनमें नरखर भी होंगे ॥
(19) संत गोपयान होंगे। ।
जैसे ही यह मनुष्टि . अनाज मत बोओ ॥
काल प्रकट होगा, . ज़मीन बहुत अंधेरी दिखेगी ॥
प्रभु का उल्लेख होगा। (20) वह सुन्दर दिखाई देगा.
समुद्र से जय जय १० . सर्वगोपाल मेल करने गये हैं। ।
की आवाज उठेगी । जिसका अंतिम रूप अंगों से है ॥
इसी पुरुष से ब्रह्मा के विभिन्न शब्दों की उत्पत्ति हुई है ॥
वह हरि जटिया नगर का रहने वाला है . प्रभु की आज्ञा से पुनः लिखें ॥
हरि महिंगम ने अत्यंत मूर्ख जगन्नाथ को प्रकट किया ॥८

---

(17) किले में रहने वाले सैनिकों को (18) अवश्य रहना चाहिए ,

(19) 'कालगोक' शब्द से 'न', 'कालगोक' से 'न' बना है। इसका अर्थ है मोर. कौआ चाहे कितना भी मोर का रूप धारण कर ले, वह मोर नहीं माना जाता, उसी प्रकार कियुग के पंसद भले ही भेष बदल कर अपना श्रृंगार कर लें, वह संत नहीं माना जाएगा। (20)
स्थैतिक, गतिशील कीट-पतंगें।

बलिगांव दास की भक्तमालिका ॥

अध्याय बारह

भगवान पीथवास कहते हैं
पहले वह मार्कंड थे
उन्होंने मिथक लिखा
जितना दुनिया ने सोचा था
भतीजा हैली बाहन
सनेक ने मन ही मन सोचा
मैं जगत् का शरीर हूँ
सभी शब्दों में,
दिल में गोर सोचा जाएगा
ये चारों ही मेरे
नाखून काटते हैं
यह भारी-भरकम ढोल है
तुम जानते हो हम गिरेंगे
दुष्ट तो बीड़ी खायेंगे
लक्ष्य घर पर होगा
कट्टांडी बैठा है
यहाँ चित्रित सात देवियाँ हैं
दिली मरहट्टा
से जितना चाहो ले लो।
इसे ले जाओ
और इसे खा लो। "मशानी चंडी"
शहद मांस हो और मर जाओ ॥
वह जिस भी देवी को खाता है
दक्षिण से आपूर्ति (2)
झारखंड में हेंगुलाई
प्राची तट से खेती। आधी पुरी की चटकार
मनलासचंडी आयेगी

. मेरी बात सुनो बलिगांव के गुलाम!।
। ६ मेरा नाम जल गया ॥
. मैं उस समय गर्भवती थी
। ६ दोहिता ने (1) लिया और आत्मसमर्पण कर दिया।।
। जब तक वह याद रखता है, वह हमारा है ॥
। इसी तरह उन्होंने अपने प्यार में
। दोहिता को इफ जनम लव दिया ॥
। देख, ब्रह्मा नाम मेरा है ॥
। जो मन में छिपा है
। मंत्र साधना सिद्धारा ॥१०
। ६ मेरा नाम लो और दिन ले लो ॥
. पामर दुष्ट नहीं होगा ॥
मैं चंडी तमांडा उग्रसेन ॥
। बोंग काबिंग जेड तासिंग ॥
। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहां ॥
। खाते हैं, सर्वोत्तम चुनें ॥
मैं उसके साथी के साथ बरंगे में गया
. दुष्ट आएंगे ॥
।
. हम सच बताएंगे ॥
।
. गोधरा पीने के बाद वह मशहूर हो गए ॥
. बात करना आपके ऊपर है. ॥
मैं आपके पास आऊंगा ॥
. बकलिस से महामाई ॥
॥
। वह दिशा लाएगा ॥

(1) दुहिता, (2) योगिनी या योगिनी

बहुत तकलीफ . इस बार देवी का घर ॥
कैटबिश से जल गया । एक देवी है जो घूमती रहती है ॥
झानकाड से सुआंग तक । देवी की सीमा तक ॥
केकई, धोबा का गढ़ . स्वर्ग से चक्रबारा ॥
वह ऐसी कोई भी दिशा अपनाकर विजय । "पृथ्वी दुष्ट देवी के ॥
प्राप्त करेगा जो पाप की ओर न ले जाए । घर की तरह नष्ट हो जाती है।" ।
खाओ देवी रणभान । धरती पर जितनी देवी- ॥
देवताएं हैं, उतने स्थानों का बंटवारा किसी के मन ने नहीं किया है ॥
(3) शेर खूब खायेगा। . वोल्कम मैथिएथ ॥
मेरा भक्त 11 थावा नहीं जायेगा
पृथ्वी झूठा होगा . शिष्य गुरुओं को स्वीकार नहीं करते ॥
पाप विजयी नहीं होगा . नश्वर प्राणी हैं ॥
जब रेत शांत होगी । 340. नाम गुप्त रखे जायेंगे
तो भ्रम (4) उतना । बास तारकिथु अच्छा है ॥
ही बड़ा होगा । तत्के हेला चांचन ॥
श्रीकृष्ण ने श्रीचरणों . बालिगा ने कहा कि वह गुलाम हैं ॥
की राख सुनी, रेत ऊपर उठी और उनका शरीर कांप उठा ॥
सिर पर एक जोड़ी टोपी मैं प्रभु के पास गिर गया ॥
जय श्रीमधुसूदन! । नमस्ते देवनारायण ॥
नमस्ते जय जगन्नाथ । आप बोझ से दबे हुए हैं ॥
उनकी भौंहों पर बल पड़े । बोलना आपके ऊपर है ॥
जब मेलाकर । घोतिब योगमाया बल ॥
महासागर की लहर का आकार. दीनीपुर को निगल लिया जाएगा ॥
मुझे क्या दौड़ाता रहेगा? । या कहीं बच्चे को जन्म दूंगी।" ।
यह सात जन्मों में से बारहवां जन्म है ॥ . फ़ेदी (5) कहेंगे जगवर्रा (6) ॥
मैं यह शरीर छोड़ दूंगा । मैं साँप के कारण फिर लड़ूँगा ॥
श्रीषु से किसका जन्म होगा? । 6मेरा पिंड मोक्ष (7) कौन करेगा?
कम से कम तुम प्रबुद्ध हो जाओगे । तब श्रीचरणे, भगवान ॥
ब्रह्मा को पता नहीं था कि उनका शरीर चला जाएगा। ।
मेरा जन्म याहिंग ताहिंग में होगा। तब मैं अपने पैरों पर खड़ा होकर तुम्हारी सेवा करूंगा ॥
चार भक्तों का जन्म. बच्चन जी की बात सुनी ॥

(3) व्रत, (4) गोला, (5) फ़ेदी या खुला,
(6) जगत-वर्वा अर्थात संसार का पति, (7) मोक्ष।

सेफस से हो . दुगति (8) ने मेरी सील काट दी ॥
मैं बेनी हूं, गुलाम हूं । पेक संग या इनाली ॥७०
हमें दृढ़ पुरूष समझो । वह संभव ही पैदा नहीं हुआ था। ॥
पति के लिए अनुग्रह था . हां, प्यार कायम नहीं रहा ॥ ॥
वह भयंकर पीड़ा को जन्म देगा . मुझे लगता है यह संभव है. ॥
दास नायु ने आँसू बहाये महिजाम नीचे गिर गया ॥
वचन विना क्रोधित हुए डर के . खोया बुद्धि शरीर ज्ञान ॥
उनके पैरों पर गिर पड़ा ॥ (9) ॥
श्रीचरण ने झाड़ा झाड़ा . वह अपनी मां को ले गया (१०) (Г
बेनिकर उठ खड़े हुए . द्रहि चक्रधर ॥
अनेक जन्म फलदायी होते हैं । ६मेरा मन श्रीचरण के अधीन है ॥
शराब पीने के बाद उससे रहा नहीं गया । मधु मक्खी के कारण । ७०
प्रभु की दया ॥ । ब्रह्मा शाखा बन गये॥ ॥
वे अस्तांग के बारे में सोचते हैं . पति को पैर नहीं मिलता ॥
कोटिया अश्वमेघ . कोटि तीर्थ में स्नान करें ॥
यज्ञ का व्रत करने से . जिनके करोड़ों रुपये बेकार हैं ॥
तब श्रीचरण स्वरशा . ऐसा कहा जाता है कि ग्रीस ॥
हुँह वह दुनिया से तैरता है । अरबों मनुष्यों का स्रोत है ॥
हे प्रभु, यदि तुम यह मेरे लिये करते हो, तो मेरी शरण लो ॥
जितना तुम जानते हो, तुम गुलाम हो। जब आप धोखा देते हैं तो ॥ ॥
उठते समय काहिंग थुबी। । मैं आपका संगीत देख रहा होता हूं ॥
जन्म लेने के लिए कौन सी जगह है । कितने दिन में अक्ल आएगी? ॥Г०
कम से कम मंत्र तो मिल जायेगा मैं मूल मंत्र गाऊंगा ॥
पादुका मंत्र का निर्णय . श्री गुरुदेव का खजाना ॥
छद चक्र पंचाक्षर । यहाँ से चले जाओ ॥
ऐसा लगता है कि यह पत्र अनोखा है . ओकरा मंडल पत्र ॥
(11) . ऐसा लगेगा जैसे इसका जन्म हुआ हो ॥
यह एक लड़के का जन्म है . जन्म का नाम क्या है? ॥
जिसे दास या गुलाम (12) कहा जाता है। . कियुगा का नाम क्या होगा? ॥

---

(8) दुर्गति, (9) चाटी, (10) मस्तान, (11) मुस्ता, (12) जो कवि प्रेम में था, वह आराध्यदेव की शरण में चला गया और उसने राधावश्ती को अपनी पत्नी के रूप में धारण किया, जिसका अर्थ है भगवान के चरणों की दासी या दासी।

नौकरानी की माँ पिता है }नाम को शरीर रहने दो ॥
जिसका जन्म किस गाँव में होगा, इ ज्ञान उदये त्रय बुद्धि ॥
उसकी भक्ति उस पर निर्भर करेगी । फिर समस्या आने पर (13)90
लक्ष्मी आप पर मेहरबान हैं . प्रभु प्रसन्न हों ॥
तुल्सी जगन्नाथ ने एक। 1 और कुछ नहीं देना है ॥
भक्त के रूप में सेवा की . भगवान श्रीचरणे मो मति यदि
जन्म लेने की जितनी आयु होती । मैं भी आपके जैसा ही हूं ॥
है व्यक्ति उतना ही भावुक होता है। मनु समशाई मेरे प्रिय हैं ॥
गुलाम गुलाम बन गया . निर्भय होकर उनके चरणों पर गिर पड़ा ॥
उठो और इसे अपने सिर पर . द्रहि आदिम है ॥
रखो। बारहवाँ अध्याय अंतिम शरण शेष है, वह दास ॥
भक्ति मालिका ये चरित्र . इसे सुनकर गात्र पवित्र हो गया "
ये गीता नित्य जे लखलाव . किफाश से उन्होंने ॥१००
श्रीवतमालिका गोपत गीता को तैराया, हरिदास का नाम द्वदसोबचया है। ।

सालबेग की किली इंडिया

अध्याय छह

इनि नाम के दीनबंधु नीलगिरि छोड़कर दरिया में रहने लगे
जो भगत ने दिया-ईसाई, मेरा राम ॥
ब्राह्मण ने अन्याय किया, भगवान का अपराधी बन गया कि भगवान ।
ने नीलगिरि छोड़ दिया, वह मेरा राम। ।
काया का जन्म गोदावरी के तट पर अष्टगढ़ में हुआ था
जगन्थ को जानने वाले मेरे राम की बात ।
सुनो जगन्थ बड़े भाई, प्रभु के रूप में उन्होंने जन्म लिया है
वापस नंदीपुर में, मेरे राम जे। ॥
तैंतीस कोटि देवल, पश्चिम कुल्ल में जन्मे,
भगत के रखवाले, वही मेरे राम हैं ।

उल्लेख किया है अभिमन्यु, गोपालकृष्ण, हदीदास और भीमभोई की रचनाओं में समान विवरण हैं। (13)दर्शन.

चौदह कोटि कंतनि (1) चौदह कोटि कंतनि (1)
चौदह कोटि कंतनि (1) चौदह ।
कोटि कंतनि संसार सुनो मेरे राम, संसार
मिथ्या माया त्रिगुण ।।
से भरा है, कि संसार महिमामय होगा (2),
मेरे राम, जो संसार में रहेंगे, ।
भेड़ें मर जाएंगी, कि देवी गर्भ में गिर ।
जाएंगी, राम, जो दुनिया ॥
की सुनेंगे, राधाकृष्ण के चरण सुनेंगे,
उत्तराखंडे जनम, मेरे राम [[14
कि उत्तर में ब्रह्मा हैं, पूर्व में श्रीजगन्नाथ हैं
कि वह देखते रहेंगे, कि ॥
मेरे राम ने भगवान, ब्रह्मा को आदेश दिया
था। महेश्वर के सभी ॥
लोग दक्षिण दिशा में हो, भगदान, जो
मेरे राम की आज्ञा हो, देकादेवी, ।
तुम भाटा सहन करो और चौदह कर खाओ, मेरे
राम जो भगत के पास नहीं ॥
जाएंगे, सब कुछ नष्ट नहीं होगा, तब पृथ्वी ।
असकन (4) होगी, मेरे राम। ।
भगवान ने आदेश दिया, मेरे राम कि] जो
पशु भाग्यशाली है, सूर्य हरि ।।।
के चरणों में प्रवेश करेगा, वह देवी के मुंह
में नहीं पढ़ेगा, मेरे राम, जाजपुर ।
के स्थान, वहां कोई नहीं होगा जो थिर
के स्थान पर जाएगा। किशोर, मेरे ।
राम। भगवान ने आदेश दिया, मैं मर जाऊँगा। ।
तुम नीलगिरि में रहो, मेरी पुत्री राम। ।

---

(1) कात्यायिनी शब्द का मूल प्रयोग। इन गायकों को योगिनियों का अंगरक्षक कहा जाता है। हीरापुर के प्रसिद्ध तांत्रिक मंदिर में चौसठी योगिनी मंदिर और नवकोटि कात्यायिनी की मूर्ति है। (2) ऐश्वर्य, प्रसिद्धि या प्रसिद्धि। (3) बुललीपति से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है पापी, बेचैन, बेचैन, बहुत दुष्ट, (4) आसान, (5) मैच > मैच > मैच > मैच

श्री मुख का भाषण सुनो, चौदह अंक बनाकर सिद्ध करो ।
परिबेटी दिकाजाना, मेरा राम जो । ॥९०
वास्तव में पृथ्वीवासी होगा, श्रीनीलगिरि या भगवान आएंगे और
कैवल्य जूरा (6) बन जाएंगे, मेरे राम जो होंगे ॥
पंद्रह मिनट के अंदर नंदीघोष रथ निकलेगा
प्रभु गुंडिचा नवा जाएँगे, मेरे राम। ऐसा कहा
जाता है कि दुनिया को जानने वाला हर कोई इसे सुनता है
राधाकृष्ण के चरणों का ध्यान करो, मेरे राम वो 23

इति श्रीमद्भगवत-गवत महापुराण शुक परीक्षेत सासव
नाम कियुग प्रबंध छठा अध्याय " ।

दीनकृष्ण दास का
यूआईटी फ्यूचर चुतिशा॥

नीलगिरी का क्षेत्र अनिवार्य रूप से टूट जाएगा ।
दूध और शहद की लौकी फूल ॥
जायेगी, और गला भी सूज जायेगा ।
हरि गुना फेडा मिशा ओडा की स्थिति में हैं ॥
शहस्त्र (1) धर्मशास्त्र की बात कर रहा है ।
सच को छोड़कर झूठ बोलने की क्या जरूरत है? ॥
वह धर्म से अधर्म की ओर फिर जायेगा ।
तेरहवें वर्ष में जो लोग होंगे ॥
उनसे डरना बहुत कम होगा 1
संत के साथ आंदोलन फल देगा, पथिक ॥
डूब जाएगा, हिंदू धर्मग्रंथ दब जाएंगे। ।
6 वैश्य शूद्र क्ष जाति का निषेध नहीं होगा
लिंगबुडा और कितने भिक्षु संगीत का प्रदर्शन 1 ।
कर रहे हैं, कुजंग से लोग आते हैं । ॥

(6) हस्तक्षेप नहीं करेंगे।
(1) धर्मग्रंथ.

रात्रि के
समय हरिगोल
की
ध्वनि सुनाई
देगी। धन
कमाने वाला
कोई भी व्यक्ति
अवज्ञाकारी
नहीं
होगा और उसे उसके
खो जाने
का डर नहीं
होगा।
पूर्णिमा के
दिन कोई
समस्या नहीं
होगी। उसी
समय, राजा
नीचे चला
जाएगा
और प्रजा
अमानवीय हो
जाएगी। आदमी
लिखित
में हस्ताक्षर
को नहीं
पहचान
पाएगा। दास
कहेगा कि
लकड़ी गंदी है।

(2) फूला हुआ, (3) लीला, (4) विस्फोटक या दमनकारी, (5) नंगा।

धोखेबाज मूलक ।
चद्रम को धोखा देंगे (6)
और धोखा देने वालों ।
को नहीं पहचानेंगे ॥
(7) भगवती ।
चिठोत्पला के तट पर खड़ी ॥
हैं इससे पहले कि ।
आर्कबैट लोगों को
खा जाए (8)। ।
अमरावती टूटे हुए दिल ॥
के साथ पैदा हुई है ।
और उसे यह नहीं पता है। ॥
वह प्राचीन नदी के तट पर
छिपा रहेगा। शेर ।
को छोड़ने के ।
बाद, वह गाएगा और गाएगा। ॥
उसके बाद, चंडी ।
गांव में मदीबे ।
बांधी खाएगा। चाकी
गीता भागवत झूठा है ॥
जो एक पेट से खाता ।
है और पीता है ॥
और चीनी के बारे में ।
बात करते समय मर जाता है। ॥

---

(6) चंद या कपाट, (7) बेदी अर्थात घिरा हुआ, (8) स्थान विशेष
(9) हाटगोल, (10) ज्वाला।

दीनकृष्ण दास का'

भविष्य बौल चौतिसा ॥

यह एक अजीब कल्पना है ।
(1) 6 कम फाइबर.
लोग समूह में गोमांस खाते हैं. खाएं और
छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें 6 कम ऊन.
गंगा को पांच शून्यों में बांटा जाएगा ।
मणिकर्णिका में गुप्तनदी तीर्थ कम ऊन १।
होगा (2) उड़ीसा आकर भेड़ ।
चराओगे जो नहीं मिलेगी। 6 कम फाइबर.
उचुआ मैदान ।
में होंगे 6 कम ऊन १।
किसान चोर बन जायेंगे ।
यदि आप खेती नहीं करते हैं, तो पहला कदम उठाएं 6 कम ऊन.
छटिया गांव अमरावती, जो ।
कटक छोड़कर चाका जगन्नाथ ले गये 6 कम ऊन १।
जगतसिंहपुर उसी क्षेत्र में है ।
सुरक्षा बल वहां मौजूद रहेंगे 6लो बौल।
झार वन में झार प्राची केशव ।
गोमुखी परिजने दमन के तने कम ऊन.
निंदिबे ब्राह्मण आदि थपना (3) उच्च। ।
ब्रह्मवेत्ता में देवता कीट खाये जायेंगे ॥ 6 कम ऊन.
कुम्बी पटुआ खींच-खींचकर, ।
वेदकर्म छोड़कर अकर्म करके मर जायेगा 6 कम फाइबर.
धोखेबाज़ धन देखने में चतुर होगा। ।
ओडिशा के निवासी धोखेबाजों को नहीं पहचानते 6 कम फाइबर.
बैल पुकारेगा, हिरण शून्य में ।
पुकारेगा, महापुरुष अज्ञान में मरेंगे 6 कम प्रतिस्थापन.

---

(1) अयोग्य, अधम, (2) काशीर का मणि कंडिका घाट एक प्रमुख तीर्थ स्थल है, (3) मंथा।

जाम (4) को सुबा (5) द्वारा तोड़ दिया जाएगा और कैद कर लिया जाएगा।

ढेंकनाल जमीन में गिर गया, बुद्धिमान भक्त | 6 कम ऊन!
अभ्यकत (6) अभ्यकत (7) हमने ऐसा किया। रक्षाहीन
जमींदार को डूबने की अनुमति है | 6 कम ऊन.
तांती तुलाविना से पहले तांतीनेब ।
सूबा ने उसे मौत की सजा सुनाई थी | लेफ्टिनेंट कपास,
थानी मकदम (8) कितनी ।
।बासुक्ति ली जाएगी चोर | 6 कम ऊन ।।
कुंजकुटी जंगल कुजांग देश में है ।
दीबा रची रास आधे दिन का होगा | 6 कम फाइबर.
धबलेश्वर धबल पर्वत पर लिंगशक्ति ।
द्रोण का सूत्र धारण किये हुए हैं | 6 कम ऊन.
नवतीर्थ में जाकर गादी ने किया है ।
नीलगिरि परीक्षण में, महामंत्र वेदी पैता | 6 कम ऊन.
द्विप में नेब सुबा को ले जाएगा ।
(9) | 6 कम ऊन.
खेत (10) जग में लूट टैक्स होगा ।
फंदिया (11) एक ऐसी जनजाति है जिसे लूटा नहीं जाएगा | 6 कम ऊन.
विकैब भट रांधी सुबा ओडिशा ।
विवेक कर नथुब चूब पैनी | 6 कम फाइबर.
अच्छे लोग घर में भोजन करेंगे (12).
हर कोई एक पैसे में एक मुट्ठी चावल खरीदेगा । | 6 कम ऊन ।।
नवाब (तेरहवाँ) सूखे में जुटेंगे। वह
मुगल अभियान का गौरव होगा | 6 कम फाइबर.
अनावा यमदग्नि पुद्र (14) के ।
आंसू होंगे जो जम्बू भरत तीर्थ में उगेंगे।। | 6 कम फाइबर.

---

(4) अभिमान, (5) यहां सूबेदार का अर्थ प्रांत का शासक है। (6) बहुत खुला, 17) निजी, खुला, (8) स्थानीय ग्रामीण, (9) जंगल में, (10) खेत, (11) किसान, (12)। वहां खाली पेट खाना खाने वालों की जाति नहीं मानी जाती थी और उन्हें "धोखेबाज" कहकर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था। (13) उर्दू शब्द शुशवाज़ शसज का, (14) परशुराम का द्योतक है

बरभुजी जमीन पर बैठे हैं ।
(15) वह पापी गलगाज़ी को कभी नहीं रखेगा 6 कम फाइबर.
(15) ग्रीष्म वृक्ष (16) संगीत के कारण 1
नीलगिरी की महिमा तक बढ़ जाएगा। कम फाइबर.
बाणासुर बाणपुर की सीमा से निकलेगा, ॥ ।
पवन असंख्य महिमा से भरा है ॥ 6 लो बाउच.
शारदा मंडल टूटेगा ब्रह्मआकार ।
शारदा जनम को प्यारा लगेगा परशुराम का 6 निचला पानी।
खेत, देश में खिलेंगे सरसों के फूल ।
साईं साईं सूबा बुलि अकेले, लोग । कम फाइबर.
सच्चा धर्म छोड़ कर वीरान हो जायेंगे ।
सात रांदे डांडे घूमेंगे फालुंगा (17) । 6 नीच लड़का.
हरिहरपु में निकलेगी महामायी यात्रा । ।
झील की प्रगति सूखी है ॥ कम ऊत.
चचंद्र (18) बौल चौतिशा जे अगाती। ।
चार दिनकृष्ण दास निगम भारती (19)। 6 कम फाइबर.

शिखर दास की नीलसुन्दर गीता ॥

अध्याय एक

गोविंदा ने कहा, सुनो प्रभु, हमने क्या पूछा है, ज्ञान का ।
संदेश बताओ, जिससे भूत और भविष्य तुम्हें समझाया जाएगा। ॥
मैं कलियुग के सामने बलराम वेदिपति के साथ ।
नीलकंड में बैठूंगा और मैं लक्ष्मी सरस्वती ॥
बेनी प्रियावती का आनंद लूंगा जो मेरे चेहरे ।
पर मुस्कान के साथ मेरे पास खड़ी होंगी। ॥

---

(15) गले से गर्जना, (16) एक पौराणिक वृक्ष जिसमें अर्जुन अज्ञात वन जीवन के दौरान वह अपना धनुष-बाण छिपाकर रखते थे।
(17) दुष्टता, (18) विलासिता, (19) वाणी।
(1) मौनावती के पति अर्थात गरुड़।

चार लाख बत्तीस हजार वर्ष
सुखों से भरे
नहीं होंगे, अट्ठासी
वर्ष का जीवन फिर से जीया
जाएगा, और एक हजार हजार
राजाओं को सुख मिलेगा।
पूजा हिंग को पांच
भाइयों की तुलना मिलेगी

o o o

गोविंदा ने
कहा, सुनो
फाल्गुनी युग।
अर्थात् अभिमान
होगा, ज्ञान
नहीं होगा और
शिष्य गुरु
पर विश्वास
नहीं करेगा।
बिना भाषा
जाने शुरू करो। पुराण
उनकी निंदा
करेगा और सदन
में ले जाएगा।
दिन के अंत
में, किसान खेत
जोतेगा, पृथ्वी
के देवता महान
मूर्ख बूढ़ी
औरत ब्राह्मण
का सम्मान
नहीं करेंगे।

(2) इंच, नेंच, निच, (3) बेखानिबे, (4) भाई, (5) जहर।

वह जल में नग्न होकर ।
स्नान करेगा और विष्णु से ॥
कहेगा और उसका हृदय
विचारों से भर जाएगा (6)। ॥

o o o

क्षत्रिय ।
पीछे ॥
मुड़कर ।
मर ॥
जायेंगे ।
(7)। ॥
जैसन ।
की तरह ॥

o o o

ओडिशा के लोग ।
खुश होंगे. ॥

महामुनि बेस का भविष्य पुराण

अध्याय 3

कादंबरी भोला कहते हैं। सुनो देवी मेरी ॥
वाणी अक्षय होगी. वहाँ बहुत से हाथी होंगे ॥
उत्पादन में अपराध . रमन दूध नहीं है ॥
ब्राह्मण करियै (1) होगा। . दत्त खीरात (2) कट नेक!
पुरुष को आगे बढ़ाओ । उसे खाने दो ।
शिया बरशा ब्राह्मण हँसेंगे ॥
में पुरानी आवाज पढ़ेंगे । संध्या गायत्री पारण करेगी
ऐश अमानिया (4) शूद्र योनि . (3) शराब पीना । वह तुम्हें ॥
द्वारा जोगिथ है १६ जल्द ही मार डालेगा ॥

(6) आकाश, अहद, (7) दुर्बल, (8) दो योजन अर्थात् आठ कोशों का स्थान। (1) ऋण, व्यापार, (2) एकमुश्त एवं शाश्वत दान, (3) धूम्रपान। (4) ऐसी चीजें जो गरीबों के लिए अभिप्रेत या आनंदित नहीं हैं।

शंभुशिर पानी नहीं देगा . अपनी भाभी के पास जाओ
मेरे भतीजे की . रात में नोइहेबेटी दुशा (5) बी।
हत्या का कारण क्या है? . माँ से शराब छीन ली
बच्चे की हत्या, महिला की हत्या . मेरी मौत नहीं होती
इस प्रकार आठ से ग्यारह तक . वह धर्म नष्ट हो जायेगा.
की संख्याएँ दिखाई देंगी . दोपहर डेढ़ बजे लिखना
तीन पैडमैन गोल होंगे . (6) ब्रह्माण्ड नष्ट हो जायेगा
अन्ना मुश्किल से मरेंगे । ठुकाई बाघ के हाथ में पड़ जायेगी
यह हुरीकुरी होने जा रहा है . यदि तुम मर जाओ तो अपने आप को मार डालो
डेढ़ साल से ऐसा ही है . किंग आखिरी नंबर होगा
येरा के आंकड़े के ऊपर . गोदावरी के तट पर जन्मे
गंगा गौतम का जन्म लीला जगत में विख्यात है।
विग्न्तिकम के घर में हुआ था नादिया नवदीप आद्या।
जगन्नाथ के दो तरफ . शंख चक्र हाथ पकड़ें
से दो भाई पैदा होंगे। राक्षस का पीछा करना (7)।
खड्गिरि पर पहरा . सोने का घड़ा उंडेला जाएगा
संत छत्रधारी . वहां से हम पुर्जे
राजा होंगे पकड़कर आनंद से उठाएंगे ।
चौदह अंकीय कुंभ मास (8) यहां खड्ग प्रकट होता है
यहाँ यह (9) होगा. किम्पा ध्रुव एक मादक पेय है
हम दुष्टों के सबसे (10). आपसे पहले मशहूर. हम सुजान
गुप्त हमलों को रोकेंगे । जाना का ख्याल रखेंगे
हल . हम दुष्ट ढोले को मार डालेंगे ।
जब शरीर पर चोट लगे तो . जाजपुर के क्षेत्र में. साबुत
गोहिरी में टिकिरा मारो अनाज का सेवन किया जाता है ।
यह जानते हुए भी कि यह सत्य है . एक महान आज्ञा मात्रा
ऋषि समझ जायेंगे. पसंद (11) वापस (12) एल मिलेगा ।
यह नदी . दुष्ट नष्ट हो जायेंगे
की नदी है पैडमैन के शिष्य व्यास कहते हैं।

श्रीभविष्य पुराण में तीसरा नाम रेवती बलभद्र है अध्याय दो

---

(5) दो, (6) तोड़, (7) राक्षस, (8) फाल्गुन मास, (9) फा—'डील' से, राज्य का मुख्य सचिव, (10) संगीत, (11) निडर, क्रूर, (12) विरोधी।

बाल दासों का इतिहास

अध्याय आठ

रुक्मिणी उवाच:

रुक्मिणी गोसिंग कहती है • . ये कल्कि भागवत् हैं ॥
(1) पुरुषों द्वारा. मान लीजिए पुनीशर ॥
श्रीवासुबेबोबच:
सुनो, प्रिय, प्रभु कहते हैं 1. मासिक धर्म के लक्षण। "।
वह नीचों पर हँसेगा . लड़का अपना बेटा खो देगा ॥
कोई महिमा नहीं है . इसे कहाँ पहनना है? ॥
अधर्म मूर्खतापूर्ण होगा . माहिरा खाना खाने जाती है ॥
बहुत सामान्य (2) माही होगा . जो भाई अपने भाई को खो देगा. ॥
ऐसा जरूर होगा गुरु के लिए अनेक कष्ट होंगे ॥
अपने मुँह से बात मत करो । वह अब किसी का नहीं रहेगा ॥
ये शब्द घर पर करें सज़ा से भी मत टूटना "।
फिर से अपने आप बनो । जान लो कि राजा मूर्ख होगा "।
नीट मीटिंग में बैठेंगे . सुनो रुक्मिणी, मन शांत ॥
बच्चे बूढ़े पर हँसेंगे है. माँ बेटे की बात नहीं मानेगी ॥
भाई भाग में हनहनी . वह कह रहा है कि वह अपने पिता को मार डालेगा ॥
साहू ते आशा दिअथ । कहने से निराशा होगी ॥
कर्ज को चार गुना कर दो . मूर्ख पापी इसे ले लेंगे ॥
वह जीव दोहरे नरक में गिरकर चला गया "।

रुक्मिणी उवाच:

रुक्मिणी कहती हैं कि गोविंदा . मेरे मन में द्वंद चल रहा था ॥
ने प्राणी की आशा तोड़ दी है . उसे चूमो ॥
समय ने आशा क्यों दी. पूछा कि नहीं सुना ॥ ॥
श्रीकृष्ण कहते हैं जाओ सुनो . वह जानवर वास्तव में भ्रष्ट हैं ॥
ज़्यादा मत सोचो. बुद्धिमान बनो और खाओ. उसका शरीर ॥
गुरु निंदुक जो नहीं है छिन्न-भिन्न हो गया ॥

(1) शिष्टाचार, आचरण, व्यवहार, (2) अशोभनीय, कुरूप

वह जन पिता भक्त है (3).
वह जन माता उस निंदा विष्णु
पद्मना की निंदा करती है
कि कोई भी भक्त सोता नहीं है!
रुक्मिणी
की बात सुनो
शासाई हल पकड़ेंगे
एडोज़े चिशुथेबे मारी
उसे जानो और मर जाओ
रुक्मिणी के मन से जीव
पापमय मन की बात सुनेंगे
भक्त को कष्ट होगा, मैं
जानता हूं मैं इसे सह लूंगा
साधु के लिए शरीर धारण करना
मुलिया दगध (5)
तोड़ेगी मोर्चा
बिना सेवक के दर्शन
मैं ऐसा राजा नहीं बनना।
चाहता जो सुनता न हो
वह दुखी
होगा
संसार के अंत तक मेरे
भक्ति गुणों को सुनो
सब कुछ त्याग देता है
वह दुख को खुशी के रूप में
देखता है और बॉलरूम में जगह पाता है

. विष्णु दोरेहा (4) निश्चित हैं
मैं रतालू को नरक में फेंक देता हूँ
। अपनी उम्र जानें
. उसके लिए राजदंड
। यह बहुत भारी है
. नर-नारी इच्छानुसार
। भैंस एक दिन जोड़ेगी
. तो उसे हैरी को सोचना
चाहिए। निम्न वर्ग परेशान रहेगा
. उसे रोटी नहीं मिलेगी.
. कल्कि निन्दबे गो सही
. दुष्ट बुद्धि नष्ट हो जायेगी.
. वह दुष्टों का नाश करेगा.
शिशु का रूप धारण करना
जो राजा छोटे-छोटे रत्नों का
मूल्य चुकाएगा, वह कर 1 1 लेगा
. दिन कष्ट में बीतेगा
. चालिन (6) करिजा (7)
. अगर तुम चाहो तो जाओ
. सारा राज्य राजा
। के सामने पड़ा रहेगा
। गोबर का कीड़ा
। मुर्दे की माता है
. दिल में बीटा
मैं मेरा नाम मुखिया है
मैं नि:संतान हूं

इति श्रीक भगवदे महापुराण
रुक्मिणी बासुदेव वश्यथा नाम ओंमहामेध्याय।।

---

(3) लालची, बेवफा, (4) विश्वासघाती (5) जलता हुआ, जलता हुआ, उग्र, (6) क्रोध में, (7) महिमामंडित, धमकी देने वाला।

बैकृष्ण दास का भाग्य ॥५

अध्याय एक

पूरा सर्कल एक जैसा नहीं है. मय्यदं
द्रष्टां जेण तममे श्री गर्बे नामा॥!

बंदै देव लंबोदर . अंकुश बेनिकर का पाप ॥
सतह सुंदर है । गज बदन गुरुवार ।]
6 नारायण, मेरी गर्दन पर बैठो । मैं पूरी भविष्यवाणी बताऊंगा [.
जो आपको खूबसूरत बनाता है । आखिरी दुःख ने उसे छीन लिया ॥
6 आपकी हथेली हमेशा चिंता में रहती है । "एक भी धड़कन न चूकें।" ।
बंदाई देव जगन्नाथ । शंख शारंग चक्रहस्त ।
दक्षिण सागर के तट पर कैंसर (1)। ॥
बैकुंठ का रास्ता खुला है . स्वर्ग का द्वार ॥
श्रीनीलगिरि है । क्योंकि विजय भावुक हैं
जिस पर प्रभु विश्राम करता है। चार भक्तों द्वारा
एक भक्त के रूप में, । भक्त बचाता है ॥
भगवान हर दिन भगवान नहीं होते . एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करके ॥
लकड़ी की ड्रेसिंग . शंख को भूल जाना चाहिए ॥
त्रिकल्प ने हाथ में। . दिल से बारह साल का तेंदुआ ॥
पत्र लेकर उत्तर दिया । मन्द जयजगन्नाथ। ॥
बालिगाओ दास को घर पर (2) प्रवेश करते समय।
बालिगाओ) दास कहा जाता है । मैं यहां आपके पास हूं ॥
उचे हरि फिर बुलाता है । दरवाज़े की घुंडी पकड़ता है ॥
दाँत गिरना। वह वर्तमान रूप में है और ॥
मेज पर नौकर को देख रहा है . कालेब में निनिवेमुथ (3)। ।
देखो असाधारण रूप, । गुलाम के चले जाने के बाद ॥
सुनो द्वार क्रांति . विजये मो पुर का क्या अर्थ ।
गुलाम बटन पर भगवान है? कोमल आवाज कहती है ॥
जहाँ तक मैं गया. (4) "तुम्हारे ।
6घर का अंत।" । चलो खाते हैं ॥

(1) समुद्र, (2) निमिश्के, (3) बादल, (4) पेट।

दास की बात सुनो । कहकर, बीपीआर ने इसे पढ़ा ।
६ मेरी छाया गरीब लोग हैं. सेवकु नुहार भजन (5) ।
किनारे पर नीचे की ओर मुख करें . बाउरी बोलाई का जन्म हुआ है ॥
मेरे घर में रोटी देना बिताला (6) मैं ब्राह्मण बनूँगा ।
बजरी ने घर में रोटी खाई . गोसायु व्यर्थ हो ॥
भक्ति भावुकतावादी है जायेगा। "सुनो," नौकर ने कहा। ।
मेरे पैर अच्छे हैं मैं उसके घर पर खाना खाता हूं ।
मुझमें कौन नहीं सोचता । ६ मेरा दिल उसके साथ नहीं रह सकता ॥
जैसे ही नौकर ने ये बातें सुनीं । उन्होंने कहा कि यह एक पब होना चाहिए ॥
दास की बात सुनो मूर्ख मूर्ख ।
जेमंता तेजी से चला गया। एक गठरी में बिखरा हुआ ॥ ॥
इसके बाद नवीन बसरा । सावधानी से निचोड़ा ॥
(7) ने भगवान को बैठाया । आनंद को कौन कह सकता है ॥
६ मेरा जीवन धन्य है . मैंने दोनों पैर देखे ॥
वह बहुत उत्सुकता से दौड़ा ॥ । वह नंगला के पेड़ (8) पर चढ़ गया और ॥ ॥
बेनी भाग गया । शास्त्र (9) में अपना सिर खो दिया। ।
सब कुछ कट गया ॥ प्रभु को सौंप दिया॥ ।
प्रभु को समर्पित हो जाओ । तोश का ॥
उसने बेनी पाइड को निगल लिया । दिल टूट गया ॥
वह कहते हैं कि संसार । हे सेवक, मेरी आवाज सुनो ॥
का प्राण मेरा मन है । फिर मकान बनेगा ॥
तुझे स्वर्ग की वह दौलत । मैं नष्ट हो जाऊंगा ॥
मिलेगी कि नौकर बातें सुनकर मुस्कुराए और धीरे से बोले ।
हाथ में कागज . क्योंकि विजया नरहरि ॥
भगवान एक भक्त के रूप में . बचन ने गुलाम खोला। हम जो ॥
कि तुम मेरे संगीत हो करेंगे उसका विस्तार करें। ॥
गोपीनाथ ने हाँ कहा 1 लिखावट पत्र दिया, हाथ में ॥
रेत। नौकर चिल्लाया. बेनी ने पानी में पानी मिला दिया ॥
(10) बौरी में हे भगवान, इसके विपरीत कहो 1
टकराव हुआ । लिख नहीं सकता ॥

(5) वजन, योग्य, (6) कृषक, जातिहीन, (7) वस्त्र, (8) नारियल के पेड़, (9) हथियार, (10) उपलब्धियां।

हर कोई हंसेगा । वह मुझे डांट रहा था ॥
बोलिबे ये चार बावरी . भबीश (11) का एक भक्त होना ॥
जितना संभव . वह धर्मग्रन्थों की निन्दा करेगा (12) ॥
भगवान हँसे . आपने जो कहा उसका प्रमाण.।
तुम एक धनुषधारी होगे । उनका जन्म बौरी में होगा ॥
जैसा भगवान ने कहा . बोइले बचन. ॥
ध्यान से सुनो दास! तुम एक कवि हो ॥
सबसे पहले, जितना संभव हो उतना राजा। . कृपया इसे लिखिए। ॥
श्रीरुरोत्तम के मामले में मोचन मंडप वहाँ है ॥

o o

ओडिशा बहुत सक्रिय है (13)।। लोग नष्ट हो जायेंगे ॥
दबाव रेखाएँ अप्रत्याशित हैं। । परजा दुखी होगी ॥
वह अपने दिन दुःख में बितायेगा। . देश में न रह पाने के ॥
राजाओं ने देश छोड़ दिया । बाद भी राज्य बचेगा ॥
कुछ ही समय की बात है। यह . लोग सारी किताबें ले लेंगे ॥
सुनकर बालिगाओ दास हंस पड़े । सुनो ब्रह्मराशि ॥

o o o

श्री भगकाल इकर:
भगवान भगवान . कियुग धर्म लक्षण ॥
कहते हैं कि जीव की । नाना कुमार से मुलाकात के बाद. उन्हें ।
आत्मा ब्राह्मण, ब्राह्मण, आत्मा की गति का पता नहीं चलेगा ।
ब्राह्मण, . उस पर शर्म आती है ॥
ब्राह्मण, ब्राह्मण, ब्राह्मण, . इसे नीचे ले जाओ. ॥
ब्राह्मण का मन है। शूद्र हरीब उसे ले आये ॥

o o o

उग्र क्रोध में, भक्त । दूसरे लोग काम करते हैं ॥
(जानवर को मार डालेगा, भगवान । वह शराब में दिन गुजारेगा ।
(की पूजा करेगा और । शराब में डूबा हुआ ॥
ब्राह्मण त्रिसंध्य को छोड़ देगा। . शूद्र थोड़ा पैर हिलाएगा ॥
डेढ़शुर रायबोहर . आलसी मत बनो ॥

o o o

---

(11) भविष्य, (12) शास्त्र, (13) बुराई का साहस।

मिथ्याहिंसा माया	।	एक का दूसरे का दृष्टिकोण	॥
मोहन जिए, मरेगा		. संत को देखने से दंड मिलेगा	॥
दुष्ट आचरण करेंगे		. धर्म छूट जायेगा. चाहे।	॥
दवाइयां पहचान नहीं पाएंगी		झूठ ही क्यों न हो, वे दवा ही कहेंगे	॥
प्रतिग्रह द्वारा ब्राह्मण (14)।		. विश्वास मत खोना	॥
o	o	o	
धर्म शासक की बात नहीं मानेगा		. तो थोकाय नैश शरीर को	॥
जो शक्तियाँ हैं वे छिपी हुई हैं		लूटने के डर से 1 जाएगा	॥
बड़े दुःख में कुछ दिन लगेंगे		. सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ	॥
धन के लिए चोर	1	प्रसिद्धि मिलेगी	॥
o	o	o	
ईमानदार रहना	।	धन से भरपूर	॥
o	४	o	
नाम मत सुनो	।	तुम नरक में गिरोगे	॥
पुरुष आनन्दित होंगे ।		. रमीबे परजा, जो एक स्टाइलिस्ट	॥
राजा सब कुछ ले जाएगा।	।	हैं, दुखी होंगे	॥
o	o	o	
काल्पनिक भगवान कहते हैं		. ध्यान से सुनो दास!	॥
बैकृष्ण दास ने कहा		. मेरी आशा श्रीचरणों में है ।	॥
सुज़ैन दोष नहीं देगी।		. मैं आपके सेवक का सेवक हूं।	॥

इति श्री किलि भाविस बैकृष्ण दास कर्तव्य
श्रीकृष्ण बालिगा दास संपदे का नाम नहलाधाय है।

(14) स्वीकार करना।

निराकार दास की अमरजुम संहिता॥

अध्याय बाईस

सुना है तुम दरवाजे पर ही रहोगे ।
भारत युद्ध करने वाला है ॥
नाथ किली ऐसे ही ख़त्म हो जाएगी ।
वह ओली में तेरह महीने का आनंद लेंगे। ।
भारत के पास कादिरा में अतिरिक्त भूमि होगी ।
यहीं से बहुविवाह की शुरुआत होती है। ॥
शहर में बहुत परेशानी होगी ।
उस समय नगर का विनाश वैसा ही होगा ॥
इसके पश्चिम में धर्म युधिष्ठिर का आसन है। ।
"हतिना कटक" ।
इसमें त्रिजटा का भाग डाला जाएगा ।
पंच कुतक बोलिन युगे युगे अब ॥
कहा जाता है कि मैच है ।
पंचभक्त सखा में वह भी होगा ॥
बैसाख शुक्ल 8 तारीख, गुरुवार को ।
उसी दिन कीव में महोत्सव होगा ॥

o o o

उस दिन, इंजा चांदनी में एक अद्भुत ।
एक सौ साठ साल की हो जाएगी ॥
उस दिन, वह एक अद्भुत निर्विरोध ।
राय में जीएगा कि वह जीएगा ॥
मेरु अंगब (1) के शरीर के चारों ।
अंग अस्थमा से मर जायेंगे ॥
जो लोग धर्मात्मा हैं ।
उन्हें हमारा दृष्टिकोण प्राप्त होगा ॥
इस उम्र की आखिरी संतान ऐसी होगी, ।
सबसे बड़ी उम्र की सीना शालियाब (2) होंगी। ॥

(1) कोई इमारत या महल, (2) यदि इसे उल्टा कर दिया जाए तो बयालीस हो जाएगा।

शालिआब शरत (3) वर्ष का आनंद लिया जाएगा।
तब सीना काबी ने जाकर सत्य उत्पन्न ॥
होने का संशय खोला और कहा कि सन्देश ।
का पात्र उत्तम दास कहलाता है। ॥

इति श्री व्रम का किरदार चर्चा में है
मंडल परीक्षण कथने नाम दृबिष्ठोबधायः।।

हादी गुलाम की किताब॥

जय जगननाथ पतझड़ उड़ीसा ।
लाडठाकुर कल्पबत निवासी भगवान मैं(घोषणा)
ब्रह्मराशि कविकलुष (1) संसार ।
दुःखी होगा लो बौल बिरजानि देई डाक
चौसठि योगिनी (2) संसार दुःखी ।
होगा। उत्तर दिशा से कालिका ॥
जाजपुर में आएँगी, खपरधराना ।
महिषमर्दिनी सर्बमंगला के मुख ॥
से मिलेंगी, कालिका रक्त ।
पियेंगी, योग पियेंगी, ॥
पेट बढ़ायेंगी, पेट भरेगी, पूर्ण ।
भिरबी पुकारेंगी, वह अद्वितीय हैं ॥

---

(3) यदि इसे विपरीत अर्थ में लिया जाए तो इसका अर्थ तेरह और बयालीस होगा। लेकिन अब तक, यानी 1342 में, सच्चाई आ जानी चाहिए। यह शास्त्रसम्मत प्रतीत नहीं होता।

(1) पाप, पाप

(2) तन्त्र जगत में हश महाविद्या और शतमात्रिका जैसे चतुष्टय योगिनियों के नाम महत्वपूर्ण हैं। यह चौसठी योगिनी मंदिर संभवतः 8वीं-9वीं शताब्दी के दौरान बनाया गया था। इसी तरह के मंदिर ओडिशा के बलांगीर और मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र में भी खोजे गए हैं।

इसलिये कि सात
दिन तक सूर्य
अन्धियाला न हो।
सियार कुत्ता
घर में घुस जायेगा
और गाँव की
रक्षा कोई नहीं
करेगा। यदि चावल
की कटाई
नहीं की गई तो वह
मर जाएगा।
शिमुनी के शब्द
अन्यथा नहीं होंगे।
उस समय आकर्षक
मछली का
कांटा मगरमच्छ
की हड्डी का द्वार
होगा। जिसे खुदी
मालुख (3) कहा
जाता है, तब यमतुरी
लो बाउल इतना
स्पष्ट होगा कि तलवार
का मुंह उग
आएगा। यह सुनकर
कि घमंडी
लोग नी न्योय के
बारे में बात कर
रहे हैं, अगर यह
पाप दुनिया से दूर
हो जाएगा, तो
बच्चे का नाम इस
कविता में

लिखा जाएगा। 1

हादीदास की किलि चौतिसा॥

सुज़ैन, क्ययुग ।
उनका जन्म कलंकी के रूप में होगा, जहां ॥
श्री चक्रधर का दूध बहता है, अमरावती खड़गिरि, ।
वह स्थान जहां गुप्ता एक सिद्ध संत हैं। ॥
में न्याय की गुफा में एक ।
भजन है। रात में, भगवान गुप्त ॥
खेलेंगे, महाभारत होगा, ।
लिंगराज की मूर्ति ।
दफन की जाएगी, एक महान ।
दुनिया होगी, आग ॥
की सुबह में एक लीला होगी, ।
अहानिकर ध्वनि सुनाई ॥
देगी, शरीर तीन बार कांपेगा, ।
लोग आएंगे और पशु ॥
चिकित्सक की सेवा में
गिरेंगे। यमला (1) नदी के तट पर ॥
प्रकट होगा जो पद्मपोखरी के ।
नारायण का स्वयं प्रकट शरीर ॥
उज्ज्वल आकाश में गीत होगा। ।
पास है। उनके भगवान ॥
श्रीजगन्नाथ का जन्म खड़गिरि
की गुफा में होगा। वे ॥
भगवान के रूप में ।
होंगे। (2) तुम बहुत सी माया ॥
सीखोगे, तपस्वी आग ।
में जलकर नष्ट हो जायेंगे, ॥
गरीब बिना कारण के ज्ञान ।
सीखेंगे, वे गलत समूह ॥
में पड़ जायेंगे, और बेईमान ।
लोग बैठकर धन इकट्ठा करेंगे। ॥

---

(1) यमाका, जुड़वाँ, (2) जग, चुटकुले'।

नारी समरसता में माता ।
माया तपस्वी के ॥
शास्त्र पढ़ेंगी, ।
६ज्ञान की बातें ॥
करेंगी, बैठ जाएंगी ।
और स्थान छोड़ ॥
देंगी, देवता स्थान पर
नहीं रहेंगे। ॥
शून्य से धुआँ उठेगा, ।
ध्वनि ॥
सुनाई देगी, नीच ।
लोग उठ खड़े होंगे, ॥
अपना नाम बताएँगे, 1
निगम की बदनामी ।
होगी, और अगले ।
दिन केवल महिलाएँ ॥
ही अपना धन ।
खोएँगी। हदीदास ॥
बड़ा भारी युद्ध होगा ।
और मुकुन्ददेव की सेना आयेगी
कुमार के युग ।
के अंत में, भारत ॥
में भयंकर ।
युद्ध होगा। सात ॥
बहनों की माँ (5) खापर ।
का खून पकड़ेगी।

---

(3) उलझन में, उलझन में, (4) उछल-कूद में। (5) बिरजा क्षेत्र में स्थित 'सप्त मातृका' को 'सम्मा सेवन सिस्टर्स' के नाम से जाना जाता है। ये देवियाँ हैं बाराही, इंद्री, वैष्णवी, ब्राह्मी, कुमारी, महेश्वरी और नरसिंघी।।

(6) इसे विराजपीठ माना जाता है। ब्राह्मण पुराण के अनुसार गयासुर की त्रैलोक्य पूजित नाभि बिरजा देवी के ईशान कोण में गिरी थी, इसलिए इसे नवीग्रुप या नवीगया क्षेत्र कहा जाने लगा। ब्रह्माण्ड पुराण में उल्लेख है कि यदि इस गया नवी को पिंड दिया जाए तो इक्कीस पुरुषों के पितरों का उद्धार हो जाता है।

(7) भक्तों |
का चयन ||
किया जाएगा। |
सातवां ||
दिन एक अंधेरा |
युद्ध का ||
गोला |
होगा। हदीदास ||
ने भारी और |
बोझिल ||
महसूस करते हुए |
कविता कही ||

भीमवोई का माली ११

भाइयों, अंतिम सत्य के प्रवेश द्वार
के बारे में सोचो। कुछ ही दिनों में
६हिंसा के विकास से ||
नैश अंधा हो जाएगा। माय ब्रोठेर |
एक दिन भारत तुम्हें बुलाएगा, एक दिन |
६बिरजा शक्ति नबकोटि का रूप ||
धारण करेगी और पापियों का |
खून पिएगी। गाँव गाँव होंगे, धरती उबड़- |
६खाबड़ होगी, हवा चलेगी, पहाड़ |
हिलेंगे, चार बादल मिलेंगे, बारह दिशाएँ
बरसेंगी, मेरे भाई! चांद और सूरज नहीं |
६दिखेंगे. मेरे भाई, शराबी ||
को लेकर घूमो और मांस खाओ! शमन |
भुवन मेरा भाई, पीठ फेरकर चला जाएगा। |
६हाथ मोटा नहीं होगा. ||

---
(7) अंतिम काल, (8) संवस्कर, वर्ष, 19) जुलूस।

पिता ही बेटी का ॥ ।
पिता होगा. धर्म ।
६नहीं सुनेगा ॥
कामंगी (1) माता-पिता को मार डालेगी। यदि पति पत्नी हो तो वह
बहुत अन्यायी होगा। माय ब्रोठेर कलियुग का अंतिम संस्कार,
६इस भक्त की पीड़ा देखकर भगवान ।
शक्ति पर काबू पा लेंगे और घोड़े पर सवार होकर ।
६तेजी से योग निद्रा से बाहर आएंगे। माय ब्रोठेर! तलवार ले
६लो और घोड़े पर सवार हो जाओ, "संत का ।
पालन-पोषण होगा, दुष्टों का नाश होगा, महिवर का नाश होगा, 1
रब्बिन हमेशा के लिए नश्वर संसार में निवास करेगा। मेरे
६भाई! याकू सोचता है, भीमभोई कहते हैं ॥

चौतिशा, भीमवोई की रानी॥

किर्गिज़ युग में, कर्रा गति के मुक्तिदाता बुद्ध बन गए।
उन्होंने कर्म काट कर भक्तों को महानता धर्म दिया कि,
यह ख़त्म हो चुका है और अब कुछ ही दिन बचे हैं। ॥
सारी प्रजा नष्ट हो जायेगी तोमक (2)
तलवार। दुष्टों को दूर करने के लिए इसका जन्म नेयाज़ मठ में होगा।
एक सार्वभौमिक ऋषि ही कालान्तर में शाश्वत राजा होगा ॥
६भयंकर युद्ध होगा, खून की नदी बह जायेगी।
वासुथुब लुढ़क गया और संबलपुर को पार कर गया।
कड़ा मुकाबला होगा. वह खून की गरजती हुई नदी बहा ले जाएगा ॥
घोड़े और हाथी लुप्त हो जायेंगे और सूर्य चमकेगा नहीं।
दस दिनों तक रक्त प्रवाह धीमी आवाज
के साथ, घोती आ रही है। सिन्धु की गर्जना ।
उत्तर से दक्षिण की ओर रुधा प्रचंड रूप से बहती
है, ऊपर उठती है और सात मंजिल ऊंची धरती की
छाया बन जाती है, जिससे कुत्रियां डरकर भाग जाएंगी। जे

(1) कामान्ध, जामातुर, कामसोक्ता।
(2) केन्दुरा॥

प्रभु के चरणों में शांति रहती है, भक्त
की पीड़ा को शून्य की उपस्थिति के बिना
नहीं समझा जा सकता। चिरे को इस ॥
बात पर जरूर दया आ रही होगी कि लाखों
जीव-जंतु छतरी के नीचे, दैत्यों के पैरों
पर गिर रहे हैं और उन्हें पहचान नहीं ॥
पा रहे हैं। जब वह तूफान में बैठ गया, तो वह
योगीबेश बन गया और ब्रह्मांड पर विजय
प्राप्त की और नश्वर लोगों को हराया। यह ॥
योगी नहीं है, लेकिन ब्रह्मांड
फट जाएगा, सात जन्म भगवान का
झरवट्टी स्थापित की ॥
जाएगी। सूखी घास उग आएगी, और
लज्जा का घमण्ड यहोवा के
चरणों पर गिरेगा। चाबी टूटने पर ।
सच्चाई सामने आ जाएगी।
थोड़ी सी चर्चा है कि ले लोगे तो
सिर थक जाएगा। हर कोई फंस जाएगा जाल में (4).
भीमसेन ने सनातन गुरुपुत्र
की गाथा में कहा है कि,
रूप देखेंगे। धोखा खा गए तो ॥
जिस वर्ष भय से सब मर गये और धर्म से विमुख हो गये, डिंगर
का साथ छोड़कर (5) और सब श्रीगुरु के चरणों में चले गये, गुरु को
बुलाकर कहा कि कोई नहीं समझ सकता कि जब तक बलि ॥
इन्द्र न हो जाय, तब तक संसार में जिंकी बाजा (6) बन्द रहेगा।
देख लेना ढेंकनगढ़ में ढक्कन टूट जाएगा.
ढक्कन बंद करके. भक्तों का उद्धार ।
होगा कि "ढेंकनाल जोरांडा में स्वर्ग
से अमृत वर्षा होगी, अखिल भमंड करता
जिसमें । त्रददेव श्रीहस्त हैं।" ॥

(3) ताहि तपरा, (4) जन्म, (5) गौरव
(6) आदिवासी महलों में प्रचलित एक प्रकार की बाह्य विशेषता।

प्रभु से निराश मत होइये।
तीन दिन बाद होगा समझौता गोसिंघ है
विशाल का राज्य, एक ही है खून शत्रु ॥
उन्हें श्रीहस्त में दिया जाएगा, जो क्षत्रिकुला
के समान स्थिति में नहीं है, गोसाईकु
वहां लेटे हुए हैं। बैल शब्बू पर होगा ॥
दीनबन्धु को सत्य से अटूट श्रद्धा थी।
भगवान के दर्शन से पहले दुरित नशीब खुश थे।
क्या कोई उदास बकरी होगी? . मुझ पर दया करो ॥
सब धर्म से विमुख हो गए हैं,
अगर वह इतने लंबे समय तक परेशानी में है तो उसे दोष न दें।
सभी से कहता है. अब धर्म ने तुम्हें छोड़ दिया है, तुम्हारे पास ॥
न दान है, न ध्यान है, न जप है, न तीर्थ है, न व्रत है, कुछ भी नहीं
है, आत्मा का नाम ही आत्मा में छोड़ा जा सकता है, इस जीव का
मोक्ष है, जो आत्मा से उत्पन्न होता है। यहां तक कि सांस भी अलग है। 1901
वह सुबह उठकर गायों को नहलाता है, भगवान के चरणों में
समर्पित हो जाता है और उनकी शरण में आराम करता है।
पवित्र भूमि खोजें. जिस दिन तुम बड़े ।
आनंद में रहोगे, जिस दिन फूल में जो छिपा
है, एक बार आवरण खुल जाएगा, फर का नायक उड़
रहा है, कोई नहीं जानता कि जाल छूट जाएगा ॥
यह दक्षिणी देश उन ब्राह्मणों द्वारा छिन्न-
भिन्न कर दिया जायेगा जो धर्म छोड़कर वेश्या बन गये।
जीरा पीस लीजिये. वह मछली को मारना चाहता था ॥
नखंड माही तैर रही है, और गिरी हैं अनगिनत बूँदें।
एक निर्भीक पामर मूर्ख ने कहा कि उक्त
पृष्ठ येह है। डाक अलेक, पृथ्वी को जीवित रहने ॥
दो, कि नया करोड़वाँ योगी आया है और ब्रह्मांड
को दुष्ट बनाने का आदेश दिया है। (6) मछली लगभग मर जाएगी।
माइंड इन्वेस्टमेंट श्रीगुरु लगभग ऐसे ही हैं ॥

---

(6) मेन्चा मेन्चा।

यदि गोसाईं का प्रताप मनुष्यों पर विजयी हो
गया, तो संसार में कोई अपनी आँखों से नहीं देख सकता
कि वे जीवित हैं। जैसे ही सूर्य चमकेगा,
रविचंद्र दोनों मर जायेंगे और रात हो जायेगी।
सात दिन तक अँधेरा रहेगा और सड़क दिखाई नहीं देगी।
कोई जोड़ा नहीं. ये हैं स्वामी श्रीमुख बचन
लाख स्वर्ण कलश बैठेंगे, लाख छतरियां तानी जाएंगी।
श्रीहस्थ गुरुदेव लाखों राजाओं को शॉल से बाँधेंगे।
गाने अनगिनत होंगे. भगवान जल्द ही आयेंगे
बजुथिब लाखे लाखे बीरबाजा बिनता नंदन थुबे,
आधे समय में प्रभु का खज़ाना ख़ज़ाना लाएगा,
ब्रह्माण्ड पूर्ण है. स्वामी अपना सिर रख
रहे हैं कि लक्ष्मी संबलपुर से प्रसाद
चलाएंगी, सभी भक्त मेल आलेख के पोते होंगे।
आदिकंद थुबे ओडस। कीव में भीमभोई
सभा होगी और राजा होगा और धर्म का
न्याय गिर जायेगा। सारी दुनिया
चुनी जाएगी, वह शंकर चुना
जाएगा, फिर ब्रह्मांड विज्ञान पूछेगा।
सभी भक्त भक्तिपूर्ण शब्द लिखेंगे, यह घोषणा करते
हुए कि सभी मंन दोषी होंगे। सहजना सलाह देगी कि
हरि बोल हुलहुली शब्दे कोम्पुथुब त्रिभुवन,
हरि अर्जुन ने ब्रह्मा और हनुमान से पूछा होगा
कि गंदी परीक्षा होगी। सभी धर्मों को क्षय से बचाया
जाएगा, और बूढ़ा अंग युवा हो जाएगा, भीमभोई
कहते हैं, एकल हृदय ने मूर्ख हथेली के बारे में सोचा।
एक क्षण भी विलंब न करें. खेल शुरू हो चुका है

अर्रांडास की रानी?।

ध्यान से सुनो   कॉल बटन कहता है
कितना अँधेरा हो जायेगा माहिर
मैं मूर्ख बनूंगा, मेरा पत्र लिखो
(1) अनेक ।   अंतरात्मा कड़वी होगी
ऐसा कोई नहीं है जो राष्ट्रपति नहीं बनेगा
एक महान व्यक्ति मर जायेगा.   ।
गायत्री देश छोड़ देंगी   तेजी से रोल करें
गुरु शिष्य को ज्ञान सिखाएगा
गोसायु होंगे - मेरा भाई आलेख बाई   ॥
अँधेरा भारी है   छरनी दुकानदार होगा
घर-घर में बदनामी
घोतिब घन पराई (2) - मो भज आलेख बाई   ॥
उग्रता (3) उजागर होगी   बाल नहीं हैं
नायक ब्राह्मण होगा, मूर्ख होगा
11
किसान आम आदमी होंगे   चालीस वर्ष
मुखक सेवा समन्थर टेक
(4)-मेरी उच्च लेखनी।
छोटे लोग ढोल होते हैं   तस्वीरें अद्भुत हैं
छाते बनाना (5) जूते बनाना (6)
मैं उत्तर दूंगा - मुझे लिखें!
कोई जाति नहीं है   जाति ब्राह्मण होगी
जातियाँ और अन्यजातियाँ एक हो जायेंगी
यदि ज्ञान न हो तो मुझे लिखो   ॥
कन्यादान नहीं करना चाहिए   जिंकी बहुत सारा धन ले लेगी
लड़की का नाम विक्की होगा
जाति पति को फेंक--मो बाज आलेख बाई   ॥

---

(1) दुष्ट, (2) लगभग, (3) पाखंड, (4) घमंड। (5) महंगी मखमली कला, (6) संसाधन।

कानून कायम रहेगा निराशा बोलेगी

नर्सें खरगोशों की तरह होती हैं

परधान बोहिनेबे - मो भज आलेख बाई।10

कोई आपका साथ नहीं देगा धन में जाति खो गई

(7) पुत्र पिता की वाणी छोड़ देगा

पत्नी अलग है - मेरी बात लिखो अलविदा।

ओके बटन सत्य है।५ ऐसा विद्वान जो धोखा न दे

जब आप कहते हैं तो यह सच है

यदि आप देख रहे हैं तो कृपया मुझे लिखें। ।

कर्म का आह्वान होगा अधर्म नाव डुबा देगा

सुज़ैन एक समुद्री डाकू होगी

महाप्रसाद विधान देकर - मेरा पत्र लिखो। ।

खाई भर जायेगी॥ डोकेबे ब्राह्मण सुरा

6धेरा चिता (8) योगी की आवाज काट देगा

मुल्क (9) बाबरा (10) होगा - मेरा भाई आलेख बाई।

एक दिन बारिश होगी जल्द ही नदी बढ़ जायेगी

अपलक होल नाश जब माही ।

गाय को दूध की कमी हो जाएगी - मो बच्च आलेख बाई ॥

हवा तेज़ होगी आप एक संत होंगे

पीछा करने वाले बैठ जायेंगे

बितेक नीचे बैठेंगे - मो भज आलेख बाई। :

थानिस लस्सी (11) जाएंगे। बेथनी सोफे पर बैठी है

थिटिली वारिजा (12) पूजा करेंगी

एक गृहिणी गुलाम होगी - मेरी तरह लिखो

भगवान झूठ बोल रहे हैं 6कोई सामने नहीं आएगा

जनता सामने आ जायेगी

जैसा कि पुरानी कहावत है, मेरे शब्द लिखो।

कोई भी धार्मिक नहीं होगा धर्मात्मा नहीं होंगे

धर्म छूट जायेगा, हिल जायेगा

निर्दिनी (13) एक धनी गेंदबाज हैं - मो भज आलेख बाई। ।

---

(7) अवज्ञा, (8) उचिता, 19) राज्य, (10) अराजकता।

(11) डुबाना, (12) संरक्षित, संरक्षित।

(13) निरजंन होना चाहिए, लेकिन पोथ के पाठ में निरानी लिखा है।

नायिका नष्ट हो जायेगी न्याय धर्म को डुबा देगा
बहू ससुर की बात नहीं मानेगी
जवान खाएँगे - मेरा खाना लिखो। ।

धरती के कांटे भागों को ढूंढना कठिन है
परधान के पीछे चोर ले जाया जाएगा
पिता ने बेटे से मुँह मोड़ लिया - मुझे लिखो ॥

फूल खिलेंगे फल गोल होगा
(14) जाल बिछाने वाले धोखा नहीं खायेंगे
मैं राज्य छोड़कर इसे लिख दूँगा। ।

महान बंधन विकास में कुचला जाएगा
बाहरी राय
बसुधा माटी कांप उठी - मो भज आलेख बाई ॥

किसान बहुत दुष्ट होगा भिखारियों को कष्ट होगा
भनंती अरथ का कहना है कि ऐसा ही होगा
बहुत से लोग मर जायेंगे मेरी डायरी लिखो.।

यह महान समय है। माही इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती
व्यवहार बहुत अच्छा रहेगा
अराजकता महान होगी - मेरा नियम लिखें. ।

जगन्नाथ की मृत्यु चट्टान गिर जायेगी
जगमोहन में चतुर्धा मूर्ति
13 महीने हो जायेंगे - मुझे लिखें। ।

राजा दक्षिण से आये शांत नहीं बैठ सकते
रूस को सजा मिलेगी और राज्य चला जायेगा
वह हत्या का दोषी होगा - मो बाज आलेख बाई. ।

लक्ष्य भाला फाड़ देगा नमक पानी में डूब जायेगा
लाह लाह ने अपनी ठुड्डी घुमाई और अपनी पीठ घुमा ली ॥
यदि आप अपना सिर घुमाना चुनते हैं, तो इसे लिख लें ॥

वसंत का नाम बुक करें विजेता माही होगी
विजये चंडिका बरही ऑप्टिशियंस ॥
खै-मो भज अलेख बाई चामंदा जाय ॥

---

(14) आजीविका के प्रति सावधान।

तीर्थभुवनेश्वर संसार में सर

मन हर ज़ुल्म को समझता है

डरो मत - इसे मुझे लिखें ॥

बाबरा रचयिता (15) है। श्री महाप्रसाद मरा॥

एक ब्राह्मण जो अच्छा शराब पीने वाला हो

)

मोहना अभी आएगी॥ नीबू यह सब करेगा।

सारी हरियाली एक हो जायेगी

अंत में आपके चेहरे पर मुस्कान होगी. ।

हरि कल्कि का रूप धारण करते हैं नमस्ते (16) ऊपर

परन्तु दुष्ट लोग पवित्र लोगों को बचाए रखेंगे

सुदर्शन पकड़ो - मेरी पत्नी लिखो ॥

मैदान की वेदी जानिए खेल के अंदर

येखेड़े (17) ने सच कहा ॥

सत्य ए डाक बचन-मो बाज अलेखे बाई। ।

अभिराम परमहंसक

वैष्णव गीता॥

अध्याय पांच

चैतन्य उवाच:

श्री चैतन्य मुस्कुराते हुए कहते हैं . आपने जो पूछा, उस पर ध्यान दें ॥

ये क्ययुग काल की रस्में हैं । वह सब कहा गया है ॥

कोई भी पदार्थ हो . तुम्हें पता चल जाएगा कि वे सभी काले हैं ॥

की का गुण अज्ञान है . शिष्य का गुरु के प्रति आदरभाव । ॥

पति पत्नी की बात नहीं मानेगा . अपतिव्रत आचार्य ॥

ब्राह्मण शूद्राणी की रति . शूद्र ब्राह्मण का प्रेम ॥

शुद्ध नैतिक विनाश इसका मतलब है कि पत्नी जहर देगी ॥

---

(15) नगण्यता, नश्वरता, (16) बांझपन, (17) संक्षिप्तीकरण।

भाई-बहन के घर अलग-अलग हैं । सात दिन बाद ॥
कोई भी अपनी पत्नी या . पति को रौंद डालेगा ॥
माँ की अवज्ञा नहीं करता । बाप का जानवर अलग होता है ॥
कुलबधु सास । यदि तुम न मानोगे, तो सात हो जाओगे ॥
सुनो नासमझ आदमी! . ऐसी है क्यूशू की रस्म ॥
वही जीव है . तुम्हारी पूजा नहीं होगी ॥
मूर्तियों पर अविश्वास । सुनो, तुम कियुग रस ॥
सभा में न्याय की बात मत करो । पक्ष वदन की बात कर रहे हो ॥
जिसका पक्ष धन-संपदा से परिपूर्ण हो । अन्याय के साथ न्याय होगा ॥
उन कृष्ण भक्तों की बात मत मानो . निर्णय पाशे थूब अहसार। ॥
जो अमीरों के पक्ष में अन्यायी हैं आप यह करने जा रहे हैं ॥
उन दोनों की मुलाकात । वह मेरे भक्तों को गाली देगा ॥
हरि के नाम पर हुई . प्राचीन विश्व के संस्कारों ॥
अकुलिना (1) राजा कौन होगा। को सुनो। दूल्हा (2) दूल्हा होगा ॥
राजा अन्याय करेगा . प्रजा काँटे हो जायेगी, ॥
राजा की प्रजा का युद्ध । पाप अधर्म हो जायेगा ॥
केवल भक्त को छोड़कर । अन्याय ॥
ॐ ये सती नहीं होगी. काम का प्यार हमेशा मांगा जाएगा ॥
चीता दिन के समय जंगली रहता है । . रात में, खुजुथ माता । ॥
पुष्पक बासुदेव (3) सोचो । यह एक बड़ा वैष्णव ॥
मुँह में मीठी बातें होगा. दिल जहर से भरा है ॥
सच्चा वैष्णव वह व्यक्ति है जो जो । वह या तो भूल जायेगा या कांप जायेगा। ॥
कहता है उसे करने में सक्षम होता है . मास्टर पैनपन ॥
शिष्यत्व एक नहीं है होगा. सब गुरुदेव होंगे ॥
अमीर शिष्य चुनेगा । केवल पैसा ॥

---

(1) कुलीन, कुलीन, (2) कुलीन, आदिवासी।

(3) महाभारत और हरि वंश में उल्लेख है कि पुण्ड्र देश में बसुदेव नामक एक कृष्ण-द्वेषी राज्य था। इस युवा बासुदेव ने जरासंध, मधपाल, दरद आदि राजाओं से मित्रता की और कृष्ण की तरह शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण कर स्वयं को बासुदेव (श्रीकृष्ण) माना और अपना परिचय भी दिया। अंततः उसका अभिमान इतना बढ़ गया कि उसने द्वारका पर आक्रमण कर दिया, लेकिन वहां श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया।

एक पत्थर की नाव पर जाओ
शिष्य का पालन-पोषण करना
और फिर परिवार का भरण-पोषण करना
हे शिष्यों, गुरु को देखो
यहाँ गुरडीन आता है
स्वामी जो धन से आसक्त है (4)
धन गुरु से मिलता है
सुनो नासमझ आदमी!
जल्द ही नदी बढ़ जायेगी
शीघ्र इन्द्र वर्षा से
अकाल मृत्यु का वास होगा।
स्नान जल्दी हो जाएगा
शीघ्र खोज आवश्यक होगी।
यदि यह समयपूर्व था।
मैं आपको बताऊंगा कि यह समय
से पहले कितना किया जाएगा
यदि इस काल में कोई दौड़ होती
प्रिय जो समय से पहले होता है
समय से पहले खेती करने से
हल डूबने से पहले
यह सबसे आम है
ये सब कोई नहीं मानेगा
गाय की आत्मा का चुनाव
बहुत अनुचित होगा
भूकंप बहुत जबरदस्त होगा
यह एक भयानक कॉल होगी।
कृष्ण का समय चक्र
तोप का गोला
गर्मी शूट नहीं कर सकते
पृथ्वी एक अराजक
चोर होगा जो ताकतवर होगा

. गुरु सामने बैठेंगे
. पानी में डूब जायेगा
टीचर तो बहुत होंगे. यदि तुम
छिपाओगे तो तुम अमीर नहीं बनोगे
. मेरे पास बढ़ाने के
लिए कुछ भी नहीं है
. निरजंन गुरु से नहीं मिलता
. की में पैसे और सोने की भक्ति
कोहरा जल्दी आएगा
जल्दी फल लगना
इसे जल्दी खा लिया जाएगा
जल्दी सो
हैजा समय से पहले होता है।
किली किम्पई राजा होंगे।
. बच्चा गर्भ में ही मर जायेगा
यह समयपूर्व के समान ही है
विदेशी देश छोड़ देता है. की का
कहना है कि वह मेरा पसंदीदा है
किसान बिना समय जाने
. केवल मवेशी पालन करें
एनामिस्ट या कब्रिस्तान
मैं वासना से भर जाऊँगा
और शोर मचाऊँगा
. तो बारिश नहीं होगी
कोई भी महिला नष्ट नहीं
होगी. धरती पर चमक आएगी
होल्डर अजीब तरीके से हिलेगा
यह भयानक होगा
दबाव बढ़ेगा
डर चमकेगा. कोई
किसी की बात नहीं मानेगा

(4) अनुराग, लालची।

सुनो, हे सज्जन मन!	. प्रवृत्ति आधार (5) काला है	॥
पंथ के अंतर्गत निव्रधि	। सुनो नरपति	॥
एब्रिसी के साथ सीना खेलें	। भगवान आदिमुल खेलेंगे।	॥
उत्पात से विनाश	धर्म की स्थापना होगी	।
बनमाली वैष्णव अपनी	. जप कर शुद्ध त्याग,	॥
आत्मा गाएँगे	। बाई अभिराम	॥

यह श्रीवैष्णव गीता मन्चैतन्य के कर्म वरन्ने
के वर्णन का पाँचवाँ अध्याय है। ।

---

(5) पात्र ।

कवि परिचय

बलराम दास

1482 ई. पुरी जिले के चंद्रपुर गाँव में। उनका जन्म (कुछ लोगों के अनुसार 1470 ई.) में हुआ था। उनके पिता का नाम सोमनाथ महापात्रा और माता का नाम महामाया है। वह शूद्र थे और उनके पिता गजपति कपिलेंद्र देव के मंत्री थे। भगवान दास की चैतन्य भागवत में कहा गया है कि उन्होंने श्री चैतन्य से मंत्र दीक्षा प्राप्त की। समर्पित रूप से मठवासी (काहारी की राय में मत्ताहस्ती का दमन करते हुए और जगन्नाथ की कृपा प्राप्त करते हुए), उन्होंने खुद को मत्ती बलराम या प्रसिद्ध के रूप में संदर्भित किया। श्रीजगन्नाथ उनके आदर्श हैं। उनकी अलौकिक साधनाओं में फुरसत के समय में जगन्नाथ के साथ श्रीलंका की यात्रा करना, नीलाद्रिनाथ के साथ पनस चोरी में पण खाना, विचारों के समुद्र में रथ को रोकना और गीत के समय बाउरी के मुंह में गीता का उच्चारण करना ऐसे मुद्दे हैं जिन्होंने उन्हें उड़िया साहित्य में सबसे महान भक्तों में से एक के रूप में स्थापित किया है। जैसा कि कहा जाता है कि वह एक वेश्या थी, सेतु बौद्ध परंपरा की प्रतीत होती है। उन्हीं से प्रभावित होकर उन्होंने एक स्त्री को साधना-संगिनी के रूप में स्वीकार किया होगा। बलराम दास एक समर्पित साधक, योगी और ज्ञानमिश्र के प्रतिपादक थे। उनकी रचनाएँ आदर्शवादी समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक विचारों से ओतप्रोत हैं। समसामयिक किंवदंतियों और लोककथाओं के आधार पर उनका प्रत्येक आलेख उतना ही मौलिक है जितना सौंदर्य का विस्तृत वर्णन है। उन रचनाओं में प्रमुख हैं दांडी रामायण, ब्रह्माण्ड भुघोल, बुलागई गीत, कमललोचन चौतिशा, कारंतकोइली, लक्ष्मीपुराण, बेबा परिक्रमा, सप्तांग जोरास्कर वेक, जयानकबच, ज्ञानचूड़ामणि (गद्य) और ब्रह्मटिका (गद्य)। उनका निधन पुरी के समगरा गेट पर हुआ।

यशोवंत दास

यशोबंता दास ओडिशा के पंचसखाओं में एक प्रमुख योगी और साधक हैं। उनका जन्म 1482 ई. में कटक जिले के अधांग के निकट नंदी ग्राम में क्षत्रिय कुल में हुआ था। (कहारी के अनुसार 1487 ई.) की स्थापना हुई। उनके पिता का नाम बलभद्र मल्ल और माता का नाम रेखा देवी है। अच्युतानंद की गुरुभक्ति

गीता में वर्णित है कि वे मधुपंती थे। यशोवंत ने आंध्र के राजा रघुराम चंपति की बहन अंजनादेवी से विवाह किया। चौदहवीं आज्ञा के अनुसार। अनंत का पुत्र लिखित रूप में उनका पोता था। इससे यह मान लेना स्वाभाविक है कि यशोवंत का अच्युत और अनंत से पारिवारिक संबंध था। 12 साल की उम्र में उन्होंने संन्यास की दीक्षा ली और भारत के कई तीर्थों की यात्रा की। गजपति ने अपनी योगाभ्यास के प्रदर्शन के रूप में प्रतापरुद्र को ब्रह्मराक्षस दिखाकर अलौकिक सफलता से परिचित कराया। उनकी कुछ पुस्तकें हैं शिवस्वरोदय, शक्तिमाला, प्रेमभक्ति ब्रह्मगीता, सत्वपर्व गीता, गोविंदचंद्र, मलिका और भजन। अपनी कातिक अपील के संदर्भ में, गोविंदचंद्र मंत्र ने असम और बंगाल सहित पूरे उत्तर भारत में लोकप्रियता हासिल की है। नाथवाद और नाथ संप्रदाय के साथ उत्कल वैष्णववाद का संयोजन इस पुस्तक की विशेषता है। लोइदास या लोही दास उनके प्रमुख शिष्य थे। उन्होंने मार्गशी के शुक्लषष्ठी (ओधनषष्ठी) माह में अपनी रक्षा की।

अच्युतानंद दास

पंचसाका युग. लोकप्रिय कवियों में अच्युतानंद समुदाय के प्रति जागरूक महापुरुष थे। उनके पिता दीनबंधु खुंटिया थे, उनकी मां । पद्मादेवी थीं और उनके दादा गजपति के राजा के पूर्ववर्ती श्री गोपीनाथ मोहंती थे। जगन्नाथ की असीम कृपा से दीनबंधु को अच्युतानंद पुत्र के रूप में प्राप्त हुए। अच्युत का जन्म 1485 ई. में नेमल के तिलकना या त्रिपुरा गांव में करण परिवार में हुआ था। वह 16वीं शताब्दी के उड़ीसा के वैष्णव धार्मिक आंदोलन और आकांक्षात्मक और सांस्कृतिक भावनाओं के निष्पक्ष और सफल चित्रकार थे। विशेष शिक्षा के अवसर के बिना ही उन्होंने दैवीय प्रेरणा प्राप्त कर दैवी शक्ति प्राप्त कर ली। मंदिर में श्री चैतन्य के संपर्क में आने पर, उन्होंने डोलीग्राम के जनक ब्राह्मण संन्यासी सनातन से दीक्षा प्राप्त की, और दीक्षा के बाद, उन्होंने ॥ रसकीर्तन के माध्यम से धर्म का प्रचार करते हुए, पूरे ओडिशा और भारत में पैदल यात्रा की। रासलीला की भगवती भूमिका को छोड़कर, उन्होंने सबसे पहले इसे सांप्रदायिक आधार पर स्थापित किया, और तुरंत समाज और तथाकथित ब्राह्मणों की अनुचित भूमिका को अस्वीकार कर दिया।

उन्होंने धर्म के नाम पर व्यभिचार का कड़ा विरोध किया। चूंकि वे लंबे समय तक जीवित रहे, उन्होंने सूर्य परिवार का उत्थान और पतन, मुकुंददेव की मृत्यु और मुसलमानों पर अत्याचार अपनी आँखों से देखा। उनके बारह शिष्यों में से पाँच सर्वश्रेष्ठ थे और उनमें से रामचन्द्र सबसे प्रिय थे। उड़ीसा साहित्य में रचना के विभिन्न रूपों या एंग्रीक आदर्शों को पेश करने में अच्युतानंद की व्यावहारिकता और कौशल। उनकी कृतियों में हरिश्वन्हा, गोपाल का ओगल और लुडी स्पेल, वर्मसिगित, वृपमसंहिता, ब्रह्मसंहिता, मणिबंध गीता, युगाबधु गीता, बेराजेसागर गीता, अकरा ब्राह्मण, अवदा कबाच, अस्त गुजरी, नवगुजरी, शरणपंजर स्तोत्र, विप्रचवक, मनमहिमा और कई भजन, पाताल, रस, नैना, चौतिसा। शा, वेके और मलिका प्रमुख हैं। . उनके बारे में कहा जाता है कि वे जातिवादी थे और उन्होंने लक्षध्व ग्रंथ (जिसका अर्थ 'कदम' लिया जा सकता है) का प्रचार किया था। पहली पूर्णिमा के 11वें दिन, उन्होंने खुद को नेमल गादी में योग ध्यान में डुबो दिया और पूर्णिमा के दिन उनकी मृत्यु हो गई।

बच्चे शाश्वत गुलाम हैं

वर्ष 1488 ई. में पुरी जिले में भुवनेश्वर के पास बलिपटना गांव में पिता कपिल और माता गौरादेवी के आलिंगन से सूर्यसुल्ही शिदा अनंत का जन्म हुआ। कहा जाता है कि भगवान दास के चैतन्य भागवत को सूर्य नारायण ने एक सपने में श्री चैतन्य से मुलाकात की थी, जो कोणार्क में थे और उनके आदेश पर नित्यानंद ने उन्हें दीक्षा दी थी। इनका प्रमुख स्थान खड्गिरि है। इसी पहाड़ी की तलहटी में गादी तपोवन आश्रम कहा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, उन्होंने योगबल से महालक्ष्मी के गर्भ में एक बालक का रूप धारण किया और वसुतुवा से जगन्नाथ पर मोहित हो गए और उनका नाम 'शिशुअनंत' रखा। एक अन्य किंवदंती कहती है कि जब जगन्नाथ पौराणिक प्रतापरुद्र को अपनी महिला जननांग दिखा रहे थे, तो अनंत ने उनकी गोद में बैठकर उन्हें एक बच्चे के रूप में स्तनपान कराया, और उस दिन से उन्हें बाल अनंत के रूप में जाना जाने लगा। अच्युतानंद की गुरुभक्ति गीता, बाल अनंत के रामानंद संप्रदाय, तिलक, उर्द्धपुंड, मंत्री सूर्य एकसिहार और भजन हरे राम कृष्ण के अनुसार। इस महान संत द्वारा स्थापित गादी में बालीपटना के बच्चों के मठ में श्रीमुल्थिदेव झरने की एक मूर्ति है और कहा जाता है कि इसका सपना स्वयं महाराजा श्रीजगन्नाथ ने देखा था।

उन्होंने वह मूर्ति बालक अनंत को दे दी। बरंग दास और हंसदास उनके शिष्यों में से थे। कहा जाता है कि गुरु के आदेश पर सिद्ध बारंग ने योग करके पादुकामंत्र में सिद्धि प्राप्त की थी। उनके कार्यों में प्रमुख हैं उदय भागवत, भक्तिमुक्तिादक गीता, मध्यवेद वेक्त, वूपनमवेद, अर्हत्तारानी, उडेखरा, देखबखरा और चौतिशा और मलिका सहित कई अन्य भजन। उनके प्रमुख ग्रंथ 'हेतु उदय भगवत्रे जगन्नाथ के बुद्ध', काया सौंध, पिंडब्रह्मांडत्व, शरीर में जगन्नाथ की स्थिति आदि में राधाकृष्ण की कल्पना जीवात्मा और परमात्मा के रूप में की गई है। वे वास्तव में उत्तराखंड वैष्णव धर्म के सच्चे अनुयायी एवं प्रणेता थे।

-जगन्नाथ दास

पुरी जिले में गजपदी कपिलेंद्रदेव द्वारा स्थापित कपिलेश्वरपुर गांव में, ई.पू. वर्ष 1490 में, वद्र शुक्ल राधाष्टमी तिथि को, कौशिक गोत्रीय पुराणपंडा भगवान दास द्वारा पद्मावती के गर्भ से जन्मजात ब्रह्मचारी और सुधारित राधाधकरी, जगन्नाथ दास का जन्म हुआ। संस्कृत का गहन ज्ञान प्राप्त करने के बाद, उन्होंने वेदांत, सुचि, करापा, दर्शन आदि का पाठ किया और अठारह वर्ष की आयु में चैतन्य से मिले जब वे मंदिर के कल्पबत के नीचे चर्चा कर रहे थे। उनके शास्त्र ज्ञान और भक्ति से प्रभावित होकर, श्री चैतन्य ने उन्हें 'महानतम' की उपाधि दी, जिसके बाद उन्होंने श्री चैतन्य के निर्देश पर बलराम दास से दीक्षामंत्र प्राप्त किया। ग्रंथों में उड़िया भागवत उनकी ଡାଙ୍ଗ अमर कृति है। इसके अलावा, उन्होंने रूढ़िवादी संस्कृत में कई ग्रंथ लिखे, जैसे सोचौपदी, चारिकुपदी, तुलाविना, दारुब्रह्म गीता, दीक्षा वस्या, अर्थकोइली, दंगुनिस्तुति, गुप्त भागवत, अनामय कुंडली, गोलक सरोधर, भक्तिचंद्रिका, किमालिका, इंद्रमालिका, नीलाद्रिविलास (संगम), नित्यगुप्त अंशमणि (संगम) और श्रीकृष्ण भक्पालता (संगम)।) की प्रशंसा की गई है। भागवत के प्रसार के मूल में इसकी सरल और सुरुचिपूर्ण चंदमादुरी (नवाक्षरीवृत्त) और भाषा का आसान वर्णन (देशी शब्दों के साथ देशज शब्दों का मधुर सामंजस्य) है। वह निर्गुणभक्ति या ज्ञानमिश्र उपासक थे। उनके अनुसार, निसाकम के मार्ग में आत्म-ज्ञान शुद्ध भक्ति की सार्वभौमिक मर्दाना अवधारणा है। उस भक्ति का आधार विचार है। नीलाखला के श्रीजगन्नाथ उनके लिए परमात्मा, परमब्रह्म, राधा और कृष्ण का संयुक्त रूप थे।

निराकार और खाली. उनकी उपलब्धियों में से एक पुरी में सतलधि मठ और ओडियाया मठ की स्थापना थी। दिबाकर दास की जगन्नाथ की जीवनी में उल्लेख है कि उनकी मृत्यु 60 वर्ष की आयु में हुई (कुछ का मानना है कि उनकी आत्मा जगन्नाथ के साथ एकजुट थी)।

रेत का गुलाम

भक्त बालीगांव दास का जन्म 16वीं शताब्दी के अंत में सतशंख के पास, मंदिर के पास, बालीगांव गांव में हुआ था। वह खंडाल (बाउरी जाति) जाति से थे और उनका दैनिक व्यवसाय खेती और कपड़े बुनना था। धर्मग्रंथों से इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि दास्या को पंचकों ने देखा था और वे उसकी भक्ति से आश्चर्यचकित थे। जगन्नाथ दास ने दासिया को प्रेम का अर्थ सिखाकर गंभीरता से एकखर मंत्र का जाप करने का निर्देश दिया। वहाँ एक बाथू है, श्रीगुंडीबा यात्रा से लौटने के बाद दास्य अपनी पत्नी से सब्जी खाने गया और जब उसने सेतु पर जगन्नाथ का प्रतिबिंब देखा तो वह अपनी भक्ति से व्याकुल हो गया। इस घटना को देखकर लोगों ने सोचा कि वह पागल है, लेकिन जब वह ध्यान में लगा रहा तो भगवान उसकी कुटिया में आये और प्रकट हो गये। इसी प्रकार, दासों द्वारा भेजे गए नारियल और उनकी प्रसन्नता के लिए छाया में उगने वाले आमों को भी जगन्नाथ द्वारा स्वीकार करना भक्ति की गहरी भावना को दर्शाता है। उनके अब तक प्राप्त दो ग्रंथों 'अगत फाम' और 'भक्तमालिका' में प्रेतप्रूद्र के स्वप्नों का वर्णन तथा सोहद्रा, हाका, औलमा, युगेंती, राजूत, सर्वीक्षा, मेलक्ष, मुगल, बिटला, दावान, तारिजा, अभ्याना आदि अनेक प्राचीन शब्दों के प्रयोग को पंचसखा के समकालीन के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। सीता गुरु ने बोध द्वारा पूर्ण आराधना की है। कहा जाता है कि निःसंतान होने के दुःख में उनकी और उनकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। अधुना बाली गांव के मेला मैदान में भक्ति दास्य का एक मंदिर मौजूद है।

सिबेट

1607 ई. में जहांगीर द्वारा बंग सूबेदार ने कटक में जहांगीर के कुली खाओ (लालबेग) में एक शिविर स्थापित किया था (बाद में शिविर

जिसका नाम लालबेग कोठी रखा गया)। एक बार पुरी पर आक्रमण करते समय दण्डमुकुन्दपुर की एक विधवा ब्राह्मणी का बलपूर्वक अपहरण कर लिया गया। 1608 ई. में उनके गर्भ से। यद्यपि वे युवा थे, फिर भी रूढ़िवादी वैष्णव कवियों में उनका विशेष स्थान है। संगीतकारों की संख्या के संदर्भ में, भले ही उन्होंने धाराप्रवाह लिखा, लेकिन मधुर भक्ति भजनों की रचना में उन्होंने जो कौशल दिखाया वह बेजोड़ है। ऐसा कहा जाता है कि युवावस्था में वह कुष्ठ रोग से पीड़ित थे और जगन्नाथ की मूर्ति को छूने से उन्हें रोग से मुक्ति मिल गई, जिससे उनका धर्मनिष्ठ जीवन शुरू हुआ। जगन्नाथ की भक्तिमय भेंटों को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, श्रीकृष्ण लीला पर भजन, श्रीजगन्नाथ भट्टन पर भजन, धर्मशास्त्र पर भजन और देवी भजन और अन्य भजन। गौड़ीय वैष्णव ग्रंथों में साईबेग को श्री शमानंद का शिष्य कहा गया है, लेकिन 'चौरस्याज्ञ' में उन्हें यशोबंता दास का शिष्य बताया गया है। वह एक साथ कवि, आदर्श भक्त और महान सुधारक हैं। साईबेग की कब्र पुरी में। रामानंद समुदाय के 'बालगंडी चटमठ' के पास मौजूद है।

दीनकृष्ण दास

ऐसा माना जाता है कि वह गजपति प्रथम दिव्यसिंहदेव (1689-1715) (लगभग 1670 ई.) के समय जीवित थे। बलस्वर जिले के सुवर्णरेखा थियोरबर्ती जलेश्वर गांव में राजपूत वंश में कवि मधुसूदन के सबसे बड़े शिष्य (पुद्र) के रूप में जन्म लेने की बात उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखी है। अपने जन्म के कुछ साल बाद, उन्होंने घर छोड़ दिया और भीमनगरी झारपत या आधुनिक ढेंकनाल जिले में प्रवेश किया और ब्राह्मणी नदी के तट पर एकघरिया गाँव के कनकेश्वर महादेव के पास बस गए। वहाँ रहते हुए, उन्हें भीमनगरी के अधुपति श्री बलराम सामंतसिंघर का अनुग्रह प्राप्त हुआ और उन्होंने स्वयं को चानी आराधना के लिए समर्पित कर दिया। इस कवि की कृतियों में रसबिनोद, मधुमंगल, जगमोहन चंद, नमरत्न गीता, प्रकाशसिंधु, गुण सागर शामिल हैं। संबंधित श्रृंखलाओं में से दो में, मुगल आक्रमण के तहत ओडिशा की एक स्पष्ट समकालीन तस्वीर देखी जा सकती है।

शीर्ष दास

अज्ञात वह अनुमानित सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रहते थे.

था मलिका और तनपवाश्रयी कथाएँ उनकी रचना की प्रमुख जीवनियाँ हैं। पांडव गीता और नील सुंदर गीता उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं।

बासमुनि

महर्षि व्यासदेव अनेक पुराणों के रचयिता हैं। उसी परंपरा का अनुसरण करते हुए इस कवि ने 'भविष्य पुराण' की रचना की और अपना नाम 'महामुनि बास' रखा। शास्त्रों से संकेत मिलता है कि वह प्रद्युम्न का शिष्य था। सम्भव है कि यह कवि सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जीवित रहा हो।

बाल दास

उड़ीसा साहित्य में बच्चों के अनुसरण में जो बाल समुदाय बना, उसके परिणामस्वरूप कई कवि स्वयं को बच्चा कहते थे। बच्चे शंकर, बच्चे बनमाली दास, बच्चे दाम दास, बच्चे अर्जुन दास और बच्चे प्रतापराय मगर इसी समुदाय के हैं। बच्चों के समूह में से एक, शिदा दास की 'कण भागवत' एक भविष्य सापेक्ष रचना है। यद्यपि रूढ़िवादी साहित्य का इतिहास उनके समय। के बारे में मौन है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि वह सत्रहवीं शताब्दी के अंत या अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में रहते थे।

बैकृष्ण दास

अनेक प्राचीन कवियों ने हीनता दर्शाने के लिए मूर्ख, मूर्ख, बेचारा तथा मूर्ख जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसलिए यह कोई अजीब बात नहीं है कि कृष्णा दास नाम के कवि ने अपनी सगाई के लिए खुद को बाई कृष्णा दास बताया। रचना की दृष्टि से देखने पर यह 18वीं शताब्दी के अंतिम भाग में लिखा हुआ प्रतीत होता है।

आदर्श गुलाम

कुछ लोग भूलवश इसके लेखन को अच्युत की रचना मान लेते हैं। लेकिन निष्पक्षता में यह अच्युता के कवि से काफी बाद का है और उनका समय 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध का अनुमान है।

हड्डी का गुलाम

हदीदास कमर का जन्म 1772 ई. में मकर संक्रांति के पवित्र दिन पर कटक जिले के जाजपुर उपखंड के तहत छदिया के बाहरी इलाके में चंपापुर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम चेमेई ओझा और माता का नाम देवकी है। बचपन में उन्हें थोड़े से अक्षर ज्ञान के अलावा कोई विशेष शिक्षा नहीं मिली। ईश्वर के आशीर्वाद से उनकी पवित्र शक्तियाँ विकसित हुईं। मस्तराम नामक एक पश्चिमी संत ने उन्हें दीक्षा दी! जीविकोपार्जन में कठिनाई होने के कारण वे अपना मूल स्थान छोड़कर छठिया भाग गये और वहाँ एक पहाड़ी पर एक बट वृक्ष के नीचे रहकर साधना भजन में लीन हो गये। वह खुमी वैष्णव थे और उन्होंने 21 साल की उम्र में चंपापुर के दामोदर महराणा की बेटी पद्मावती से शादी की थी। अत्यधिक गरीबी और उत्पीड़न उनके निरंतर साथी थे। अपनी साधना के माध्यम से, उन्होंने अपनी माँ को छठिया में जगन्नाथ के दर्शन कराये और जाति, धर्म और उम्र की परवाह किए बिना विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को शिष्य के रूप में स्वीकार किया। मिरलानी के तत्कालीन जावन राजा गुलर हुसैन ने कवि की अलौकिक शक्तियों । को पहचाना और अधुना चटियाबात का स्थान उन्हें समर्पित किया। उनके द्वारा लिखे गए ग्रंथों में भखनवर, लक्ष्मीधर विलास, खेरामहात्म्य, नीलमाधव गीता, खुस्सामा, शंखनावी, वैश्याविषे और चंद्र भजन, जेनिना, चौतिशा और मलिका आदि हैं। हदीदास की मलिका ओडिशा के गई। वह पंचाशक है पुरपल्ली में बहुत लोकप्रिय हैं। ज्ञानमिश्र एक धर्मनिष्ठ भक्त थे और उत्तरा की सनातन धर्म परंपरा में उनकी गहरी आस्था थी। यह वर्णित है कि कवि नस्लवादी था और अपने जन्म से बहुत पहले अचुता था। मार्गशी महीने, त्रयोदशी तिथिया को, यह महान ऋषि चटिया बोट में योग ध्यान में लगे हुए थे और पूर्णिमा के दिन उनकी मृत्यु हो

भीमबोई

भीमभोई न केवल रूढ़िवादी साहित्य के आदिवासी कवि के रूप में स्थापित हैं, बल्कि एक धार्मिक नेता और समाज सुधारक के रूप में भी सभी जाने जाते हैं। भीमभोई का जन्म 1855 ई. में संबलपुर जिले के रेबचोल के पास हुआ था। कुछ के अनुसार, भीम ने बचपन में ही अपनी आँखों की रोशनी खो दी थी और कुछ के अनुसार, युवावस्था में। उसके जीवन में सीखने के लिए

कोई खास मौका नहीं था. वह बड़ी कठिनाई से जंगल में गायें चराता था। माजया पूर्व सुक्रत बल से गोसायु के संपर्क में आये और उनसे दीक्षा प्राप्त की और दीक्षा के बाद एकाग्र हृदय से आत्मसंतुष्टि में कृतसंकल्प रहे। कुछ समय बाद ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होंने लेखन में सफलता प्राप्त की, अनेक शिष्यों को दीक्षित किया तथा विभिन्न पुस्तकों की रचना की और अपना मन धर्म के प्रचार-प्रसार में लगाया। उन्होंने स्तुति अंशमणि, श्वास गीचा, श्रुति निषिद्ध गीता, चौतिशा, भजन और मलिका का निर्माण करके अस्सी अनुग्रहों का अम्लान निदर्शन दिखाया है। जटिल अवधारणाओं को सरल और सुलभ तरीके से व्यक्त करने की उनकी अनूठी शैली ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया है।

ଅର୍ଥବାସ

संतकबी अर्थदास, एक संत, भक्त और धर्म प्रचारक, का जन्म 18वीं ॥ शताब्दी के उत्तरार्ध में पुरी जिले के पदगावथिरा गाँव में हुआ था। कृषि ही उनकी आजीविका का एकमात्र साधन था। किशोरावस्था से ही उनमें अलौकिक शक्तियों के लक्षण प्रकट होने लगे। किंवदंती के अनुसार, जब वह पानी डाल रहा था, जब वह खेतों में हल चला रहा था, तो बादल उसे ढक लेते थे। वे पैंतीस वर्ष की आयु में साधु बन गये और दिसरपुर गाँव में बस गये। दमदीपुर, आंध्र, बीजीपुर आदि विभिन्न स्थानों पर उनके द्वारा 752 वाहनों का निर्माण किया गया। अयकु दास के समय से ही गादीब्रह्मा शब्द ओडिशा में लोकप्रिय हो गया है। एक बार स्वप्न में उन्होंने देलंग के निकट बेनुपाड़ा गाँव की यात्रा की और बैदास को अपना गुरु मानकर वहीं बस गये। अरथाडिस को आशीर्वाद मिला था, इसलिए ॥* वह कई लोगों को बीमारी और पीड़ा से बचा सका। एक यूटाहन के रूप में उनका व्यक्तित्व बहुत विशाल था। उन्होंने कई भजनों और मलिकाओं में खुद को उड़िया कुमार बताया है। वह वास्तव में उत्तरा के वैष्णव थे। उन्होंने अनुभवी हृदय की भावनाओं को कविता के माध्यम से स्पष्ट एवं सरल शैली में व्यक्त किया है। उनकी मृत्यु के 11वें दिन, उन्हें जापु जापू नामक बेनुपबाधा मठ में दफनाया गया। टोपी और छड़ी इस मठ के महंत के संत हैं. ये स्वयं को ब्रह्मा संप्रदाय, अच्युतगोत्री और अनंत शाखा में शामिल घोषित करते हैं।

अभिराम परमहंस

इस संत कवि का जन्म 1904 ई. में माघमास की त्रिवेणी अमावस्या के दिन सातवस्था पटनायक द्वारा पुरी जिले के करमाला ग्राम में राधा देवी की कोख से हुआ था। अभिराम को कुछ समय के लिए पड़ोसी अर्जुन और उनकी पत्नी सुब्रत ने गोद लिया था, लेकिन उनके निधन के बाद, वह अपने माता-पिता के पास लौट आए। वे बचपन से ही अध्यात्मवादी एवं संत प्रेमी थे। कई बार उसके माता-पिता उसे ख़ाली होते देख डर और सदमे में पड़ जाते थे। अभिराम की तपस्या का स्थान चिल्का के पास ब्रह्मगिरि का पवित्र खांडव वन था। 1923 ई. में, खंडब वन में उनके ध्यान के बाद, देवी पूर्णमासी ने उन्हें दर्शन दिए और उन्हें एकखर मंत्र का गंभीरता से प्रचार करने का निर्देश दिया। उन्होंने कुछ समय सनातन धर्म प्रचार में बिताया और शांति आनंदाश्रम का निर्माण कर करमाला में रहने लगे। इसी समय 1934 ई. में उनके प्रसिद्ध 'काली भागवत ग्रंथ' की रचना हुई। 30-4-1943 को मन्दराज सरकार ने इस पुस्तक को राजद्रोह का अपराध मानकर प्रतिबन्ध लगा दिया और अभिराम को एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा देने का आदेश दिया। इस राजद्रोह के मुकदमे में गवाही देने के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में ऑर्डिनेशन के तत्कालीन प्रोफेसर पंडित मालनक दास और पंडित बिनायक मिश्रा आए और उन्होंने धर्मग्रंथों में निहित विवरणों की निष्पक्ष व्याख्या और व्याख्या की। एयाबत अभिराम द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अमृत गीता, चैतन्य टीका, वैष्णव गीता, आनंद लहरी, भावकल्लू, सनातन गीता, अध्यात्म महापुराण आदि प्रमुख हैं। ठाकुर अभिराम के दर्शन और साधना प्रणालियाँ सनातन हिंदू धर्म के मूल सिद्धांतों और सिद्धांतों पर आधारित हैं। हालाँकि कुछ लोगों ने उनकी अनुचित आलोचना की, तथापि समाज उन्हें एक महान व्यक्ति, एक सद्गुरु, एक त्यागी और सनातन धर्म के प्रचारक के रूप में स्वीकार करता है। 27-11-1963 कार्तिक शुक्ल 11 ठाकुर अभिराम परमहंस का विशेष दिन है। उन्हें एक कवि, एक भक्त, एक महान व्यक्ति, एक योगी, एक प्रेमी, एक स्वतंत्रता सेनानी, एक धार्मिक नेता और ज्ञानमिश्र भक्ति परंपरा का सर्वोच्च अभ्यासी कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

श्रृंखला पर कुछ विचार

डब्ल्यू.डब्ल्यू. हंटर

"XLV- HARA_DAS 100 साल पहले रहते थे, लिखा था (उड़ीसा का इतिहास,

परिशिष्ट III, खंड I)

एच.के. मोहंती (बंदोबस्त अधिकारी)

"चटला बाजार के उत्तर में चट्टान पर स्थित 'अंजीर का पेड़' (चटिया बाटा) स्थानीय हिंदू समुदाय द्वारा परंपरागत रूप से श्रद्धा के रूप में माना जाने वाला स्थान है। यहां सम्मानित भक्तों की कब्रें हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि उनमें से एक ने भविष्य का रिकॉर्ड (मलिका) छोड़ा है, जिसमें नहर और रेलवे की शुरुआत और इस संपत्ति को एक ब्राह्मण को सौंपने और इस तरह की चीजों की भविष्यवाणियां की गई हैं, जो अब वास्तविक घटनाओं से सत्यापित हो गई हैं।

किला दर्पण, कटक-1901 के निपटान पर अंतिम रिपोर्ट। {बंगाल सचिवालय प्रेस, कलकत्ता-1902)

ग्राससिंधु मिश्र

अभिमन्यु के अलावा भीमाधिवर, अच्युतानंद दास, हरि दास जैसे कवियों ने भटकल साहित्य के आंदोलन को आगे बढ़ाया। भीमाधिबर का 'कमपाश' और बाद के दो 'मालिका' और भजन जनता के बीच लोकप्रिय हो गए हैं।

मृत्यु रथ

*"चटियाबाट की प्रसिद्धि महापुरू हादीदास के समय से है। उन्होंने इस बॉट रूट पर ध्यान लगाया। उनके द्वारा लिखी गई कई कालजयी रचनाएँ हैं, यदि सेतु की एक प्रति ली जाती तो चटिया के बारे में बहुत कुछ पता चल जाता, लेकिन लेखक ने पुस्तक की एक प्रति पाने की बहुत कोशिश की लेकिन असफल रहे। हालाँकि, वह मलिका की तरह कई व्यर्थ, अप्रासंगिक और काल्पनिक शब्दों का द्वार है

यह भी संभव है कि कई ऐतिहासिक तथ्य हों।" (मुकुर,
भाग सात, संख्या पांच)

देवतारी मोहंती

"चटिया बटर की ऐतिहासिक कहानी बहुत दिलचस्प है। यह मक्खन हदीदास बाबादिरा के समय से प्रसिद्ध है। एक पहाड़ी पर बट के पेड़ के नीचे बैठकर वह जो किताब लिखते थे उसे मलिका कहा जाता है। वहां तीन तरह की घटनाएं दर्ज होती हैं, भूत, वर्तमान और भविष्य।"

'उत्कल साहित्य', खंड 35, संख्या 10, माघ-1349

लक्ष्मीनारायण साहू

महात्मा हदीदास की विरचित मलिका (विशेष रूप से भविष्यसूचक पुस्तकों का संग्रह) उत्तराखंड के किसी भी घर में अज्ञात नहीं है। उसमें लिखी भविष्यवाणियों की सत्यता को देखकर आज लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं और कोई भी उस महात्मा की अद्भुत शक्ति की प्रशंसा किए बिना नहीं रह पाता।"

डॉ करुणाकर

"ओडिशा में, विभिन्न समुदायों में कई भविष्य लिखे गए हैं। उन ग्रंथों में इतिहास के अनेक तत्व हैं। दुर्भाग्य से, वे पुस्तकें अभी तक प्रकाशित नहीं हुई हैं। विद्वान समाज इस पुस्तक का नाम सुनते ही नाक-भौं सिकोड़ लेता है।

डॉ. अयुमबल्लव मोहंती

"मैंने महापुरु की संहिता के केवल कुछ टुकड़े सूचीबद्ध किए हैं जो हमें मिले हैं - छाया, अनाहत, अकालित, अबद, ब्रह्मा, बॉट, यानान, केस, मंत्र ~ संहिता, अंतकोरा, नंबोधनी, ब्रह्मशंकुली, ररुदसंहिता, चरिखानी और कई भविष्य की चीजें जिनका उन्होंने मलिकों में उल्लेख किया है। 'अतीत में आए सत्तावन वैष्णवों का कहना है कि इस खोखले श्लोक से भविष्य का पता चल रहा है।'? ब्रह्माशाकुली

मुखबंध और ब्रह्माशाकुली मुखबंध—भाग 3

डॉ. राधानाथ रथ (संपादक, समाज)

दरअसल, हमारे उत्तराखंड में बहुत पहले प्रकट हुए पंचकों ॥ में से संत अच्युतानंद दास और संत हादिबंधु दास ने अपनी मलिकाओं में क्या लिखा था कि दुनिया में अन्याय कैसे घोषित किया जाएगा और दुनिया में कहां होगा, इन दोनों महापुरुषों के भविष्य के बारे में दो उपदेशों का उल्लेख नीचे किया गया है। इतने लंबे समय के बाद आज इसका जिक्र करने का कारण यह है कि - अब देश और मानव समाज में अधर्म, अन्याय, हिंसा, घृणा, बेईमानी इतनी फैल गई है कि ऐसा लगता है मानो कलियुग का ॥ अंत आ गया है। महापुरुषों की यह भविष्यवाणी ही एकमात्र चेतावनी मानी जानी चाहिए।"

संपादकीय राय, समाज, 17-7-83

डॉ. फूलीधर मोहंती

"मलिका ग्रंथ कोई भक्तिपरक ग्रंथ नहीं है, बल्कि देश के अनेक ऐतिहासिक तत्वों, शोधार्थियों एवं शोधार्थियों को प्रस्तुत करता है तथा अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के समाज की कुछ रूपरेखा भी प्रस्तुत करता है।"

सुरेंद्र मोहंती

प्राचीन यहूदी 'पैगंबरों' की तरह, अच्युतानंद ने कई 'मलिकों' की रचना की। योगसिद्धि के परिप्रेक्ष्य में संकट, विडम्बना और अमूर्त पीड़ा का आख्यान इन शृंखलाओं की प्रमुख विशेषता है। ये पुस्तकें आज तक ओडिशा के लोक समाज और लोककथाओं में प्रचलित हैं।"

डॉ. रत्नाकर साहू, एम. एक। पी। एच.डी.

1940 में कटक जिले के प्रसिद्ध छतियाबोट के पास नयापटना गांव में जन्मे आई. निधिचरण साहू का फूल, गांधीश्रम शिक्षा, चंपापुर 1958 से प्रवेश परीक्षा, रेनेसां कॉलेज से उत्तीर्ण। एक। 1960, बी. एक। (ऑनर्स) 1962 और एम.एससी. एक। (उड़िया) 1964 में उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्हें व्याख्याता के रूप में नियुक्त किया गया। उपाधिसप, ओडिशा के विभिन्न कॉलेजों में ओडिशा भाषा और साहित्य विभाग में व्याख्यान, 1977 में 'प्रजातन' बिशुबामिलान) सफ़्तार समिति, गोपबंधु, साहित्य मंदिर अनुकुलिली से सर्वश्रेष्ठ आलोचनात्मक निबंध के लिए पुरस्कार। * ओडिशा के धर्म और साहित्य को हदीदास 1948 शीर्षक से दानक पुष्टि। साधक और पदर बागमी, संपति तोनसिंह चौधरी, जो उड़िया। में व्याख्याता हैं, एक उड़िया के हितों पर शोध कर रहे हैं।